एच एम वी एल प्रकाशन

दिसंबर 2011 ■ 20 रुपए

नंदन

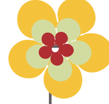
बच्चों का हंसमुख साथी

मेरी क्रिसमस

नंदन

दिसंबर 2011, वर्ष 48, अंक 2







थीम स्टोरीज



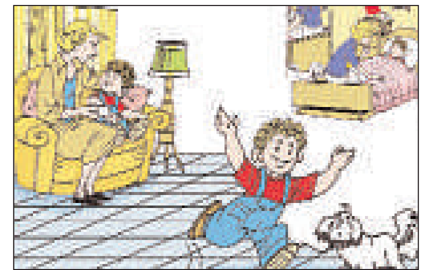
कहानियां

स्तंभ

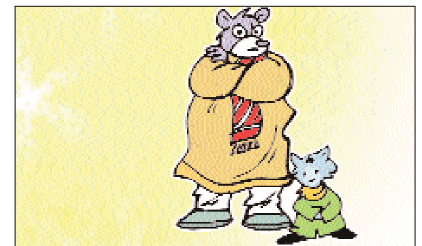


इनामी प्रतियोगिताएं

चित्र कथाएं



कविताएं



इस साल के सबक



बरसों पहले एक कहानी सुनी थी, आप भी सुनिए। एक घसियारा था। वह किसी जमींदार के लिए घास काटने का काम करता था। जमींदार भी उससे खुश रहता था क्योंकि घसियारा बेहद ईमानदार और मेहनती था। वह सुबह से अपना काम शुरू करता और शाम तक उसमें जुटा रहता। एक दिन जमींदार को महसूस हुआ कि एक आदमी के लिए यह काम बहुत ज्यादा है। क्यों न इस घसियारे को दूसरा सहयोगी प्रदान कर दिया जाए? कुछ ही दिनों में उसने दूसरा घसियारा ढूंढ़ लिया। दोनों मिलकर घास काटने लगे।

एक साल बाद जब वेतन में बढ़ोतरी का समय आया, तो नए घसियारे को अधिक वृद्धि से नवाजा गया। जाहिर है, इससे पुराने घास काटने वाले के मन में शिकायत पैदा हुई। उसने जमींदार से अपनी पीड़ा व्यक्त की, तो उत्तर मिला कि ठीक है कि तुम बहुत मेहनती और अच्छे हो, पर नया घसियारा तुम्हारे मुकाबले कहीं अधिक घास काट लेता है, इसलिए उसके पैसे ज्यादा बढ़ाए गए हैं।

पुराने वाले ने कुछ दिनों बाद अपने नए साथी से भी अपनी यही पीड़ा व्यक्त करते हुए उसकी सफलता का राज पूछा। नए घसियारे का जवाब था कि तुम सुबह से घास काटना शुरू करते हो और शाम तक उसमें जुटे रहते हो। पर मैं हर घंटे थोड़ा सुस्ताकर नई ऊर्जा प्राप्त कर लेता हूं और साथ ही अपनी खुरपी की धार पैनी कर देता हूं। इससे मुझे और खुरपी दोनों को मदद मिलती है। यही वजह है कि मैं तुम्हारे मुकाबले ज्यादा घास काट पाता हूं।

आप सोच रहे होंगे कि मैंने यह कहानी आपको क्यों सुनाई, तो इसका कारण भी जान लीजिए।

साल खत्म होने को है। क्यों न आप भी रोजमर्रा के काम से खुद को कुछ समय के लिए अलग कर लें और विचार करें कि आपने इस पूरे वर्ष क्या किया? अगर अच्छा किया, तो उसे और बेहतर कैसे कर सकते हैं? यदि कुछ गलतियां हो गईं, तो उन्हें फिर कैसे न दोहराने का प्रयास कैसे किया जाए? इसी तरह अगले साल का एजेंडा भी बना लें कि आपका लक्ष्य क्या है और उसे आप कैसे पाएंगे?

उम्मीद है, यह तरकीब जीवन भर आपके काम आएगी।

shashi.shekhar@livehindustan.com

प्रधान संपादक : शशि शेखर
कार्यकारी संपादक : क्षमा शर्मा
सहायक संपादक : विमलकांत चतुर्वेदी
मुख्य कापी संपादक (समन्वय) : अनिल कुमार जायसवाल
मुख्य संवाददाता : सुनीता तिवारी
सहायक प्रबंधक : देवेंद्र कुमार गेरा
संपादक (डिजाइन) : अनिता सिंह
डिजाइन : मनोज अग्रवाल
: अंकित पांडे
कवर डिजाइन : अनिता सिंह

कार्यालय का पता :

नंदन,
हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड,
हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस,
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001,
फोन : 011-66561235/87
ईमेल : nandan@livehindustan.com
dgera@livehindustan.com
आपकी प्यारी पत्रिका नंदन इंटरनेट पर भी उपलब्ध है
लॉग ऑन करें–
www.livehindustan.com/nandan

अमित चोपड़ा द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित और एच. टी. मीडिया लिमिटेड, बी-2, सेक्टर-63, नोएडा, जिला-गौतम बुद्ध नगर (उ. प्र.) की प्रेस में मुद्रित और हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित।

आर. एन. आई. नं. 10525/64



मेल बॉक्स

कम दामों पर घर बैठे 'नंदन' मंगाइए

नाम...
उम्र...........................कक्षा ....
स्कूल...
....
....
....
घर का पता
....
....
....
....
पिन...
फोन ....
मोबाइल ....
ई-मेल...

इनमें से एक पर ☑ लगाएं

अवधि		☐एक वर्ष
मूल्य	आपके लिए	छूट
240 रुपए	200 रुपए	40 रुपए

अवधि		☐दो वर्ष
मूल्य	आपके लिए	छूट
480 रुपए	350 रुपए	130 रुपए

ड्राफ्ट संख्या ....
मूल्य...
बैंक का नाम ....

शुल्क केवल बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें। ड्राफ्ट 'एच टी मीडिया लिमिटेड' के नाम से दिल्ली में देय हो।

ड्राफ्ट भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, नंदन, एच टी मीडिया लि., आकृति बिल्डिंग, सी-164, सेक्टर-63, नोएडा (उ.प्र.)

फोन : 0120-3329429

पत्रिका न मिलने पर संपर्क करें :
सौम्य भट्टाचार्य, मोबाइल : 09899114134

नंदन का 'क्रिएटिव कोना' जहां बच्चों की बुद्धि क्षमता को परखता है, वहीं उनकी कल्पना शक्ति को भी बढ़ाता है। नए अंक की हर कहानी एक मिसाल की तरह थी। इस मनभावन पत्रिका ने बच्चों के जीवन में नया रंग भर दिया है।

कमलेश तुली, द्वारका, नई दिल्ली

***

पिछले दो वर्षों से नंदन पढ़ रहा हूं। हर माह इसमें नए विषय होते हैं, जो मेरे विद्यालय के प्रोजेक्ट में बहुत मदद करते हैं। मुझे नंदन में 'प्रोफाइल' पढ़ने में बहुत मजा आता है।

सरफराज आलम, जामनगर

***

नंदन मेरी प्रिय पत्रिका है। पिछले चार वर्षों से मैं इसकी नियमित पाठिका हूं। इसके सभी स्तंभ एक से बढ़कर एक होते हैं। मेरी मम्मी भी मुझसे लेकर इसे पढ़ती हैं। वह डाक्टर हैं। वह कहती हैं, हिंदी अच्छी करनी हो, तो नंदन जरूर पढ़ो।

दीक्षा शर्मा, आगरा

***

नए अंक की कहानियों में 'द सर्कस इज कमिंग', 'सेवा का महामंत्र', 'धोती का भूत' और 'लिफ्ट में ताला' बहुत अच्छी लगीं। 'तेनालीराम' भी जबरदस्त रहा। 'हा-हा, ही-ही' ने बहुत हंसाया। सारी कविताएं एक से बढ़कर एक थीं।

सुकृति जैन, फरीदाबाद (हरि.)

***

एक बार मैं बीमार पड़ गया। दो महीने बिस्तर पर काटने थे। तब पिता जी ने मुझे नंदन लाकर दी, ताकि मेरा समय कट सके। तब से जो नंदन का साथ मिला, आज तक जारी है।

मुकेश कुमार, वेल्लौर (तमिलनाडु)

***

लंबे समय से नंदन पढ़ रहा हूं। नए अंक में विश्वप्रसिद्ध कहानियां पढ़कर आनंद आ गया। सभी कहानियों के विषय अलग-अलग थे, जिससे पढ़ने का आनंद दोगुना हो गया।

नरेश मेहन, हनुमान गढ़ संगम (राज.)

***

मैं नंदन बहुत पसंद करता हूं। मुझे लगता है, इसे पढ़ने के बाद कोई और बाल पत्रिका पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती है। हम बच्चों की रुचि की सभी तरह की सामग्री इस पत्रिका में ही मिल जाती है।

राधिका, भुवनेश्वर

***

पिछले चार सालों से नंदन पढ़ रही हूं। मुझे 'विदेशी कथा', 'टेक्नो अपडेट', 'फुरसत में' और 'रंग-बिरंगा' पढ़ना बहुत पसंद है। 'रंग-बिरंगा' में तो मैं जरूर भाग लेती हूं। इससे मेरी चित्रकला में निखार आ रहा है। कभी 'प्रोफाइल' में रणवीर कपूर को दें।

प्रिया, पटना



नए अंक में एक से बढ़कर एक विदेशी कथाओं का संकलन देखकर चकित रह गया। यह अंक तो जिंदगी भर संजोने लायक है।

राम आर्य, रघुवीर नगर, नई दिल्ली

***

अक्तूबर अंक पढ़कर काफी अच्छी जानकारी मिली। इस अंक की सारी कहानियां पढ़कर आनंद आ गया। 'प्रकृति' में भालू के बारे में अच्छी जानकारी मिली। अन्ना सीवेल की कहानी 'ब्लैक ब्यूटी' पढ़कर बहुत अच्छा लगा।

नित्या बारमाटे, बालाघाट

***

मैं तो नंदन का दीवाना हूं। यह न केवल अपने पाठकों का स्वस्थ मनोरंजन करता है, अपितु यह नवीन लेखकों को एक मंच भी उपलब्ध कराता है, ताकि नई प्रतिभाएं सामने आ सकें।

संतोष कुमार, वसंत गांव, नई दिल्ली

***

नंदन हमें चतुर बनाती है,
जीने की राह दिखाती है।
हर महीने यह आती है,
सुख-दु:ख में साथ निभाती है।

'ज्ञान कोश' देता है ज्ञान,
'यूरेका' कर देता परेशान।
'तेनालीराम' करता चतुराई,
'चीटू-नीटू' जोकर हैं भाई।

ज्ञानवर्धन करती हमारी,
कहानी-कविताएं इसकी।
वाह! क्या पत्रिका है नंदन,
कैसे प्रशंसा करूं इसकी।

जैनित कुमार, ग्रा. लाल मोहन (बि.)

कहानी

तूफान में नाव

प्रकाश

यीशु लोगों से मिलते-जुलते रहते थे। उन्हें कई बार बिल्कुल आराम करने का समय नहीं मिलता था। एक बार वह अपने साथियों के साथ नाव में यात्रा कर रहे थे। सब लोग शांत झील में नौका-यात्रा का आनंद ले रहे थे। पर यीशु सो गए।

थोड़ी देर में बड़े जोर का तूफान आया। नाव डगमगाने लगी। यीशु के साथियों में ज्यादातर मछुआरे थे। उन्हें ऐसे तूफानों का मुकाबला करना आता था। इसलिए जब नाव डगमगाने लगी, उन्होंने उसे पूरी कुशलता से संभालने की कोशिश की।

लेकिन तूफान तो हर घड़ी तेज होता जा रहा था। यीशु के साथियों को लगा कि अब नाव को संभाल पाना उनके बस की बात नहीं है। कभी भी तूफान के आगे नाव बेबस होकर पलट सकती है।

उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि इतने भीषण तूफान में भी यीशु कितनी निश्चिंतता से सो रहे हैं।

आखिर उन्होंने यीशु को उठाते हुए कहा–''यीशु, उठिए! देखिए, कितना भीषण तूफान आ गया है। झील में चारों ओर नाग की तरह फुफकारती हुई कितनी तेज और प्रचंड लहरें उठ रही हैं।''

सुनकर यीशु उठ गए। एक क्षण के लिए चुप रहे। फिर उन्होंने तूफान से और झील की मचलती हुई तेज लहरों से कहा–''शांत हो जाओ।''

आश्चर्य, उसी समय तूफान के साथ-साथ झील की लहरें भी शांत हो गईं।

यीशु के साथियों को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने मन ही मन कहा–''अरे, कितनी विचित्र बात है। झील की लहरें और तूफान भी यीशु का कहना मानते हैं। तब तो इसमें संदेह नहीं कि जरूर इनके पास कोई अलौकिक और असाधारण शक्ति है।''

यीशु ने अब अपने शिष्यों से कहा–''तुम लोग तो कहते हो कि तुम्हारा मुझ पर विश्वास है। तो क्या यही है तुम्हारा विश्वास?''

सुनकर यीशु के साथी बड़े शर्मिंदा हुए। वे समझ गए कि यीशु क्या कहना चाहते हैं? यीशु का मतलब था कि वे नाव में सो भी रहे थे, तो क्या! तूफान उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था, क्योंकि वह तो खुद ही उनके आदेश से चलता है।

सचमुच, सबने यीशु का ऐसा रूप देख लिया था, जिसे वे कभी भुला नहीं सकते थे।

(बाइबिल)



दुनिया में क्रिसमस

देवेंद्र मेवाड़ी

देखते ही देखते बड़ा दिन भी आ गया है। बड़ा दिन यानी क्रिसमस। इस दिन क्राइस्ट यानी ईसा मसीह का जन्म हुआ। उनके नाम पर ईसाई धर्म शुरू हुआ। विश्व भर में ईसाई धर्म को मानने वाले करोड़ों लोग उनका जन्मदिन क्रिसमस के त्योहार के रूप में मनाते हैं। कहते हैं, पहला क्रिसमस रोम में 336 ईसवी में मनाया गया।

अच्छा बताओ, क्रिसमस को क्रिसमस क्यों कहते हैं? दरअसल ईसा मसीह को अंग्रेजी में 'क्राइस्ट' कहते हैं। और, उनके जन्म दिन पर गिरजाघरों में जो प्रार्थना की जाती है, धार्मिक प्रवचन दिया जाता है, उसे परंपरागत रूप से 'मास' कहा जाता है। 'क्राइस्ट' और 'मास' के मिलने से 'क्रिसमस' बन गया।

क्रिसमस का त्योहार हमारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। अलग-अलग भागों में रहने वाले लोग इसे अपने-अपने तरीके से मनाते हैं। लेकिन, जानते हो, भारत में क्रिसमस का त्योहार कब से मनाया जा रहा है?

कहते हैं, प्रभु ईसा मसीह के 12 अपोसल यानी पट्ट-शिष्य थे। उनमें से एक संत का नाम था—संत थॉमस। संत थॉमस ईस्वी 52 में अरब सागर पार करके दक्षिण भारत के मालाबार तट पर पहुंचे। यह प्रदेश केरल कहलाता है। संत थॉमस ने वहां सीरियाई गिरजाघर बनवाए। उनमें सीरिया के रीति-रिवाजों के अनुसार पूजा और अन्य धार्मिक अनुष्ठान किए जाते थे। केरल के अनेक लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया। वे सीरियाई ईसाई कहलाए। इस तरह केरल में ईसाई धर्म के अनुयाइयों की पहली बस्ती बनी। उन्होंने ही भारत में इस त्योहार की शुरुआत की

दुनिया भर में क्रिसमस की कई परंपराएं सदियों पुरानी हैं। लेकिन, इसे 25 दिसंबर को ही क्यों मनाया जाता है? शुरू-शुरू में लोग ईसा मसीह के जन्मदिन का यह त्योहार अलग-अलग तिथियों को मनाते थे। बात यह है कि चौथी शताब्दी में जब रोम के शहंशाह कोंस्टेंटाइन ने ईसाई धर्म अपना लिया, तो बड़ी संख्या में लोग इस धर्म के अनुयायी बन गए। उन्होंने ईसा मसीह के जन्म को त्योहार की तरह मनाना शुरू कर दिया। मगर उन दिनों कुछ लोग 6 जनवरी को क्रिसमस मनाते थे तो कुछ और लोग 19 अप्रैल या 20 मई को। कई लोग 17 नवंबर को यह त्योहार मना लेते, तो कुछ लोग 25 दिसंबर को मनाते। इससे बड़ी दिक्कत होने लगी। बड़ा दिन तो आखिर एक ही होना चाहिए न? तभी तो ईसाई धर्म के सभी अनुयायी उस दिन को ईसा मसीह का जन्मदिन मानकर क्रिसमस मनाएंगे।

ईसवी 137 में रोम के बिशप ने यह आदेश दिया कि ईसा मसीह के जन्मदिन को समारोहपूर्वक दावत देकर मनाया जाए। लेकिन, कोई दिन तय नहीं था। दिन तय किया रोम के ही एक और बिशप जूलियस प्रथम ने। उन्होंने ईसवी 350 में 25 दिसंबर का दिन ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में चुना। इसे रोमन कैलेंडर में दर्ज कर लिया गया।

इस त्योहार को आज विश्व भर में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। बच्चों को तो यह



विशेष रूप से बहुत अच्छा लगता है। यही कारण है कि आज इसे केवल ईसाई धर्म को मानने वाले लोग ही नहीं, बल्कि दूसरे धर्मों के कई लोग भी खुशी से मनाने लगे हैं। बच्चे बड़े उत्साह से घरों को सजाने में मदद करते हैं। क्रिसमस कैरोल गाते हैं। उपहार देते-लेते हैं और क्रिसमस की शानदार दावत का आनंद उठाते हैं।

जो लोग इस त्योहार को पूरे परंपरागत रूप से मनाते हैं, वे लगभग चार सप्ताह पहले से इसकी तैयारियां शुरू कर देते हैं। यह ईसा मसीह के आगमन का समय माना जाता है जिसे 'एडवेंट' कहते हैं। 30 नवंबर का, जो सबसे नजदीकी रविवार होता है, वह एडवेंट का पहला दिन माना जाता है। उस दिन से क्रिसमस के त्योहार का सीजन शुरू हो जाता है। उस दिन ईसा मसीह के 12 अपोसल यानी पट्टशिष्यों में से एक संत एंड्रयू के नाम पर दावत दी जाती है। क्रिसमस सीजन का चरमोत्कर्ष क्रिसमस की आधी रात के समय सामूहिक प्रार्थना और उपदेशों यानी 'मिड नाइट मास' के साथ संपन्न होता है।



क्रिसमस के दिन घरों और बाजारों को तो भव्य रूप से सजाया ही जाता है, गिरजाघरों को भी मोमबत्तियों, बल्बों की रंगीन रोशनियों, फूल, पत्तियों और पेड़ों की हरी टहनियों से सजाया जाता है। नरकुल की टोकरियों में घास में लेटे शिशु ईसा मसीह, मां मेरी, मेरी के बुजुर्ग पति जोजेफ, सितारों भरे आसमान में उड़ते फरिश्ते, शिशु ईसा मसीह को देखने के लिए आए तीन सयाने व्यक्तियों, गड़रियों और भेड़ों की मूर्तियां बनाते हैं। घर में क्रिसमस ट्री सजाया जाता है जिसकी शाखाओं पर उपहार लटकाए जाते हैं। क्रिसमस ट्री को रंगीन बल्बों और चमकीली पन्नियों से सजाया जाता है। बच्चे आपस में उपहार बांटते हैं और नाचते-गाते हैं। एक-दूसरे को क्रिसमस के ग्रीटिंग कार्ड भेजे जाते हैं।

क्रिसमस के दिन शानदार दावत दी जाती है। तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं। इनके अलावा मेहमानों को क्रिसमस केक भी परोसा जाता है। इस दिन लोग नए और साफ-सुथरे कपड़े पहनते हैं। वे गिरजाघरों में जाते हैं और संत ल्यूक तथा संत मैथ्यू के गॉस्पेल यानी सुसमाचार सुनते हैं। गिरजाघर के पादरी और अन्य धर्माधिकारी एकत्रित लोगों को ईसा मसीह के शुभागमन के बारे में बताते हैं। वे आपस में मेल-जोल और शांति बनाए रखने के बारे में भी प्रवचन देते हैं। आधी रात को प्रार्थना की जाती है, जिसे मिडनाइट मास कहते हैं।

क्रिसमस सीजन में संगीत के साथ विशेष गीत गाए जाते हैं जिन्हें कैरोल कहते हैं। तुमने भी क्रिसमस के मौके पर दोस्तों के साथ यह प्रसिद्ध क्रिसमस कैरोल गाया होगा–'जिंगल बेल, जिंगल बेल, जिंगल ऑल द वे...!'

मैं जानता हूं, अगर तुमसे पूछा जाए कि क्रिसमस में तुम्हें सबसे मजेदार चीज क्या लगती है, तो तुम कहोगे 'सांता क्लॉज'! क्यों है ना? सचमुच, सांता क्लॉज हैं ही इतने मजेदार। मोटे-ताजे, हंसमुख, बर्फ जैसी लंबी सफेद दाढ़ी, लाल कोट और पीठ पर लदा उपहारों का बड़ा-सा थैला! जानते हो, कौन हैं ये सांता क्लॉज? आज जहां टर्की देश है, वह इलाका बहुत पहले माइरा कहलाता था। ईसवी 280 में वहां एक संत पैदा हुए थे। नाम था संत निकोलस। वह बहुत दयालु और उदार व्यक्ति थे और बच्चों को बहुत अच्छा मानते थे। कहते हैं, उन्हीं संत निकोलस के नाम पर आगे चलकर बच्चों के प्रिय सांता क्लॉज का जन्म हो गया।

विश्व के अलग-अलग देशों में लोग इस त्योहार को अपने-अपने ढंग से मनाते हैं। यूरोप की बात करें, तो वहां क्रिसमस के मौके पर बॉय-बिशप यानी बाल-बिशप चुने जाते हैं। क्रिसमस का अगला दिन 'बॉक्सिंग दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

अमेरिका में अनेक देशों से आए हुए कई जाति-धर्मों के लोग बसे हुए हैं। इसलिए वे सब अपने-अपने रीति-रिवाज से क्रिसमस मनाते हैं। यहूदी समुदाय के लोग क्रिसमस के साथ-साथ इस दिन अपना परंपरागत त्योहार 'हांक्' भी मनाते हैं। बाकी सजावट और धूमधाम यूरोपीय देशों की तरह ही होती है। घर और शहर नव वर्ष तक क्रिसमस की सज-धज से सजे रहते हैं।

दक्षिणी अमेरिका के देशों जैसे अर्जेंटीना, वेनेजुएला, उरुग्वे आदि में क्रिसमस फसल की कटाई के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। बोलेविया के निवासी इसे धरती मां के प्रति 'धन्यवाद दिवस' के रूप में मनाते हैं। ब्राजील में तो सांता क्लॉज को 'पापा नोएल' कहा जाता है। वहां ईसा मसीह के जन्म की झांकी क्रिसमस ट्री से अधिक लोकप्रिय है।

अफ्रीका के देशों में लोग प्रभात फेरी निकालकर अपनी भाषा में कैरोल गाते हैं। कैरोल गाते हुए गांव की गलियों से होकर गिरजाघरों तक जाते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में लोग घरों और गिरजाघरों को फूलों व पेड़-पौधों से सजाते हैं। हरे-भरे जंगलों, पार्कों या सागर तटों पर समारोह में दावत देते हैं।

एशिया में भारत, जापान, इंडोनेशिया, थाईलैंड, फिलीपींस आदि देशों में क्रिसमस यूरोपीय देशों की ही तरह धूमधाम से मनाया जाता है। हां, इसमें उनके अपने-अपने देश के रीति-रिवाज और खानपान भी घुल-मिल गए हैं, जो क्रिसमस को एक अलग पहचान देते हैं।

क्रिसमस का सीजन आता है और केरल, तमिलनाडु, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, पुडुचेरी और गोवा में इस त्योहार को मनाने के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियां शुरू हो जाती हैं। इन राज्यों में ईसाई धर्म के अनुयायियों की संख्या बहुत है। इनके अलावा कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, बंगलुरु जैसे महानगरों में ही नहीं, बल्कि छोटे-छोटे शहरों में भी क्रिसमस की सजावट से घर, गलियां और बाजार सज जाते हैं।

क्रिसमस त्योहार का समापन 6 जनवरी को इपिफनी यानी प्रभु-प्रकाश के साथ होता है। कहते हैं, इस दिन शिशु यीशु के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए तीन सयाने व्यक्ति आए थे।

● कहानी ●

मनाएं सब त्योहार



मनोहर चमोली 'मनु'
शिक्षक, बच्चों के लिए लिखते रहते हैं

दीपावली अवकाश के बाद स्कूल खुला, तो प्रातःकालीन सभा में सबकी नजरें नई प्रिंसिपल पर जा टिकीं। सभा समाप्त हुई, तो नील जेवियर खुद को रोक नहीं पाई। उसने प्रिंसिपल की ओर देखकर कहा–''बड़ी मैम, दीपावली, होली, ईद और बैसाखी स्कूल में मनाई जाती हैं। क्या इस बार हम क्रिसमस भी मनाएं?''

''चुप रहो! तो तुम मुझे सिखाओगी कि स्कूल में क्या होना चाहिए?''–प्रिंसिपल जोर से बोलीं।

नई प्रिंसिपल इस तरह पेश आएंगी, किसी को भी उम्मीद नहीं थी। नील तो सहम ही गई।

''मैम, नील अपनी क्लास की मॉनीटर है। बहुत ही होशियार है।''–स्कूल की एक मैडम ने बताना चाहा।

''स्कूल अनुशासन भंग करने का किसी को भी अधिकार नहीं है। हर कोई अपने काम से काम रखे। बच्चे पढ़ें और टीचर पढ़ाएं। सुना सबने।''–यह कहकर प्रिंसिपल चली गईं।

आज किसी का मन पढ़ाई में नहीं लगा। सभी प्रिंसिपल के व्यवहार से सकते में थे। उस दिन के बाद तो नील चुप सी रहने लगी।

एक दिन क्लास चल रही थी। एक मैडम ने नील से पूछा–''नील क्या हो गया है? छमाही परीक्षा में भी तुम अच्छे नंबर नहीं ला पाईं। तुम पहले जैसी नहीं रहीं। क्या बात है? बोलो।''

यह सुनकर नील रोते-रोते बोली–''मैम, उस दिन मैंने ऐसा क्या गलत कह दिया था, जो भरी सभा में मैडम ने इतना डांटा।''

उसे देखते हुए मैडम बोलीं–''हर त्योहार एक समान होता है। और क्या पता, बड़ी मैम स्कूल में क्रिसमस मनाने को तैयार हो जाएं!''

नील सुबकते हुए बोली–''नहीं मैम। इस बार क्रिसमस संडे को है। मेरे मम्मी-पापा मुझे चर्च लेकर जाएंगे। मैंने अपना क्रिसमस प्लान कर लिया है।''

दिसंबर का महीना भी आ गया। चौबीस तारीख को स्कूल में छुट्टी की घंटी बजी। बच्चे गेट के बाहर आकर नील को क्रिसमस की बधाई देने लगे। सलमा और आभा ने कहा–''मैरी क्रिसमस। हम कल तुम्हारे घर जरूर आएंगी।''

''थैंक्स। मैं इंतजार करूंगी।''–नील ने हंसते हुए कहा।

नील घर पहुंची। मम्मी-पापा घर को सजाने में लगे हुए थे। नील ने मम्मी से लिपटते हुए कहा–''कल क्रिसमस है। बड़ा मजा आएगा।''

शाम से लेकर रात भर नील मम्मी-पापा के साथ घर के एक-एक कोने को सजाने में जुटी रही। अचानक उसे कुछ ध्यान आया। वह बोली–''पापा, क्रिसमस ट्री नहीं लाए?''

नील के पापा ने मुसकराते हुए जवाब दिया–''क्रिसमस कल है न! कल ले आएंगे।''

नील सुबह उठी, तो उसके सिरहाने के पास विशालकाय सजा-धजा क्रिसमस का पेड़ मुसकरा रहा था। नील खुशी से झूम उठी। वह बुदबुदाई–''मेरे मम्मी-पापा कितने अच्छे हैं।''

नील ने सलमा, आभा और अपने मम्मी-पापा के साथ क्रिसमस के दिन खूब मस्ती की। रात कब आई, उसे पता ही नहीं चला।

अगली सुबह वह खुशी-खुशी स्कूल पहुंची। स्कूल का गेट देखकर वह हैरान हो गई। उसने चारों ओर नजर दौड़ाई। उसका स्कूल दुल्हन की तरह सजा था। इससे पहले नील कुछ समझ पाती, प्रिंसिपल मैम आकर बोलीं–''मैरी क्रिसमस नील। देखो, सारा स्कूल तुम्हें बधाई देने के लिए तैयार है।''

गेटकीपर बोला–''नील बेटा, कल संडे को मैम स्कूल आई थीं। उन्होंने अपने हाथ से तुम्हारी क्लास को सजाया है। जल्दी जाओ। सब वहीं तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।''

नील दौड़कर अपनी कक्षा में जा पहुंची। हर कोई उसे बधाई दे रहा था। नील की खुशी का ठिकाना न रहा।

प्रिंसिपल मैम बोलीं–''दरअसल, मुझे बताया गया था कि इस स्कूल की पढ़ाई-लिखाई बेहद लचर है। इसलिए मैंने सख्ती दिखानी चाही। बाद में मुझे लगा कि यहां तो सब ठीक है। फिर मैं भी क्रिसमस का इंतजार करने लगी। सारे त्योहारों की मैं इज्जत करती हूं।''

नील ने नजरें झुका ली थीं। वह धीरे से बोली–''सारी मैम, मैं कितनी गलत थी!''

प्रिंसिपल मैम ने मुसकराते हुए कहा–''हम सबने मिलकर निर्णय लिया है कि अब इस स्कूल में हर त्योहार और उत्सव मनाएं जाएंगे।''

यह सुनते ही नील प्रिंसिपल से लिपट गई। सब एक-दूसरे को क्रिसमस की बधाई दे रहे थे। ●



यशवंत

कहानी



मंजरी शुक्ला
दूरदर्शन पर बच्चों के कार्यक्रम और बच्चों के लिए नियमित लेखन

सबसे प्यारा गिफ्ट



हर साल की तरह इस बार भी क्रिसमस की तैयारियां जोरों-शोरों से शुरू हो चुकी थीं। आज रविवार था और जेम्स के पापा ने उसे चर्च ले जाने का वादा किया था। उसके बाद उसे क्रिसमस ट्री सजाने के लिए चांदी की घंटिया दिलवानी थीं। पर बाजार जाने से पहले वह दादा जी के कमरे की ओर गया।

जेम्स के पापा बहुत छोटी सी नौकरी करते थे, उससे किसी तरह घर का गुजारा चलता था। इसीलिए कुछ महीनों पहले उन्होंने अपने पापा को 'ओल्ड एज होम' भेज दिया था। वह जानते थे कि जेम्स अपने दादा जी को याद करके बहुत रोता है, पर वह भी मजबूर थे। आज उन्हें घर से गए छह महीने हो गए थे। उनके जाने के बाद यह पहला क्रिसमस था।

जैसे ही पापा ने जेम्स को चलने के लिए कहा, वह दौड़कर दादा जी के पुराने बेड की ओर गया। उसे प्यार से चूमा। जैसे दादा जी को प्यार कर रहा हो। वह उठकर पापा के पास पहुंचा और उनका हाथ पकड़ा, तो उसकी आंखें गीली थीं। पापा समझ गए कि उसे दादा जी की याद आ रही है।

जेम्स बार-बार क्रिसमस ट्री सजाने की बात करता। उसके पापा बार-बार बात को बदलने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उनके पास बहुत मुश्किल से तो क्रिसमस ट्री खरीदने के लिए पैसे जुड़ पाए थे। पर दस वर्ष के मासूम जेम्स को यह सब बातें वह कैसे समझाते, इसलिए उसकी बातों में मुसकराते हुए हां में हां मिलाते रहे।

जब से जेम्स ने घर के सामने वाली दुकान पर एक बहुत ही खूबसूरत क्रिसमस ट्री देखा था, वह दिन-रात बस उसे खरीदने के ही सपने देखा करता था। उसे जब भी समय मिलता, वह अपने कमरे की खिड़की पर खड़ा होकर सामने वाली दुकान पर रखे सभी क्रिसमस ट्री देखता रहता था।

जेम्स और पापा जब चर्च के अंदर पहुंचे, तो उसके पापा ने उसे चुप रहने का इशारा किया। फिर वे प्रार्थना में शामिल हो गए।

अचानक जेम्स की नजर अपने दादा जी पर पड़ी, जो छड़ी के सहारे गेट से अंदर आ रहे थे। वह उनकी ओर बेतहाशा दौड़ा और उनसे जाकर लिपट गया। बोला–''दादा जी, आप कैसे हैं?''

दादा जी उसको प्यार से चूमते हुए भरे गले से बोले–''मैरी क्रिसमस बेटा! इस बार तो तुम मेरे बिना क्रिसमस मनाओगे।''–कहते-कहते उनकी आंखों में आंसू आ गए।

दादा जी ने उसे प्यार से सीने से लगा लिया। थोड़ी देर बाद जेम्स पापा के पास आकर बैठ गया, जो अभी भी आंखें मूंदकर प्रार्थना कर रहे थे।

प्रार्थना खत्म हुई, तो जेम्स के पापा उसका हाथ पकड़कर चर्च से बाहर निकल गए। जेम्स ने भी उन्हें दादा जी से मिलने के बारे में कुछ नहीं बताया।

रास्ते में पापा ने उसे चुप देखकर हंसते हुए कहा–''बेटा, आज तो तुम्हें बहुत खुश होना चाहिए। महीनों से तुम उस चांदी की घंटियों वाले क्रिसमस ट्री को खरीदने के लिए कह रहे थे और आज हम वही लेने जा रहे हैं।''

–''नहीं पापा, मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही है, आप पहले घर चलिए।''

''ठीक है बेटा, पहले घर ही चलते हैं।''–कहते हुए उन्होंने जेम्स को गोद में उठा लिया।

घर जाते ही वह सोचने लगा कि वह दादा जी को अपने घर वापस कैसे ले आए। यही सोचते हुए वह सो गया।

वह सोकर उठा, तो मम्मी बोलीं–''चलो, हम लोग जल्दी से तुम्हारा क्रिसमस ट्री ले आएं।''

जेम्स उठा और जोर-जोर से रोते हुए अपने पापा के गले लग गया। उसके पापा एकदम घबरा गए और उससे पूछने लगे कि क्या हुआ?

जेम्स हिचकियां लेते हुए बोला–''बिना दादा जी के क्रिसमस कैसे होगा पापा! मेरे लिए मेरे दादा जी को ले आओ। मैं भी आपके साथ मिलकर काम करूंगा। पैसे कमाऊंगा। कम पैसों के कारण दादा जी को मैं अलग नहीं रहने दूंगा।–कहते-कहते वह जोर-जोर से रोने लगा।

जेम्स के पापा तो बहुत देर तक उससे नजर ही नहीं मिला पाए। अचानक वह उठे और बोले–''चलो बेटा, तुम्हारा गिफ्ट ले लें। फिर चलकर तुम्हारे दादा जी को लेकर आते हैं, हमेशा के लिए। जैसे भी होगा, हम सब मिलकर रहेंगे।''

यह सुनते ही जेम्स खुशी के मारे उनके कंधे से झूल गया और बोला–''नहीं पापा, उन पैसों से दादा जी का क्रिसमस गिफ्ट लेंगे। मैं अगले साल घंटियों वाला ट्री लूंगा।''

यह सुनकर पापा ने उसे गले से लगा लिया और दोनों चल पड़े दादा जी को वापस लाने। सामने दुकान पर क्रिसमस ट्री मुसकरा रहा था और जोर से घंटियों की खनखनाहट आ रही थी।

सबसे अच्छी पेंटिंग

The Best Painting



अर्पित सचान, केशव नगर, कानपुर, उ.प्र.

इन वाक्यों में से चुने हुए शब्दों का दोबारा प्रयोग

1. Compilation
We can now easily find compilation of poems by any poet on the internet.

2. Errorlessly
Any work, errorlessly completed reflects a man's perfection and dedication.

3. composed
Children should be encouraged from a young age to compose poems and write stories.

4. Compliment
Complimenting a person for a job well done motivates one to perform better in the future.

सुमिता कपूर

1. The Hindi teacher, Vinita ma'am asked the children to learn a Hindi poem during their Christmas holidays.

इस बार क्रिसमस की छुट्टियों में हिंदी टीचर विनीता मैम ने सब बच्चों से हिंदी की कविता याद करने को कहा है।

2. For me father bought a compilation of poems by the famous poet Ramdhari Singh Dinkar.

पापा ने मुझे मशहूर कवि रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं की पुस्तक लाकर दी है।

3. I have learnt many poems from this book. My friend, Rekha has learnt poems by Jaishankar Prasad.

मैंने उसमें से कई कविताएं याद की हैं। मेरी सहेली रेखा जयशंकर प्रसाद की कविताओं को याद कर रही है।

4. The recitation competition will be held after the holidays.

छुट्टियों के बाद कम्पिटीशन होगा।

5. The child who recites the whole poem errorlessly will be given a prize.

जो बच्चा पूरी कविता सही ढंग से पढ़ेगा, उसे इनाम मिलेगा।

6. Some children have composed poems on christmas and various other topics.

कुछ बच्चों ने क्रिसमस तथा अन्य विषयों पर अपनी कविताएं भी लिखी हैं।

7. I also made some paintings. Everyone complimented me.

मैंने कुछ पेंटिंग्स भी बनाई हैं। सबने बड़ी तारीफ की है।

8. Out of these, the painting of Christmas festival is the best, which I will give to Vinita ma'am.

इनमें से क्रिसमस के त्योहार की पेंटिंग सबसे अच्छी बनी है। उसे मैं विनीता मैम को दूंगी।

शब्द	अर्थ	उच्चारण
1. Compilation	संकलन करना	कम्पाइलेशन
2. Errorlessly	बिना गलती	एररलेसली
3. Composed	रचना करना	कम्पोज़्ड
4. Compliment	तारीफ	कॉम्पलीमेंट

क्रिसमस ट्री

मुकेश चंद शर्मा

क्रिसमस के आयोजन में सबसे अधिक महत्व क्रिसमस ट्री को सजाने का है। क्रिसमस ट्री मूलतया देवदार अथवा उससे मिलता-जुलता होता है, जिसे इस अवसर पर रंग-बिरंगी बत्तियों से चमचमाता बना दिया जाता है। क्रिसमस ट्री को सजाने में कई सजावटी चीजों का भी प्रयोग किया जाता है।

यूरोप के अनेक देशों में हंसी-खुशी के अवसरों पर ट्री सजाने की परंपरा लंबे अरसे से चली आ रही है। इस क्रिसमस ट्री को सजाने की बात कैसे जुड़ी, इसके लिए अनेक मान्यताएं हैं। एक मान्यता के अनुसार जब प्रभु ईसा मसीह का जन्म हुआ, तब उनके दर्शनों के लिए आए देवताओं ने अपनी प्रसन्नता के प्रतीक के रूप में सदाबहार के वृक्ष को सितारों से सजाया था। एक अन्य मान्यता के अनुसार क्रिसमस ट्री को सजाने की परंपरा जर्मनी से प्रारंभ हुई। वहां के एक धर्म प्रचारक बेनिफंस ने इस प्रथा को जन्म दिया। कुछ लोग इस प्रथा को जन्म देने का श्रेय मार्टिन लूथर को देते हैं। उन्होंने क्रिसमस के दिन आकाश में झिलमिलाते सुंदर तारों को देखकर अपने घर पर भी वृक्ष की टहनी सजाकर वैसा ही सुंदर और आकर्षक बनाने का प्रयत्न किया। इसके बाद उनके परिवार में यह परंपरा बन गई। प्रारंभ में इसे 'पैराडाइज ट्री' कहते थे, जिसे बाद में 'क्रिसमस ट्री' कहने लगे। एक अन्य मान्यता के अनुसार इसकी शुरुआत अमेरिका में हुई। वहां एक बालक डेविड जोनाथन बीमार पड़ा, तो उसने अपने पिता से एक ट्री को रंगीन बत्तियों से सजाने की इच्छा व्यक्त की। बच्चे का पिता डेविस डी. स्टरजन बिजली का काम करता था। इसलिए उसने बड़ी सरलता से यह काम कर दिया। रंग-बिरंगी बत्तियों से सजा यह ट्री लोगों को इतना पसंद आया कि यह कार्य एक परंपरा के रूप में चल निकला। अमेरिका के एक अन्य आठ वर्षीय बालक को भी इस प्रथा को शुरू करने का श्रेय दिया जाता है। घटना 1920 की है। वह अचानक बीमार हो गया। तब क्रिसमस पर उसे प्रसन्न करने के लिए उसके पिता सैंडी प्रैटिनो ने क्रिसमस ट्री की सजावट की। इसका बालक पर अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा और वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गया।

एक लोककथा के अनुसार एक गांव में जब एक लकड़हारा ठिठुरन भरी सर्दी में अपनी झोंपड़ी में सोने की तैयारी कर रहा था, तब वहां सर्दी से ठिठुरता एक बच्चा आया और उसने आश्रय मांगा। लकड़हारे ने उसे गरम दूध पिलाया और सोने के लिए अपना बिस्तर दे दिया। सुबह उस बालक ने लकड़हारे के आंगन में एक वृक्ष की टहनी गाड़ दी और कहा–''यह टहनी तुम्हारे परिवार में सुख-समृद्धि लाएगी।'' इसके बाद वह चला गया। उसके जाने के बाद लकड़हारे को महसूस हुआ कि वह तो साक्षात् प्रभु यीशु थे।



प्रचलित मान्यता के अनुसार तभी से क्रिसमस ट्री की परंपरा शुरू हुई।

विश्व का सबसे बड़ा क्रिसमस ट्री उत्तरी केरोलिना के विलिंगटन नामक पार्क में स्थित है। इसकी परिधि 15 फुट तथा ऊंचाई 90 फुट है। इस ट्री की छाया की परिधि 110 फुट है। क्रिसमस के दिनों में सप्ताह भर इसे बड़ी शान-बान के साथ सजाया जाता है। इसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। क्रिसमस के दिनों में लगभग आठ हजार बल्ब तथा छह हजार किलोग्राम छोटी घास का प्रयोग किया जाता है। काफी बड़े पैमाने पर इस ट्री की सजावट में अनेक आभूषण, वस्त्र तथा धातुओं का भी प्रयोग किया जाता है।

कहीं-कहीं क्रिसमस ट्री के ऊपर एक देवता की प्रतिमा लगाने की भी प्रथा है। यह प्रथा इंग्लैंड के राजकुमार एल्बर्ट ने 1841 में प्रारंभ की थी। सर्वप्रथम उन्होंने ही क्रिसमस ट्री पर एक ऐसे देवता की प्रतिमा लगाई थी, जिसके दोनों हाथ ऊपर की तरफ उठे हुए थे।

क्रिसमस ट्री को सजाने के साथ ही इस ट्री को लगाने की भी परंपरा विकसित हुई। इसके साथ ही वृक्षारोपण का प्रचार भी हुआ। अमेरिका में सैंडी प्रैटिनो ने तो बाकायदा एक ऐसी संस्था बनाई थी, जो लोगों को बिना किसी मूल्य के छोटे-छोटे पौधे देती थी, जिन्हें वे अपने घर में या उसके आसपास लगा सकें। सैंडी प्रैटिनो स्वयं भी बड़ी मात्रा में क्रिसमस सप्ताह में ट्री लगाया करते थे। मान्यता है कि उन्होंने अपने जीवनकाल में कुल 14000 ट्री लगाए थे। आज भी अमेरिका में इस अवसर पर लगभग 5 लाख पौधे बिक जाते हैं। इंग्लैंड में तो इस प्रकार की घटनाओं से प्रेरित होकर चैंबरलैंड में एक बड़ा फार्म भी स्थापित किया गया है, जहां से हर वर्ष क्रिसमस के आसपास लगभग तीन लाख पौधे बेचे जाते हैं।

क्रिसमस ट्री के साथ पनपी वृक्षारोपण की इस परंपरा को यदि प्रोत्साहित किया जाए, तो निश्चित ही यह संपूर्ण विश्व में वन क्षेत्र बढ़ाने में सहायक होगी।



सुब्रतो



कहानी

स्कूल में बड़ा दिन



संजीव ठाकुर
विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के बाद अब स्वतंत्र लेखक

तृषा कल ही से जिद कर रही है। उसे क्रिसमस मनाना, दोस्तों को बुलाकर पार्टी करनी है। पापा उसे समझा रहे हैं–''अभी दीवाली में तुमने जो-जो कहा, मैंने खरीद दिया था। तुमने रंगोली भी बनाई थी, पटाखे भी छुड़ाए थे, तरह-तरह की सजावट की चीजें ली थीं, मैंने मना नहीं किया था, लेकिन अब दोबारा से इतना खर्च!''

आज क्रिसमस है। तृषा ने सुबह-सुबह सत्याग्रह शुरू कर दिया–''दूध नहीं पीना!''

मम्मी भी उसे समझाने लगीं। उस पर कोई असर नहीं हुआ। तब वह बोलीं–''ठीक है, मैं पापा से कहूंगी। पहले दूध पी लो!''

तृषा को दूध का गिलास देकर मम्मी पापा से बात करने लगीं–''ला दीजिए न, यह जो-जो कह रही है? बच्ची है!''

पापा ने कहा–''ठीक है, दोपहर बाद चलकर तुम्हें सारा सामान खरीद दूंगा। अभी तो दुकानें भी खुली नहीं होंगी। अभी जाकर अपने दोस्तों को निमंत्रण दे आओ। आज सात बजे हमारे घर में क्रिसमस पार्टी होगी।''

तृषा जाकर अपनी सहेलियों–गुनगुन, मीरा, दिशा, ग्रेसी और अंजलि को निमंत्रण दे आई।

लंच के बाद पापा तृषा को बाजार ले गए। तृषा जो-जो कहती गई, खरीदते गए–क्रिसमस ट्री, बेल, कैंडल, बॉल, कैंडी, स्टार। खाने के लिए पेस्ट्री, चिप्स, कुरकुरे। तृषा तो कोल्ड ड्रिंक्स भी खरीदवाना चाहती थी, लेकिन पापा ने ठंड का नाम लेकर खरीदने से मना कर दिया। तृषा ने अब आइसक्रीम का नाम लिया। पापा ने फिर ठंड कहकर टालना चाहा। तृषा बोली–''आइसक्रीम के बिना पार्टी क्या होगी पापा।'' तब पापा को आइसक्रीम खरीदनी ही पड़ी।

घर आकर तृषा चाह रही थी कि क्रिसमस ट्री तैयार कर ले, लेकिन मम्मी ने कहा–''पहले थोड़ा आराम कर लो नहीं तो पार्टी इंज्वॉय नहीं कर पाओगी।''

''फिर क्रिसमस ट्री कब तैयार करूंगी?''–तृषा बोल पड़ी।

''जब तुम्हारे सारे दोस्त आ जाएं, तब! सब मिलकर तैयार करोगे, तो जल्दी तैयार हो जाएगा और तुम लोगों को मजा भी आएगा।''–मम्मी ने समझाया।

तृषा मम्मी-पापा के साथ आराम करने चली गई। मम्मी-पापा को जल्द ही नींद आ गई, मगर तृषा को नींद नहीं आ रही थी।

वह आंख बंद किए लेटी रही। उसका मन इधर-उधर भागता रहा। कभी उसका मन शाम की पार्टी पर चला जाता, कभी सांता क्लॉज पर।

पिछली बार सांता क्लॉज ने उसके तकिए के नीचे चॉकलेट का पैकेट रख दिया था। 'इस बार पता नहीं क्या रखेंगे? वह चाह रही थी, इस बार एक गुड़िया रख दें? लेकिन नहीं! गुड़िया तो कई हैं मेरे पास कुछ और रख दें!'–उसने सोचा।

अब वह पूरी तरह सांता के खयालों में खो गई। सांता आए हैं। वे उसे स्कूल ले जा रहे हैं। 'छुट्टी के दिन स्कूल?'

स्कूल पहुंचकर उसने देखा कि उसकी क्लास के सभी बच्चे वहां पहुंचे हुए हैं। –''अरे! तुम कैसे आईं?''

–''मुझे सांता यहां लेकर आए हैं।''

–''और तुम?''

–''मुझे भी सांता लेकर आए हैं!''

''बच्चो!''–सांता ने सबको पुकारा।

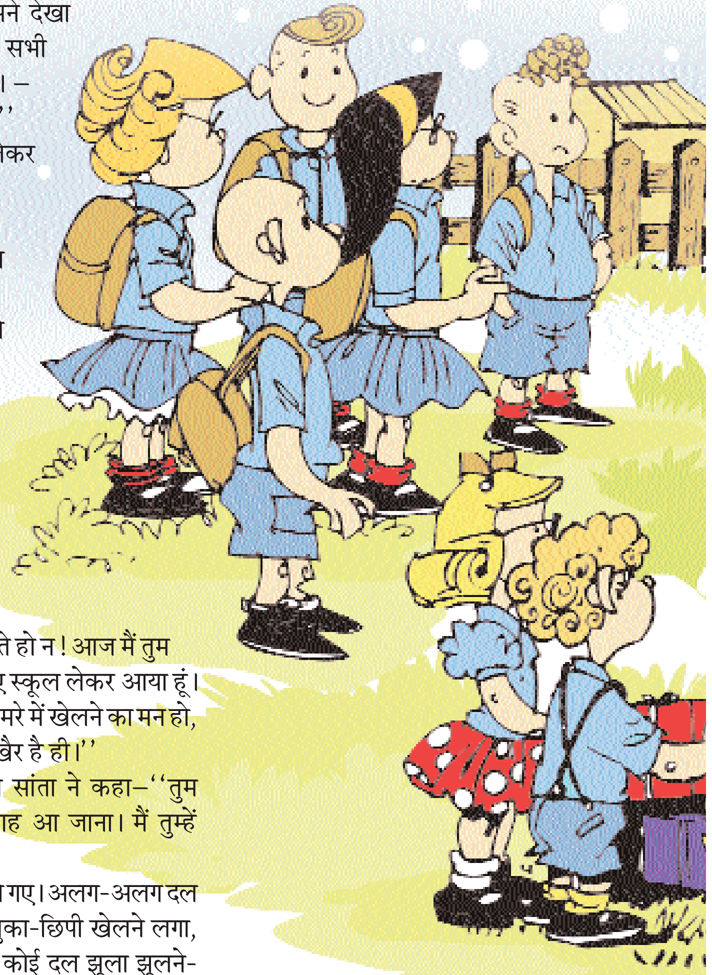
सभी बच्चे जमा हो गए। सांता ने कहा है–''बच्चो! तुम लोग हर रोज स्कूल पढ़ने के लिए आते हो न! आज मैं तुम लोगों को खेलने के लिए स्कूल लेकर आया हूं। तुम यहां खेलो। जिस कमरे में खेलने का मन हो, उसमें खेलो। मैदान तो खैर है ही।''

जाते-जाते बच्चों से सांता ने कहा–''तुम सभी खेलकर इसी जगह आ जाना। मैं तुम्हें कहानी भी सुनाऊंगा।''

बच्चे वहां से गायब हो गए। अलग-अलग दल में बंट गए। कोई दल लुका-छिपी खेलने लगा, कोई पकड़म-पकड़ाई। कोई दल झूला झूलने-झुलाने लगा। बच्चे जी भरकर खेले। उनको रोकने-टोकने वाला कोई नहीं था। डांटने-डपटने वाला कोई नहीं था।

खेलने के बाद सभी सांता के पास आए। सांता तब तक जमीन पर सो गए थे। गुनगुनी धूप थी, उन्हें नींद आ गई थी। बच्चों के शोर से वे जग गए। उठकर बैठे। सभी बच्चों को अपने सामने बैठाया और अपने थैले से निकालकर सबको दस-दस टॉफियां दीं। फिर उन्होंने पूछा–''बच्चो! तुम लोगों को स्कूल आने में मजा आता है या नहीं?''

सांता ने आगे पूछा–''तुम लोगों को स्कूल



अतुल वर्धन

में क्या-क्या अच्छा नहीं लगता है?''

सपना बोली—''हमें स्कूल में खेलने नहीं देते!''

आयुष बोला—''मैम, हमें डांटती रहती हैं।''

सांता सबको समझाने लगे—''देखो, बच्चो! तुम लोग स्कूल पढ़ने के लिए आते हो। पढ़ना तुम्हारे लिए बहुत जरूरी है। स्कूल में तुम लोग मन लगाकर पढ़ाई किया करो। हां, मैं तुम्हारी प्रिंसिपल मैम से बात करूंगा कि रोज एक-दो पीरियड तुम्हें खेलने दिया करें।''

''लेकिन मैम जो हमें बात-बात पर डांटती रहती हैं? कभी मुर्गा बना देती हैं, तो कभी स्कूल से निकालने की धमकी देती हैं?''—कार्तिक बोल पड़ा।

इसके साथ ही दिव्या बोली—''कभी-कभी तो हमारे पेरेंट्स को बुलाकर उनके सामने डांटती हैं!''

''हां, यह गलत बात है।''—सांता बोले। उन्होंने बच्चों को समझाया—''मैं तुम्हारी मैम से भी कहूंगा कि वे तुम्हें डांटा न करें।''

''लेकिन वे आपकी बात मानेंगी?''—विदुषी ने सवाल किया।

सांता ने जवाब दिया—''अगर वे मेरी बात नहीं मानेंगी, तो मैं तुम्हारे स्कूल में आकर अनशन करूंगा।''

''अनशन? जैसा अन्ना ने किया था?''—प्रत्यय ने पूछा।

—''हां, उसी तरह का अनशन! मैं मैम से तुम्हारी बात मनवाकर रहूंगा।''

बच्चे खुश होकर तालियां बजाने लगे। तालियों की आवाज सुनकर सड़क पर जा रही एक बच्ची वहां आ गई। वह गंदे कपड़े पहने थी। दो-तीन बच्चे उसे भगाने लगे। सांता ने बच्चों को रोका। उन्हें समझाया—''बच्चो! यह भी तुम लोगों की तरह ही एक बच्चा है। अंतर यह है कि इसने गंदे कपड़े पहन रखे हैं।'' यह कहकर सांता ने उस बच्ची को अपने पास बुलाया। अपने थैले से एक सुंदर सी



ड्रेस निकाली और उसे देते हुए कहा—''उधर कमरे में जाकर यह ड्रेस पहन लो और यहां आ जाओ!''

कुछ ही देर में वह बच्ची सांता के दिए कपड़े पहनकर वहां आ गई। बच्चे उसे देखकर तालियां बजाने लगे। सांता ने बच्चों से कहा—''कभी भी किसी बच्चे का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। सभी बच्चे एक जैसे होते हैं।''

सांता ने उस बच्ची को भी टॉफियां दीं फिर सबको कहानियां सुनाईं। कहानियां सुनाने के बाद उन्होंने कहा—''बच्चो! अब चलो, मैं तुम लोगों को ऐसी जगह ले चलता हूं जहां टॉफियां और चॉकलेट पेड़ों पर उगती हैं। जहां कोल्ड ड्रिंक की नदी बहती हैं। आइसक्रीम की झील है।''

यह कहकर सांता ने एक बड़ी सी दरी बिछा दी। सभी बच्चे उस पर बैठ गए। दरी उड़ने लगी। सभी बच्चे मस्ती में उड़े जा रहे थे, उड़े जा रहे थे।

तभी पापा ने जोर का खर्राटा लिया।

तृषा जमीन पर आ गिरी। —''क्या पापा, आप भी?''

पापा के खर्राटे से मम्मी की नींद भी खुल गई। वह उठ बैठीं। तृषा को जगाने लगीं। वह क्या जगती? वह तो पहले से ही जगी थी।

अंधेरा हो गया था। तृषा अपने दोस्तों को देखने दस बार बालकनी हो आई थी। आखिर एक-एक कर उसके सभी दोस्त आए। सबने मिलकर क्रिसमस ट्री खड़ा किया। उसके ऊपर स्टार लगाया। घंटियां टांगी। 'जिंगल बेल, जिंगल बेल, जिंगल ऑल दे वे' बजने लगा। बच्चे खुशी में झूम उठे। नाचने लगे, गाने लगे। फिर मम्मी ने सबको पेस्ट्री खिलाई, चिप्स, कुरकुरे खिलाए, आइसक्रीम खिलाई।

रात के नौ बज गए थे। बच्चे मस्ती में डूबे थे। वे घर ही नहीं जाना चाहते थे। लेकिन एक-एक कर सबके मम्मी-पापा का फोन आ गया। गुनगुन की मम्मी तो खुद ही उसे लेने आ गईं। सबने एक-दूसरे को 'मैरी क्रिसमस', 'मैरी क्रिसमस' कहा और चहकते हुए एक-दूसरे से विदा ली।

किड टफ डीवीडी प्लेयर



बालेंदु दाधीच

बच्चों के खिलौने बनाने वाली कंपनी फिशर प्राइस ने एक गुलाबी पोर्टेबल डीवीडी प्लेयर पेश किया है, खास तौर से बच्चों के लिए। नाम है– 'किड टफ डीवीडी प्लेयर।' नाम से ही जाहिर है कि यह बहुत मजबूत है और गिरने या झटके लगने से इसे खास फर्क नहीं पड़ता।

इसकी करीब सवा तीन इंच की टीएफटी स्क्रीन पर यात्राओं तथा पिकनिक के दौरान भी मूवीज देखी जा सकती हैं। गाने सुने जा सकते हैं, क्योंकि यह बिजली के साथ-साथ बैटरी से भी चलता है। डिजाइन और रंग भी इतने खूबसूरत हैं कि आपके दोस्त तारीफ किए बिना नहीं रहेंगे।

स्क्रीन टाइम मैनेजर



कंप्यूटर या टीवी की स्क्रीन के सामने ज्यादा वक्त बिताने से आपके शरीर और दिमाग पर खराब असर पड़ता है और पढ़ाई का नुकसान तो होता ही है। कितना अच्छा हो अगर कोई ऐसा सहायक मिल जाए, जो किसी भी काम के लिए तय वक्त खत्म होते ही टीवी बंद कर दे। बीओबी स्क्रीन टाइम मैनेजर ऐसा ही दोस्त है। आप भले ही पापा-मम्मी से मिली मोहलत को याद न रख पाएं, यह उसे कभी नहीं भूलने वाला। यह एक अनोखा गैजेट है, जिसे टेलीविजन या कंप्यूटर से जोड़ दिया जाता है। एक बार पापा-मम्मी इसमें सेटिंग कर देंगे कि आपको कितना समय टीवी-कंप्यूटर के सामने बैठने की आजादी है। बस, फिर जब भी स्क्रीन के सामने बैठोगे, यह तुम्हारा वक्त नोट करता रहेगा और वक्त बीतते ही टेलीविजन, वीडियो गेम या कंप्यूटर बंद कर देगा। इसमें दैनिक ही नहीं, साप्ताहिक स्क्रीन टाइम भी तय किया जा सकता है। किसी खास वक्त पर टीवी-कंप्यूटर को बंद ही रखना हो, तो उसकी भी सेटिंग की जा सकती है। ऐसे 35 टाइम-ब्लॉक तय किए जा सकते हैं। और हां, इसका की-पैड रात के अंधेरे में भी दिखता है।

जिलियंज टच स्क्रीन एटीएम बैंक

पापा-मम्मी के साथ बैंक के एटीएम में तो आप जरूर गए होंगे। किसी-किसी एटीएम में टच स्क्रीन डिस्प्ले भी होता है, जिसमें आने वाले विकल्पों को उंगलियों से छूकर पैसे का लेन-देन या बैंक खाते का ब्योरा देखा जा सकता है। इसे देखकर तुम्हारा भी मन करता होगा कि अपना क्रेडिट कार्ड डालकर कुछ रुपए मैं भी निकाल लूं। असली एटीएम में तो यह संभव नहीं है लेकिन एक मजेदार मशीन ने इसे संभव कर दिखाया है। अगर तुम पापा-मम्मी को मना लो, तो तुम्हारे पास अपना खुद का एटीएम बैंक हो सकता है, जिसे पेश किया है जिलियंज नामक कंपनी ने।



इस टच स्क्रीन एटीएम के साथ आने वाले क्रेडिट कार्ड के जरिए बाकायदा नोट और सिक्के जमा किए जा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर निकाले भी जा सकते हैं। आपका यह खास एटीएम दोनों काम करता है। इसे एक आधुनिक गुल्लक समझ सकते हो, जो दैनिक लेन-देन का पूरा हिसाब-किताब भी रखता है। आप चाहो तो रोज शाम को अपने एकाउंट का ब्योरा देख सकते हो।

लाइटिंग वाला सांता

चेष्टा रानी

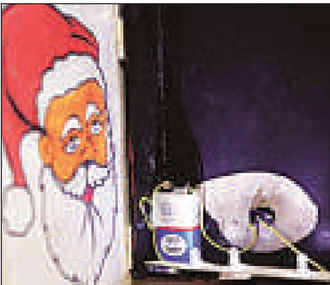


सामग्री

- 19 x 25 सें.मी. पतला गत्ता
- एक डब्बा आधा किलोग्राम मिठाई वाला
- ए-4 साइज का मोटा बटर पेपर
- वॉटर कलर (लाल, काला, हलका संतरी)
- काला मार्कर पेन
- 8 थोड़े बड़े लाल नग
- 4 डायमंड सिल्वर
- 1 मीटर (डेढ़ सें.मी. चौड़ा) चमकीला डिजाइनदार गोटा
- 9 वॉल्ट की बैटरी
- 3 सफेद एलईडी बल्ब
- 20 सें.मी. पतली तार
- एक छोटा ऑन-ऑफ का बटन
- चिपकाने वाला पदार्थ
- 3 व 6 नंबर के गोल ब्रश
- कटर व कैंची
- सेलो टेप
- 11 x 1 सें.मी. पतले गत्ते की पट्टी

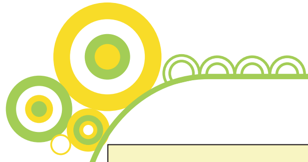
विधि

- सबसे पहले पतला गत्ता लें। चारों ओर से 4 x 4 सें.मी. की जगह छोड़कर बीच के हिस्से को निकालें। यह एक फ्रेम बन जाएगा।
- अब 6 नंबर के ब्रश से एक तरफ लाल रंग करें। रंग सूखने के बाद चारों ओर किनारों पर चमकीला डिजाइनदार गोटा चिपकाएं।
- नीचे वाले गत्ते के किनारे पर बीच में एक लाल डायमंड नग चिपकाएं।
- बटर पेपर लें, उस पर सांता क्लॉज का स्केच बनाएं। सांता की टोपी में लाल व फेस में हलका संतरी रंग भरें। काली आउट लाइन बनाएं। इसे गत्ते के फ्रेम के पीछे की तरफ बीचोबीच चिपकाएं।
- अब डब्बे के अंदर और बाहर सभी तरफ काला रंग करें। सूखने के बाद नीचे व कोने में 9 वॉल्ट की बैटरी लगाएं।
- 11 x 1 सें.मी. की पतले गत्ते की पट्टी लें। उसमें तीनों एलईडी बल्ब लगाएं। (+) व (-) का ध्यान अवश्य रखें।
- घर के किसी बड़े सदस्य की मदद से सर्किट बनाएं। अब एक-एक तार डब्बे के पीछे ले जाएं। ऑन-ऑफ बटन लगाएं। जिससे यह जल-बुझ सके।
- अब फ्रेम को मिठाई के डब्बे पर रखें। पीछे की ओर से सेलो टेप से मासकिंग कर लें। तैयार है, लाइटिंग वाला सांता।



फोटो : जसजीत प्लाहा





जैरी का उपहार

कथा : क्षमा शर्मा ✦ चित्रांकन : अतुल वर्धन

जैरी के पापा सेना में थे। उन दिनों बॉर्डर पर उनकी ड्यूटी लगी थी। जैरी अकसर ही उनसे स्काइप या मोबाइल पर बातें करता। वह उसे तरह-तरह के किस्से सुनाते।

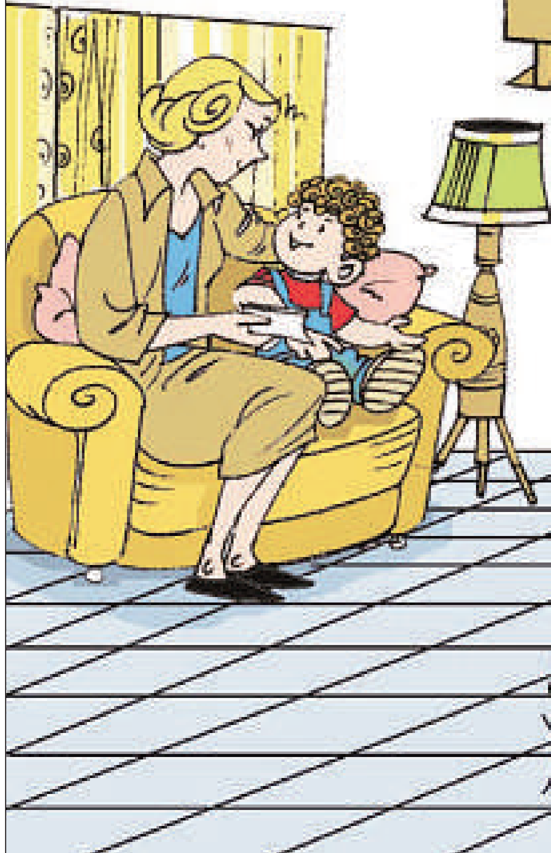
मम्मी बतातीं कि जहां पापा की तैनाती है, वहां बहुत ठंड है। जैरी जब रजाई में सोता, तो उसे पापा की याद आती। सोचता-'जब यहां इतनी ठंड है, तो वहां कितनी होगी?'

सब बच्चे क्रिसमस ब्रेक पर घूमने जा रहे थे। जैरी उदास हो गया। पापा यहां होते, तो वह भी खूब मजे करता। क्रिसमस ट्री सजाता। दोस्तों के साथ पार्टी करता। सांता बनता।

मम्मी ने उसे उदास देखा, तो पूछने लगीं। जैरी ने मुंह दूसरी ओर फेर लिया जैसे सो रहा हो।

उसका कुत्ता टाइगर उसके पास आकर दुम हिलाने लगा, मगर उसने उसकी तरफ भी नहीं देखा। मम्मी समझ गईं, जरूर कुछ बात है।

वह जैरी के सिर पर हाथ फेरने लगीं, तो वह सुबकते हुए बोला–"पापा की याद आ रही है।"



अगले ही दिन मम्मी ने कहा—"देखो, मेरे हाथ में क्या है?" जैरी ने देखा कि मम्मी के हाथ में प्लेन की दो टिकटें थीं। उन्होंने कहा—"बस, जल्दी करो। हम अभी पापा के पास जा रहे हैं। वहीं क्रिसमस मनाएंगे।"



बहुत खास होते हैं क्रिसमस सेलिब्रेशन के दिन, चारों ओर सजा-संवरा माहौल होता है। सांता से गिफ्ट्स पाने के लिए बच्चे बहुत उत्सुक रहते हैं। नए कपड़ों में घूमते, चर्च में प्रार्थना करते और क्रिसमस पार्टी करते हैं लोग। दीवारों-छतों पर होती है सतरंगी रोशनी और रौनक। उस पर नए साल के आगमन का रोमांच भी मन में भरपूर होता है।

मैरी क्रिसमस



सुनीता तिवारी

क्रिसमस के दिन छुट्टियों के दिन, धूम के दिन, मस्ती के दिन। किड्स के लिए खास सेलिब्रेशन के दिन! कुछ दिन की स्कूल की छुट्टियां, बर्फीली हवाएं, चारों ओर रौनक ही रौनक! जीसस का बर्थडे है, कोई छोटी बात नहीं। ऐसे में मार्टीना आंटी ने आसपास के बच्चों को क्रिसमस के माहौल में रमने के कई तरीके बताए। सबसे पहले बच्चों ने अपनी-अपनी इमेजिनेशंस से सुंदर क्रिसमस ग्रीटिंग कार्ड्स बनाए। उन्हें अपने दोस्तों-रिश्तेदारों तक भेजा। फिर उन्होंने पास के चर्च में जाकर पादरी से वहां क्रिसमस सेलिब्रेशन की इजाजत ली। फिर तो बस बच्चों के साथ बड़े भी आ मिले। साफ-सफाई के बाद डेकोरेशन की तैयारियां होने लगीं। सुंदर क्रिस्टल सेंटर पीस सजाए गए। कलरफुल रियल एंड पेपर फ्लावर्स और शाइन पेपर से दीवारों की डेकोरेशन की गई।

मार्टीना आंटी ने बताया कि क्रिसमस पर केक न हो, तो कुछ अधूरा सा लगता है। उसी वक्त कुछ बच्चों की मदद से कैरन आंटी और विमला आंटी ने मिलकर तैयार किया बड़ा सा चॉकलेट केक। डेजी, रोजी और हेलन ने सिल्वर बॉल्स चॉकलेट कोन और जेम्स से केक की डेकोरेशन की।

कैरन आंटी ने बताया कि क्रिसमस पर बेल्स का विशेष महत्व होता है। वर्षों से क्रिसमस बेल्स आने वाली बुराइयों को रोकने और खुशी की धुन के रूप में क्रिसमस की डेकोरेशन का खास हिस्सा बनती आई हैं। साथ ही बेल्स जीसस के जन्म के संदेश की पुकार के रूप में लगाई जाती हैं। आज प्लास्टिक, फाइबर, क्रिस्टल बेल्स बाजार में मिलने लगी हैं।

कलरफुल जेल कैंडल्स सारे माहौल का अंधकार दूर करने का संदेश लेकर आती हैं। इन कैंडल्स के स्टैंड सुंदर रेंडियर, सांता आदि के आकार लिए होते हैं। आजकल खास रूप से सजाई जाती





हैं फ्लोटिंग कैंडल्स। जिन्हें पानी के बाउल में फूलों के साथ तैरते हुए रोशन हुए देखा जाता है। इस पानी में महक लाने के लिए कुछ बूंदें केवड़ा की डाली जाती हैं। जलती-बुझती अठखेलियां करती क्रिसमस लाइट्स चारों ओर जगमगाकर सेलिब्रेशन की खास पहचान बनती हैं। अब तो दीवाली की तरह घरों की छतों-दीवारों पर दीए और मोमबत्तियां जलाकर भी रोशनी की जाती है।

शॉपिंग में रुचि न लेने वाले लोग भी क्रिसमस की खरीदारी का वर्ष भर इंतजार करते हैं। क्रिसमस के दिनों में दुनिया भर में एक से बढ़कर एक सेल लगती है। ऑन लाइन शॉपिंग करने वालों की भी कमी नहीं होती। ऑन लाइन अपनी पसंद की चीजों के नंबर लिखवाए और ऑर्डर प्लेस कर दिया बस। सेल के साथ मार्किट, शोरूम्स, शॉपिंग मॉल्स की सजावट देखने लायक होती है। कुछ लोग तो विंडो शॉपिंग करने, रौनक-मेले का मजा लेने के लिए ही शॉपिंग सेंटर में घूमते हैं इन दिनों। फिर कुछ न कुछ पसंद आ ही जाता है, जेब से क्रेडिट कार्ड निकालकर उसे घर ले आते हैं।

सामान घर की सजावट का हो, रोजमर्रा के इस्तेमाल का या शॉपिंग अपनी दादी मां, दादा जी, पापा, मम्मी, भइया, दीदी या दोस्तों को सुंदर उपहार देने के लिए भी की जाती है। क्रिसमस के बाद तुरंत ही आ जाता है न्यू ईयर। नए साल पर भी दिए-लिए जाते हैं गिफ्ट्स। तभी तो कुछ लोगों ने कई-कई दिन पहले तैयार कर ली होती है, शॉपिंग लिस्ट।

क्रिसमस गेम्स और क्विज विशेष तौर से विशेष शाम के लिए तैयार की गईं। कुछ लोगों ने गेम्स में इनाम भी जीते। पार्टी गाउन, फर कोट, चोको कलर व ब्लैक पार्टी ड्रेसेज में अब रॉक एंड रोल म्यूजिक पर डांस और क्रिसमस सांग गाने का वक्त आ गया। बच्चे तो बच्चे-बड़े भी गाने, बजाने, नाचने में पीछे कहां रहने वाले थे। क्रिसमस प्रेयर कैरोल्स का भी अपना ही मजा रहा। मस्ती और धूम का माहौल वीडियो में रिकॉर्ड होता रहा।

चर्च में एक किनारे पर पड़े बड़े सोफे पर सब बच्चों ने अपने-अपने टैडी बियर लाकर सजा दिए। रोजीना ने पुराने टैडी बियर में नई ताजगी लाने के लिए सबके गले में नए मैचिंग रेशमी रिबन बांध दिए। गले में बांधी सुनहरी छोटी घंटियां।

मार्क अंकल ने बड़े से बॉक्स पर लिखा चैरिटी बॉक्स। सबको यह आइडिया सबसे अच्छा लगा। गुगली आंटी इस बार सांता बनकर चर्च के हॉल में आईं, तो उन्होंने सबसे पहला गिफ्ट चैरिटी बॉक्स में डाला, फिर नंबर आया बच्चों का। उन्हें चॉकलेट, टैडी बियर, कैंडी, कुकीज दी गईं। गुगली आंटी की देखा-देखी सबने कुछ-कुछ रुपए चैरिटी बॉक्स में डालने शुरू किए। इस खुशी के माहौल में कुछ न कुछ चैरिटी करके हर कोई अपनी खुशी को दोगुना करना चाहता था। यह धन जब मजबूर लोगों तक पहुंचेगा, तो मिलेंगी बेस्ट विशिज। बॉक्स के ऊपर ही दीवार पर एक चार्ट पेपर लगा था, जिस पर सभी क्रिसमस मैसेज लिख रहे थे।



स्नो मैन को सजाकर चर्च के गेट पर सजाया गया। चर्च में उगे पाइन ट्री की सजावट के साथ-साथ क्रिसमस ट्री देखने उसे सजाने का क्रेज ही था कि सबने कुछ न कुछ ट्री की सजावट के लिए लाकर दिया। नन्हे-नन्हे स्टफ्ड टॉयज, रोल किए हुए रिबन, कलरफुल पाइप्स, छोटे-छोटे चॉकलेट बॉक्स, गिलहरी, रेंडियर, बर्ड, फेयरी, ग्लव्स, टॉफियां, चांद, सितारे, मून, फूल, फल। मगर कुछ शैतान बच्चे मौका देखकर सबसे नजर बचाकर बार-बार ट्री से कुछ तोड़कर तुरंत खा लेते। फिर कुछ देर बाद ट्री के पास ही मिलते।

खाने-पीने नाचने-गाने का भी इस दिन खास महत्व होता है। सबसे पहले जोसेफ अंकल जो कि चर्च में मौजूद लोगों में सबसे उम्रदराज हैं, उनसे चॉकलेट केक कटवाया गया। केक के इर्द-गिर्द बच्चे काफी समय से चक्कर काट रहे थे। असली बर्थडे तो केक खाकर मनाया उन्होंने। फिर टोमैटो सूप, पुलाव, मखाने-मटर की सब्जी, बिरयानी, गाजर का हलवा, आइसक्रीम, फ्रूट क्रीम, न जाने क्या-क्या खाया सबने।

क्रिसमस सेलिब्रेशन की धूम के बाद बच्चे 'जिंगल बेल-जिंगल बेल' गाते, धूम मचाते अपने-अपने घरों की ओर बढ़ चले। सबके हाथों में थे चॉकलेट के डब्बे और सांता के दिए न्यारे-प्यारे गिफ्ट्स। ●



कहानी

सांता क्लॉज की चिट्ठी



प्रकाश मनु

नंदन में सहायक संपादक रहे। बच्चों के प्रसिद्ध लेखक

इस नए शहर में शीनू उदास थी, बहुत उदास! क्रिसमस को बस, दो ही दिन तो बाकी थे और वह घर से इतनी दूर थी। उसे बार-बार आगरा की राजा मंडी में खूब बड़े से आंगन वाला अपना घर याद आ रहा था, सहेलियां भी। और सबसे बढ़कर मम्मी-पापा, गोबू भैया और छुटका टीनू। क्रिसमस पर सब कितने खुश होते थे और कई-कई दिन पहले से तैयारियां करते थे। और गोबू भैया तो रंग-बिरंगे गुब्बारों और झालरों से घर की इतनी सजावट कर देते थे कि पूरा घर ही नया-नया लगने लगता था। फिर दरवाजे के ठीक ऊपर झिलमिल-झिलमिल करता हुआ सुंदर नीला तारा। उसे देखते ही मन में एक उमंग सी पैदा हो जाती थी।

पर उसे इसी साल कंप्यूटर इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए चेन्नई आना पड़ा। अभी कुछ ही महीने पहले तो वह आई है। यहां उसका बिल्कुल मन नहीं लगता।

शीनू किताब लेकर बैठी है। पर जाने क्यों, वह कुछ भी पढ़ नहीं पा रही। पढ़ते-पढ़ते अक्षरों की जगह किताब पर भी वही नीला तारा। वही क्रिसमस ट्री। ऐसे में भला कोई पढ़ सकता है?

उसने हॉस्टल वॉर्डन मिसेज मीरा वरदराजन से कहा था–''मैडम, क्रिसमस पर घर नहीं गई, तो मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा? फिर कैसे करूंगी मैं कंपिटीशन की तैयारी?''

पर उन्होंने बड़े ही प्यार से समझाया–''मैं जानती हूं, वाकई तुम्हें अकेलापन लग रहा होगा, क्योंकि छुट्टियां हैं और ज्यादातर बच्चे तो घर चले ही गए। पर शीनू, यह भी तो सोचो कि जिस कंपिटीशन के लिए तुम यहां रुकी हो, वह कितना जरूरी है। मुझे लगता है, इस बार स्कॉलरशिप तुम्हें ही मिलेगा। तुम वाकई इंटेलीजेंट हो और थोड़ी मेहनत से ही कमाल कर सकती हो। सोचो, अगर ऐसा हुआ, तो तुम्हारे मम्मी-पापा को कितनी खुशी होगी?''

शीनू को भी लगता था, जितनी उसकी तैयारी है, उसे देखते हुए स्कॉलरशिप उसे मिल जाना चाहिए। पूरी क्लास में सिर्फ दो छात्रों को मिलना था स्कॉलरशिप। और अगर उसे मिल गया, तो वाकई पूरा घर खुश हो जाएगा। उसकी सहेलियां भी बहुत खुश होंगी, जो अकसर कहा करती थीं– ''शीनू, तू जीनियस है। तू चेन्नई जा रही है न, वहां कुछ करके दिखाना।''

पर फिर उसे याद आने लगा कि यह पहली बार होगा, जब क्रिसमस पर वह घर नहीं होगी? सब लोग तो क्रिसमस की हंसी-खुशी और सपनों की दुनिया में भूले होंगे और वह अकेली यहां?

अभी शीनू यह सोच ही रही थी कि झट उसे अपनी सहेलियों की शैतानी याद आ गई, खासकर शीबा का नटखटपन जो हर क्रिसमस पर कोई न कोई मजेदार नाटक जरूर करती थी। और जब पकड़ी जाती थी, तो इतनी जोर से खी-खी-खी करके हंसती थी जैसे मुंह से हंसी का फव्वारा छूट रहा हो। और गाल हंसते-हंसते लाल हो जाते थे।

उसे याद आया, पिछली बार का उसका तमाशा। ओह, वह भी क्या चीज थी! फैंटास्टिक, वाकई फैंटास्टिक। पिछले बरस शीबा ने अचानक सांता क्लॉज बनकर सबको ऐसे चकराया था और ऐसा धमाल मचाया था कि मत पूछो। हुआ यह कि शाम को सब सहेलियां मिलीं, तो हंसी-हंसी में यह बात चल पड़ी कि भला सांता क्लॉज आएगा, तो हम उससे क्या मांगेंगे? नीना ने इतराते हुए कहा–''मैं तो भई, सांता क्लॉज से ऐसी सोने की चम-चम करती घड़ी मांगूंगी, जैसी किसी के पास न हो।''

मिली बोली–''मैं तो काले मोतियों का सुंदर सा हार लूंगी, जैसा मेरे पड़ोस में रहने वाली रिनी के पास है।'' शीनू, किट्टी और रीटा ने अपने लिए बड़े सुंदर, गोल घेरे वाले और चमचमाते करते लहंगों की फरमाइश की। अंत में शीबा की बारी आई, तो उसने कहा–''अरे भई, मेरा क्या है? मुझे तो सांता क्लॉज बस फूलों जैसी खिल-खिल हंसी दे दे, फिर कुछ और नहीं चाहिए।'' इस पर सब सहेलियां एक साथ चिल्लाईं–''वह तो तेरे पास है ही शीबा, कुछ और मांग!'' और फिर शीबा समेत सब सहेलियां इतनी जोर से हंसीं कि क्या कहा जाए?

मगर अगले दिन सुबह उठते ही शीनू को अपने सिरहाने लाल फीते से बंधा हुआ एक रंग-बिरंगा डब्बा मिला, तो वह बहुत चकराई। कांपते हाथों से उसने डब्बा खोला, तो अंदर गुलाबी फूलों वाले कागज पर लिखी एक चिट्ठी नजर आ गई। चिट्ठी में लिखा था–

'शीनू, तुम बुद्धू हो, इसलिए तुम्हें इस बार कोई उपहार नहीं दे रहा। अपना बुद्धूपना कम करो, तो अगले साल

बहुत कुछ मिल सकता है। हां, उदास मत होना। एक चॉकलेट का छोटा टुकड़ा पड़ा है, अपने प्यारे सांता क्लॉज को याद करते हुए खा लेना। तुम्हारा—सांता क्लॉज।'

शीनू की हालत ऐसी, जैसे सिर आसमान में उड़ रहा हो। आहा, सांता क्लॉज ने मुझे चिट्ठी लिखी, सांता क्लॉज ने! उसने फोन से नीना, किट्टी और रीटा से बात की, तो पता चला कि सभी को ऐसा रंग-बिरंगा डब्बा और अजीबोगरीब चिट्ठी मिली है।

अगले दिन सब सहेलियां मिलीं, तो उन्होंने एक-दूसरे को अपने-अपने गिफ्ट, चिट्ठी और चॉकलेट के बारे में बताया। फिर शीबा से पूछा गया, तो उसके चेहरे पर आई शरारती हंसी ने सारा राज खोल दिया कि यह सारा कारनामा उसी का था। कैसे उसने ये डब्बे रखवाए, यह भी पता चल गया। उसी दिन शीबा को 'मिस सांता क्लॉज' की पदवी मिली और अगले इतवार को वाकई उसे सहेलियों के बीच लाल कोट समेत पूरा सांता क्लॉज बनकर आना पड़ा। सबने उसके साथ फोटो खिंचवाए और शीबा समेत सबकी इतनी हंसी छूट रही थी कि सभी हंसी का गुब्बारा बनी जा रही थीं।

शीनू को याद आ रहा था यह सब और उसकी उदासी और बढ़ती जा रही थी। उसने फोन पर मम्मी को बताया कि वह नहीं आ पा रही है, तो वह भी उदास हो गईं। पर कहा—''अगर मिसेज वरदराजन ने ऐसा कहा है, तो उनकी बात माननी चाहिए बेटी। वह वाकई तुमसे बहुत प्यार करती हैं।''

फिर पापा और गोबू भैया का फोन आया और उन्होंने भी शीनू से कहा—''कोई बात नहीं शीनू, अगर तुम नहीं आ पा रही हो तो थोड़े समय बाद खुद मम्मी तुमसे मिलने आ जाएंगी। उन्होंने प्रॉमिस किया है।''

''ठीक है।'' शीनू ने कहा, पर उसकी उदासी कम नहीं हुई।

तभी वार्डन मिसेज वरदराजन खुद उसके कमरे में आ गईं। मुसकराती हुई बोलीं—''अच्छा शीनू, जरा बताओ तो, तुम अपने घर में कैसे मनाती हो क्रिसमस?''

इस पर शीनू को बिजली की कौंध की तरह सब कुछ याद आ गया। कई रोज पहले से क्रिसमस ट्री सजाने की तैयारी। उसके लिए गोबू भैया बाजार से रंग-बिरंगे चमकीले कागज के साथ ही रंगीन झालरें, गुब्बारे, छोटे-छोटे नीले तारे और सुंदर सी सफेद घंटियां लेकर आते थे। हालांकि क्रिसमस ट्री सजाने का जिम्मा शीनू और उसकी सहेलियों का ही होता था।

शाम होते-होते जब क्रिसमस ट्री पर रंगीन झालरें, झिलमिल तारे, गुब्बारे और घंटियों के साथ रंग-बिरंगी बत्तियां झिलमिलाने लगतीं। रंग-बिरंगी झालरों, किस्म-किस्म के डिजाइनदार गुब्बारों, सुंदर कलाकृतियों और सतरंगी सपनों से झिलमिलाता क्रिसमस ट्री। साथ ही शीनू और उसकी सहेलियां यीशु और मदर मेरी की छोटी-छोटी मूर्तियां सजाकर ईसा मसीह के बचपन की झांकी सजाती थीं।

क्रिसमस ट्री देखने आई आंटियों से शीनू और उसकी सहेलियों को खूब शाबाशी मिलती। खूब। और फिर मिलकर कैरोल...यानी प्रार्थना-गीत गाने का कार्यक्रम। सचमुच बहुत अच्छा लगता था, बहुत अच्छा!

मैडम को यह सब बताते हुए शीनू के चेहरे पर फिर थोड़ी उदासी आ गई। इस पर उन्होंने मुसकराते हुए कहा—''चलो शीनू, तुमने इतना कुछ बताया और इतने अच्छे ढंग से बताया कि लगता है कि मैंने भी तुम्हारे घर पहुंचकर क्रिसमस का पूरा आनंद ले लिया।''

वह रात शीनू की कुछ उदासी में ही कटी। पर अगले दिन वह नाश्ता कर ही रही थी कि उसे मिसेज वरदराजन के साथ एक छोटी बच्ची आती दिखाई दी। पता चला, वह मैडम की बेटी मीशा है, जो इसी शहर के एक बोर्डिंग स्कूल में पढ़ती है और कल ही आई है।

''चलो, शीनू, आज तुम हमारे साथ ही रहोगी। मीशा अभी थोड़ी देर पहले ही क्रिसमस ट्री लेकर आई है। उसे तुम और मीशा मिलकर सजाओगी।'' मैडम मंद-मंद मुसकराते हुए कह रही थीं—''और हां, थोड़ी देर में मीशा की बहुत सी सहेलियां भी आने वाली हैं। वे सब तुम्हारी मदद करेंगी। और तुम सबको बताओगी कि कैसे सजावट करनी है?''

शीनू खुशी-खुशी मीशा के साथ मैडम के घर पहुंची, तो देखा कि वहां खूब बड़े से गमले में न सिर्फ सुंदर क्रिसमस ट्री है, बल्कि साथ ही रंगीन झालरें, गुब्बारे, तारे, घंटियां लगी हैं।

थोड़ी देर में मीशा की आठ-दस सहेलियां भी आ गईं और फिर तो वहां इतनी हंसी-खुशी और रौनक हो गई कि शीनू भूल ही गई कि वह आगरा के राजामंडी वाले अपने घर में है या कि चेन्नई के हॉस्टल में?

शाम तक क्रिसमस ट्री तो बड़ी खूबसूरती से सज ही गया था, साथ ही वह आंगन भी जिसमें उसे रखा गया था।

मिसेज वरदराजन ने पता कर लिया था। तीनों गर्ल्स हॉस्टल में कुल तेरह लड़कियां थीं, जो क्रिसमस में भी घर नहीं जा सकी थीं। उन सभी को उन्होंने अपने घर आमंत्रित किया था, जिन्होंने शीनू के बताए हुए ढंग से मिलकर कैरोल गाया। फिर सबने मैडम के साथ ही गपशप करते हुए मिलकर खाना खाया।

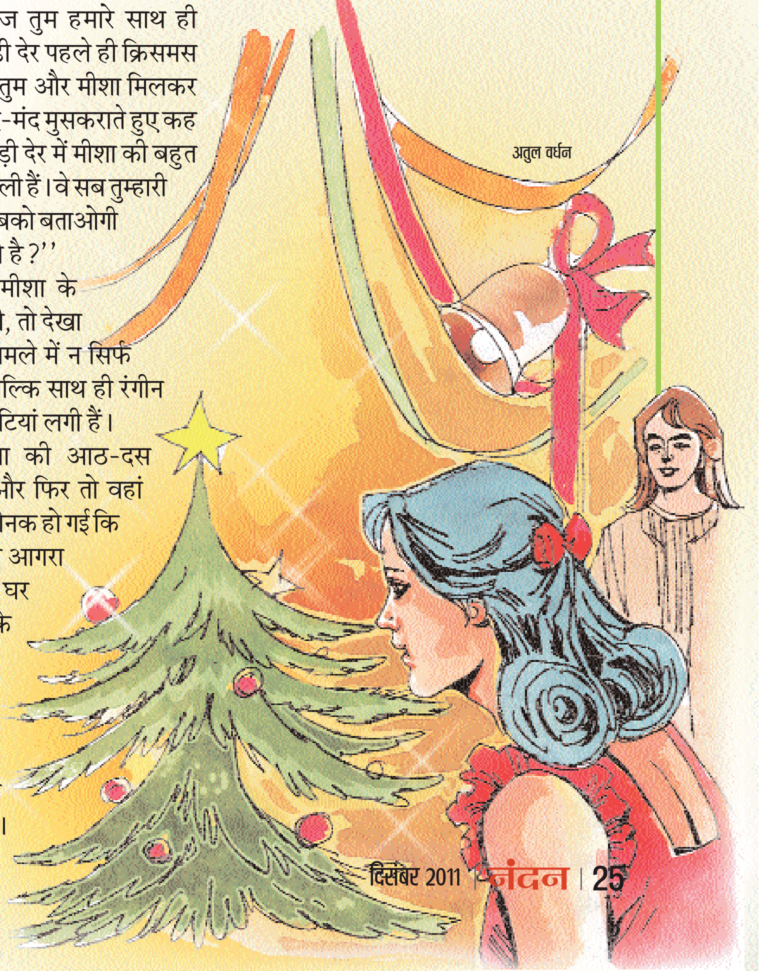
बाद में सब लड़कियां अपने-अपने कमरे में जाने लगीं, तो मैडम ने शीनू से कहा कि वह सुबह नहा-धोकर चर्च जाने के लिए तैयार रहे।

''मैडम, आप जाएंगी मेरे साथ?''—शीनू ने अचकचाकर कहा।

''मैं ही नहीं, मीशा भी जाएगी।''—मिसेज वरदराजन मुसकराईं।

अगले दिन सुबह-सुबह शीनू तैयार होकर मिसेज वरदराजन और मीशा के साथ चर्च जा रही थी, तो उसे लगा कि कहीं मम्मी ही तो आगरा से चलकर चेन्नई नहीं आ गईं? पर मम्मी के ऐसे खुले हुए घने बाल तो हैं नहीं, जैसे मिसेज वरदराजन के!

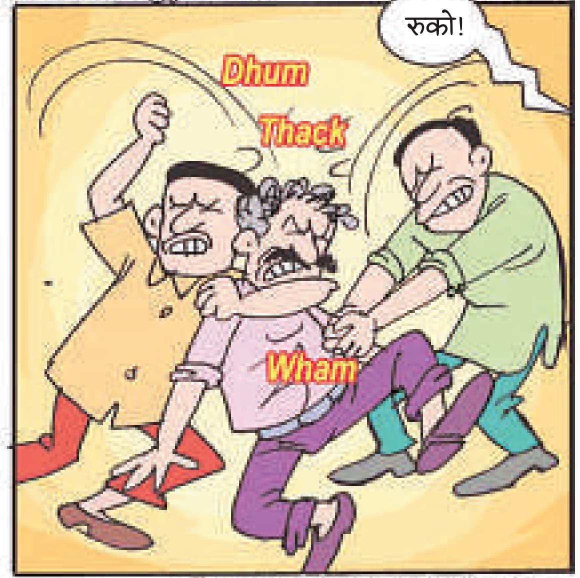
सोचते ही खुद-ब-खुद उसके चेहरे पर हंसी आ गई। मिसेज वरदराजन ने अचानक पीछे देखा और शीनू को खुश देखकर प्यार से उसके गाल थपथपा दिए। शीनू और मीशा एक साथ हंस पड़ीं। ●





jinglebellcreations@gmail.com

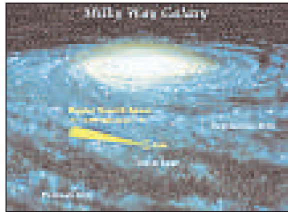






पेट्रोलियम के विकल्प में अब शैवाल (ऐल्गी) से 'बायो फ्यूल' का उत्पादन किया जा रहा है। इस फ्यूल से उत्सर्जित कार्बन को यह स्वयं ऑब्जर्ब करता है। इसकी खेती के लिए समुद्री जल व 'वेस्ट वाटर' का भी इस्तेमाल हो सकता है।



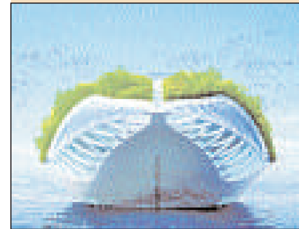


जीवन की संभावनाओं का पता लगाने में नासा का कैप्लर स्पेस टेलीस्कोप लगा है। हमारी आकाशगंगा में 127 प्रकाश वर्ष दूर 'एचडी-10180' तारे का एक ग्रह उसी के तरह के जोन में अपने सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, जैसा कि पृथ्वी कर रही है।



अमेरिका ने 'एलएस 3' नामक एक ऐसा रोबोट बनाया है, जो बुल डॉग जैसा दिखता है। इसीलिए इसका निक नेम 'बुल डॉग' है। यह कठिन से कठिन मार्ग पर बिना गिरे सेना के लिए 400 पाउंड तक सामान ले जा सकता है और 24 घंटे काम कर सकता है।

बेल्जियम के ऑर्किटेक्ट विंसेंट कालेबॉट के शिप में एक संग्रहालय, एक नाइट क्लब और एक उद्यान है। यह अल्ट्रा वायलेट रेज को रिफलेक्ट करता। हाइड्रो व सोलर पॉवर से बिजली बनाता है और पीने के लिए पानी को शुद्ध करता है।





साइबेरिया की इर्तिश नदी की तलहटी पर करीब दो करोड़ वर्ष पुराने 'एक्वेटिक बीटल' के जीवाश्म मिले हैं। दिलचस्प बात यह है कि इसका संबंध बीटल की एक प्रजाति 'हेलोफोरस सिबरिकस' से है, जो यूरोप व एशिया में मिलती है।



टायर में हवा की जगह नाइट्रोजन गैस भरने की कवायद शुरू हो चुकी है। हवा में 78 % नाइट्रोजन है। सूर्य की गरमी से बहुत सी हवा ऑक्सीडाइज होकर निकल जाती है, जबकि शुद्ध नाइट्रोजन पंक्चर होने पर ही निकलती है।

1. औरंगजेब ने ताजमहल से मिलता-जुलता स्मारक 'बीबी का मकबरा' यहां बनवाया था–
क. औरंगाबाद
ख. दौलताबाद
ग. अहमदाबाद
घ. होशंगाबाद

2. भागीरथी व अलकनंदा नदी के देवप्रयाग में मिलन के बाद इस नदी का उद्गम होता है–
क. ब्रह्मपुत्र
ख. गंगा
ग. यमुना
घ. कावेरी

3. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय यहां है–
क. पेरिस
ख. न्यूयार्क
ग. वाशिंगटन
घ. जेनेवा

4. इन्हें भारत कोकिला कहा जाता है–
क. विजयलक्ष्मी पंडित
ख. सरोजिनी नायडू
ग. सुरैया
घ. लता मंगेशकर

5. पृथ्वी के वातावरण की सबसे निचली परत को कहते हैं–
क. आयनोस्फीयर
ख. मेसोस्फीयर
ग. स्ट्रेटोस्फीयर
घ. ट्रोपोस्फीयर

6. 'घाव पर नमक छिड़कना' मुहावरे का सही अर्थ है–
क. घाव का इलाज करना
ख. लड़ाई के लिए उकसाना
ग. दर्द कम करना
घ. दुखी को और दुखी करना

7. गोवा इनके अधिकार में था–
क. पुर्तगाली
ख. डच
ग. फ्रांसीसी
घ. ब्रिटिश

8. THEORY शब्द के प्रत्येक अक्षर को अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार बाएं से दाएं लगाने पर कितने अक्षरों के स्थान नहीं बदलेंगे?
क. एक
ख. दो
ग. तीन
घ. चार

9. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है–
क. उत्तर प्रदेश
ख. मध्य प्रदेश
ग. राजस्थान
घ. बिहार

10. जाकिर हुसैन का संबंध इस वाद्ययंत्र से है–
क. तबला
ख. बांसुरी
ग. सितार
घ. सारंगी

11. विश्व में भारत की आर्थिक विकास दर तेजी से बढ़ रही है। नोमिनल जीडीपी में भारत का नौंवां स्थान है। पर्चेजिंग पॉवर पैरिटी (पीपीपी) में इसका स्थान है–
क. पहला
ख. दूसरा
ग. तीसरा
घ. चौथा

12. सम्राट कनिष्क का संबंध भारत के इस राजवंश से था–
क. मौर्य
ख. गुप्त
ग. नंद
घ. कुषाण

उत्तर
1.क, 2.ख, 3.घ, 4.ख, 5.घ, 6.घ, 7.क, 8.ख, 9.ग, 10. क, 11.घ, 12.घ

पुरस्कृत चित्र (अक्तूबर 2011) • विषय : क्रिसमस ऐसे मनाया



प्रथम पुरस्कार
यासमिन बानो
मरुधर गीता विद्या मंदिर, पाली



द्वितीय पुरस्कार
आयुष सोनकर
बनजारा आर्ट स्कूल, पिलखाना, हावड़ा



तृतीय पुरस्कार
पूजा
केंद्रीय विद्यालय नं. 2, फरीदाबाद

सांत्वना पुरस्कार
गौतमी गरिमा
रामकृष्ण मिशन विद्या मंदिर, कटिहार



सांत्वना पुरस्कार
सृजन पाल
संत जोसफ हाई स्कूल, भूतनाथ रोड, पटना



हिंदी में नाम..आयु..................
अंग्रेजी में नाम..
पिता का नाम..
पता...
....
राज्य..पिनकोड....................
फोन..कक्षा....................
स्कूल का नाम..
....स्थान......................

इनके चित्र भी पसंद आए

- अपूर्व जैन, माउंट फोर्ट सी.से. स्कूल, रुड़की
- ज्योति किरन, लिटिल फ्लॉवर चिल्ड्रेन स्कूल, मऊ
- डॉली शर्मा, श्री भरत मंदिर पब्लिक स्कूल, झंडा चौक, ऋषिकेश
- आदिल अंसारी, सेंट बिलाल कॉन्वेंट इंटर कॉलेज, राजापुर, सीतापुर
- हर्ष राज, सरस्वती विद्या मंदिर, हसनपुर, राजगीर, वैशाली
- गौरव कुमार, रेजोनेंस उच्च विद्यालय, ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर
- अनु सैनी, डीपीएस, सेक्टर-3, बीएचईएल, रानीपुर, हरिद्वार

इस माह **'फूलों का मौसम है आया'** विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। सामने दिए कूपन को चित्र के पीछे चिपकाइए। उसे **20 दिसंबर 2011** तक नंदन कार्यालय के पते पर भेजिए। परिणाम फरवरी 2012 अंक में प्रकाशित किए जाएंगे। विजेताओं को नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र भी दिए जाएंगे।

रश्मि स्वरूप जौहरी

शिकरा बाज

शिकरा बाज भारतीय उप महाद्वीप तथा हिमालय क्षेत्र में लगभग 1500 मीटर की ऊंचाई तक पाया जाता है। भारत के अलावा पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश व म्यांमार में भी यह मिलता है।

कुछ दिनों पहले हम लोग पार्क में सैर कर रहे थे कि अचानक 'चींचीं-चींची' की डरी हुई एक बेबस सी आवाज सुनाई पड़ी। सामने के पेड़ पर एक शिकरे (छोटा बाज) ने एक गिलहरी को अपने पंजों में दबोच रखा था। नुकीली चोंच से वह उस पर वार कर रहा था। कुछ ही पल में गिलहरी की चीख बंद हो गई। उसकी जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी।

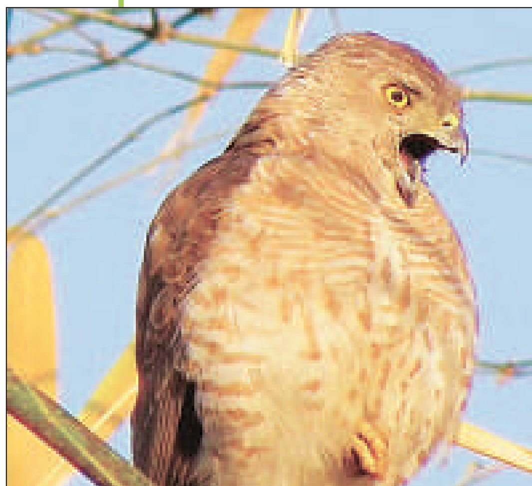
मुझे शिकरे पर बहुत गुस्सा आया, किंतु तभी खयाल आया कि दरअसल इसका तो हमें आभारी होना चाहिए, क्योंकि बाज, चील व गिद्ध आदि शिकारी पक्षी हमारे लिए बहुत लाभदायक होते हैं। हालांकि हम इनका नाम सुनकर घृणा और नफरत से मुंह बना लेते हैं, जबकि यह हानिकारक जीवों को नष्ट करके प्रकृति का संतुलन बनाए रखने में हमारी मदद करते हैं।

यदि शिकारी पक्षी गिलहरी, छिपकली, चूहों आदि को खाकर इनकी जनसंख्या को नियंत्रित न करें, तो ये जीव हमारे अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। आज इसी शिकरे की बात करते हैं, जो कुछ जीवों का दुश्मन और हमारा हितैषी है।

शिकरा बाज (ऐसिपिटर बेडियस) भारतीय उप महाद्वीप तथा हिमालय क्षेत्र में लगभग 1500 मीटर की ऊंचाई तक मिलता है। भारत के अलावा पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश तथा म्यांमार में भी यह मिलता है।

शिकरा लगभग कबूतर के आकार का होता है। इसके पंख कत्थई, पेट व गरदन धूसर तथा नीचे से सफेद रंग का होता है। जिस पर जंग जैसे रंग की भूरी आड़ी धारियां होती हैं। नर मादा से थोड़ा छोटा होता है।





इसकी पूंछ पर चौड़ी काली-तिरछी धारियां पड़ी रहती हैं। इसकी चोंच मुड़ी हुई और बहुत पैनी होती है। साथ ही इसके मुड़े हुए नाखूनों वाले मजबूत पंजे होते हैं।

यही नहीं, इस बाज की दृष्टि बड़ी तेज होती है, जिसके कारण यह पत्तों में छिपे शिकार को दूर से देख लेता है। उसके सतर्क होने से पहले ही यह उसे अपने पंजों में दबोचकर, अपनी तेज चोंच से उसका काम तमाम कर देता है। शिकरा जब एक बार किसी को पकड़ लेता है, तब उसका बचना नामुमकिन हो जाता है।

शिकरे की बोली तीखी और कर्कश होती है, जिसे सुनकर डर लगता है। इसकी उड़ान तेज होती है। ज्यादातर यह जमीन के पास ही उड़ता है। उड़ान भरने के बाद यह आसमान में ग्लाइड करता रहता है।

शिकरा बाजों को घने जंगल पसंद नहीं। इन्हें खुले हुए कम पेड़ों वाले क्षेत्र भाते हैं। आम तौर पर गांवों और खेतों के आसपास बड़े पेड़ों के कुंजों में ये अकेले या जोड़ों में रहते हैं। अकसर अपने बच्चों को पालने के लिए उनके भोजन हेतु ये घरेलू मुर्गियों को भी चट कर जाते हैं।

मार्च से जून के मध्य यह प्रजनन करते हैं। बच्चों की सुरक्षा के लिए घोंसला पेड़ों पर काफी ऊंचाई पर बनाते हैं। आम तौर पर ये पत्तियों से भरे आम आदि के पेड़ों को चुनते हैं। टहनियों, तिनकों, घास-फूंस आदि को चुनकर ये घोंसला बनाते हैं। एक बार में मादा शिकरा 3-4 अंडे देती है। इनके बच्चे भूरे और सफेद रंग के होते हैं, जिन पर हलकी सिलेटी चित्तियां पड़ी रहती हैं। बच्चों का पालन-पोषण नर और मादा मिल-जुलकर करते हैं।

बाज प्रकृति के संतुलन को बनाने में हमारी मदद करता है। यह हमारे लिए हानिकारक और अधिक जनसंख्या वाले जीवों को खत्म करके हमें बहुत लाभ पहुंचाता है। इसलिए यह पर्यावरण का रक्षक और हमारा परम मित्र है। इसलिए हमें इस पक्षी के प्रति सदैव अच्छा दृष्टिकोण रखना चाहिए।







हास्य कथा



घूरा भाग गया

घर में कदम रखने से पहले ही कल्लन को सूचना मिल गई कि घूरा भाग गया। ''घूरा भाग गया!''—कल्लन की पुतलियां फैल गईं।

''हां भई, क्या मैं झूठ बोल रहा हूं!'' रज्जब ने कहा—''बड़े भाईजान उसे ढूंढ़ने निकले हैं।''

''अरे बाप रे... ! अब क्या होगा?'' कल्लन चक्कर में फंस गया—''क्या करूं? अब्बा खाल खींच देंगे! रही-सही कसर भाईजान पूरी कर देंगे, क्योंकि घूरे को देखने की जिम्मेदारी मेरी थी।''

''तू यहां से भाग जा!''—रज्जब ने सलाह दी।

''जाऊंगा कहां? खाना-पीना क्या खंडहर वाली चुड़ैल देगी?'' कल्लन ने उदास होकर कहा—''मेरे पेट में तो अभी से चूहे कूद रहे हैं।''

''बड़े शेर बनते हो, तो पिटने से क्यों डर रहे हो?''—रज्जब बोला।

कल्लन का विद्रोही मन बेवजह पिटने को राजी न था। वह दिमाग दौड़ने लगा—'क्या करूं...क्या करूं...?' पर कुछ न सूझा।

फिलहाल वह मामला शांत होने तक जंगल की ओर भाग छूटा। वहां जंगली झरबेरियां खाईं, गूलरों का स्वाद चखा और ढेर सारा पानी पिया। ''हां, अब हो गया था पेट का हलका-फुलका इंतजाम।''—बड़बड़ाते हुए वह कटी पतंग सा इधर-उधर मंडराता रहा।

कल्लन के अब्बा सरकारी मुलाजिम थे। मकान के एक ओर घना जंगल था, तो दूसरी ओर लहलहाते खेतों का भरा-पूरा खानदान।

''कल्लन जाने कहां है?''—अम्मां ने काफी देर बाद चिंतित होकर कहा।

बड़े भाईजान भी पतली सी रस्सी हाथ में थामे, थके कदमों से लौट आए—''घूरा नहीं मिला, पता नहीं कहां है!''

''अब क्या होगा? तेरे अब्बा आते ही होंगे और फिर मेहमानों के आने का भी वक्त हो रहा है।''—अम्मां ने पसीना पोंछते हुए कहा।

तभी दूर हो रही हलचल को सुन, अम्मां ने खिड़की से बाहर झांका—''अरे! तेरे अब्बा आ रहे हैं और साथ में मेहमान भी हैं।''

यह सुनते ही भाईजान हरकत में आ गए। पलंग की चादरें ठीक कर दी गईं। गंदे कपड़े, फटी तौलिया, पोंछे का कपड़ा, अलगनी के कपड़े आदि कोठरी में बंद कर दिए गए। मुर्गियों को बेवक्त दड़बे में कैद कर दिया गया। अब्बा के आते-आते घर चकाचक हो गया। इधर मेहमान घर में आए, उधर कल्लन भी आ गया।

भाईजान और कल्लन ने मेहमानों को सलाम किया और हाथ बांधकर आदर्श मेजबान की तरह सबकी बातों में 'जी-जी' करने लगे। इससे पहले आम बातचीत का सिलसिला शुरू होता, अब्बा ने आंखों के एक खास कोण से उन्हें जाने का इशारा कर दिया। वरना कल्लन का भी पूरा परिचय देना पड़ता कि यह मेरा बेटा है। और जब मेहमान उसके चेहरे पर अपनी निगाहों का फोकस करते, तो देखते—हाल ही में लाए गए उसके जूतों की रोनी सूरत, खेल-कूद में मिट्टी से सना जिस्म, आंखों तक लहराते बेतरतीब भूरे बाल।

अब्बा ने घर में घुसते ही सारा मजमून भांप लिया था। आते समय उनकी निगाहों ने देख लिया कि अशोक के पेड़ से बंधा घूरा गायब है।

अब्बा की निगाहों के पैने वार से आहत भाईजान को गुस्सा कहीं तो उतारना ही था। सो कल्लन को घुड़की देना शुरू कर दिया। अब कल्लन ने कोई घूरे को छिपा तो रखा नहीं था, जो इतनी जलालत के बाद भी उन्हें न बताता!

बहरहाल, अपनी जिम्मेदारी समझते हुए कल्लन घूरा को खोजने निकल पड़ा। इस समय उसके साथ रज्जब तो था ही, पुत्तन भी था। उन्होंने घर के पिछवाड़े देखा, चौपाल छान मारा, ताल-किनारे की हरी घास को टटोला, दूर खंडहरों में

तलाश किया, खलिहान के कोने-कोने पर नजरें दौड़ाईं, चारा काटने वाली मशीन के आसपास देखा, पर घूरा नहीं मिला।

''वह रहा!''—तभी पुत्तन ने उसे देख लिया।

गोविंद की मड़ैया पर गठे बदन का गबरू जवान खड़ा था—सीना ताने, कत्थई-सुर्ख लीची के छिलके जैसी सख्त कलगी, पीली टांगें, नुकीले पंजे, गोल शरारती आंखें, सुनहरे-कत्थई-भूरे-लाल-हरे-रेशमी पंख...! उसने गरदन उठाकर जोर की बांग लगाई—''कुकड़ू-कूं...!''

''आ रहा हूं बच्चू, तुझे ही ढूंढ़ रहा था!''—कल्लन चिल्लाया।

''यह मुर्गा कौन लाया रे, ऐसा मुहल्ले में पहले कभी नहीं देखा!''—पुत्तन हैरान था।

''असली देसी है!'' यह कहते हुए कल्लन का सीना चौड़ा हो गया—''अब्बा कल ही इसे लाए हैं मेहमानों के लिए।''

कल्लन ने बात पूरी करके नजरें दौड़ाईं, तो दिल धक सा हो गया। घूरा गायब था। आगे बढ़कर देखा, तो घूरा मड़ैया के उस कोने पर था।

कल्लन ने अचानक उस पर छलांग लगाई, तो मड़ैया का कोना भरभराकर नीचे आ गिरा। साथ में कल्लन भी ढेर हो गया। पर घूरा? वह तो अचानक हुए हमले से बिना कुछ समझे भाग खड़ा हुआ—''कुटाक...कुट...कुट...!''

कल्लन ने फिर से घेराबंदी की। इस बार मोर्चे पर पुत्तन और रज्जब भी थे। घूरा डर के मारे दीवार के पीछे छिप गया। एक ओर पुत्तन, तो दूसरी ओर रज्जब। बीच में था कल्लन। पीछे थी ऊंची दीवार। घूरा हड़बड़ाकर भागा। तीनों ने उसे धर दबोचा। घूरा दम घुटी आवाज से फड़फड़ाया चिल्लाया—''कों...कों...कों...!'' फिर इतनी जोर से उछला कि रज्जब के सीने पर पंजे मारता, पुत्तन की खोपड़ी को रौंदता, भाग छूटा।

फिर तो घूरा आगे-आगे और कल्लन पीछे-पीछे। घूरा भागते-भागते गेहूं की फसल में चला गया। उसकी लंबी-लंबी टांगें सूखे गेहूं के पौधों में उलझ रही थीं, इसलिए उसकी रफ्तार पहले से धीमी हो गई थी। वह ऐसे उछल-उछलकर चल रहा था, जैसे गाटर पड़े हुए टायर वाली साइकिल।

इससे पहले कि कल्लन उसके पास पहुंचता, वह अरहर के खेत में घुस गया। यहां उसकी रफ्तार रॉकेट सी हो गई। उसे ऐसे में पकड़ना मुश्किल था। कल्लन ने भी दिमाग लगाया। उसने नमस्ते करने वाले ढंग से दोनों हाथ मिलाए और सामने की ओर तीर-सा बनाकर दौड़ चला। अरहर हाथों से टकराकर दूर हटती जा रही थी।

घूरा हांफ चुका था। कल्लन अरहर के खेतों में बैठकर चिल्लाया—''वह रहा!''

अचानक उसे लगा, जैसे उसकी पीठ में कई सूइयां एक साथ चुभ गईं। बर्र का छत्ता टूट गया था। कल्लन कराह उठा। इस बार उसने ठान लिया था कि अब घूरा उससे बचकर नहीं जाएगा। हांका लगाया गया, तो घूरा डरकर जगेसर बाबा के बैल-बाड़े में जा छिपा। बैलों ने नए आगंतुक को देखा, तो नथुने फड़काए—''हुंस-हुंस!''

घूरा दुबक गया एक कोने में। कल्लन अपने साथियों के साथ आ पहुंचा वहां।

''तो यहां है शैतान!''—उसने घेराबंदी की।

घूरा पहले तो दुबका और जैसे ही कल्लन ने उसे पकड़ना चाहा कि वह भागा...वह भागा...! उछलते-फांदते रज्जब के दोनों पैरों के बीच से



डा. मोहम्मद साजिद खान

कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी

ऐसा निकला कि वह हड़बड़ी में गिरा—'धड़ाम!'

अब तक कुछ भी न समझ सका। गादर बैल हुंकार कर यों उछला कि पूरा खूंटा ही उखड़ गया। बैल-बाड़े मे तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। बैल भड़क गए। अपने नथुने फड़काने लगे। उधर जगेसर बाबा लाठी लेकर दौड़ पड़े।

घूरा अब तक बुरी तरह हांफ चुका था। प्यास से चोंच खुल गई थी। गरदन की झिल्ली धौंकनी की तरह चल रही थी। हिम्मत टूट चुकी थी। लग रहा था, इस लुका-छिपी से हार मान गया हो।

दिन के तीन बज रहे थे। अब्बा बेचैन थे। वह बातें तो मेहमानों से कर रहे थे, पर कान बाहर हो रही हर आहट की तसवीर बना रहे थे। सारे मेहमान खाना खा चुके थे। दाल-सब्जी खिलाकर अब्बा मन ही मन शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे।

तभी मेहमानों के जाने का समय हो गया। अब्बा ने जैसे ही बाहर का दरवाजा खोला कि छाती में दम भरता कल्लन आ कूदा—''अब्बा, घूरा मिल गया!''

इस अचानक हुए हमले से अब्बा हड़बड़ा गए। मेहमान भी कुछ समझ न सके। वे कभी अब्बा के खिसियाए से चेहरे को देखते, तो कभी धूल-मिट्टी से सने, पसीने से नहाए, भूत जैसे दिख रहे कल्लन को या फिर उसके हाथों में दोबारा ताकत बटोर रहे घूरे को। इससे पहले कि कोई कुछ कहता, पूरी पकड़ ढीली पाकर भूरा भाग छूटा—''कुडुक...कुड़...कुड़...!''

''अरे-अरे, ठहर! भागकर कहां जाएगा बच्चू?'' एक बार फिर से घूरा आगे-आगे और कल्लन रज्जब और पुत्तन उसके पीछे-पीछे भाग खड़े हुए। ●

गोवा

क्रिसमस से लेकर नए साल के आगमन तक गोवा पूरी तरह पर्यटकों से अटा रहता है। जो यहां के कार्निवल में एक बार शामिल हो गया, वह हर साल यहां आना चाहता है।

अनिल जायसवाल



अगर महीना दिसंबर का हो और भारत में कोई कहीं घूमने का प्रोग्राम बना रहा हो, तो सबसे पहले खयाल आता है गोवा का। पश्चिमी सभ्यता से जुड़ाव के साथ-साथ ठेठ भारतीय बेलागपन इसे पर्यटकों की पहली पसंद बनाते हैं। क्रिसमस से लेकर नए साल के आगमन तक गोवा पूरी तरह पर्यटकों से अटा रहता है। जो यहां के कार्निवल में एक बार शामिल हो गया, वह हर साल यहां आना चाहता है।

गोवा पूरी तरह समुद्री इलाका है। इसके एक ओर केवल समुद्र है व दूसरी तरफ महाराष्ट्र और कर्नाटक हैं। 1961 में आजाद होने से पहले तक गोवा पर पुर्तगाल का शासन रहा है। अतः यहां अनेक खूबसूरत चर्च हैं। इनके कारण इसे चर्चों की नगरी भी कह सकते हैं। 'बासीलिका ऑफ बॉम जीसस', 'सी कैथेडरल', 'चर्च ऑफ सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी', 'सेंट केटजन', 'चर्च ऑफ अॅवर लेडी रेसिरी', 'नन्नरी ऑफ सांता मोनिका', 'चर्च ऑफ सेंट अगस्टीन' के अवशेष आदि न जाने कितने चर्च गोवा के आकर्षण हैं। आप घूमते-घूमते थक जाएंगे, पर चर्चों की



गिनती शायद खत्म नहीं होगी।

गोवा की राजधानी है पणजी। वास्को डिगामा यहां का सबसे बड़ा शहर है। इसके अलावा गोवा के टूर को अगर दो भागों में बांटकर चलें, तो घूमने का मजा बढ़ जाता है। वहां का साइट सीइंग टूर दो दिनों में पूरा होता है। एक दिन दक्षिणी गोवा घूमिए, तो दूसरे दिन उत्तरी गोवा। अगला दिन चाहें, तो आप फ्री रखकर अपने मनपसंद स्थान पर मनचाहा वक्त बिता सकते हैं।

नॉर्थ गोवा टूर

गोवा का उत्तरी हिस्सा बेहद खूबसूरत है। इस हिस्से में कई प्रसिद्ध बीच हैं, तो कई किले भी हैं। सबको घूमने में बहुत समय लगता है। अतः यहां कुछ प्रसिद्ध स्थानों के बारे में बता रहे हैं।

कोको बीच : गोवा के सबसे खूबसूरत बीचों में से एक बीच है कोको बीच। इसके एक तरफ समुद्र दिखता है, तो दूसरी तरफ ऐतिहासिक 'मोगोस किला'। यहां के वाटर स्पोर्ट्स आप कभी भूल नहीं पाएंगे।

फोर्ट अगूडा : गोवा का प्रसिद्ध और समुद्र के किनारे बसा किला। इस किले से पुर्तगाली गोवा के तटों पर नजर रखते थे। करीब चार सौ साल पहले बना यह किला फिल्मों की शूटिंग के लिए पसंदीदा स्थान है।

मायेम लेक : राजधानी पणजी से 35 किलोमीटर दूर मायेम लेक आपको समुद्र से हटकर कुछ अलग दिखाता है। यहां पर बोटिंग के साथ-साथ क्रूज का मजा भी लिया जा सकता है।

पोंबूरपा झरना : गोवा का यह सबसे प्रसिद्ध झरना है। स्थानीय के साथ-साथ विदेशी सैलानी भी इस झरने में खूब नहाते हैं। कहते हैं कि इसका पानी कई रोगों को दूर कर देता है।

कलंगूट बीच : यह गोवा का सबसे चर्चित बीच है। वाटर स्पोर्ट्स के शौकीन तो यहां आकर मस्त हो जाते हैं। सबसे भीडभाड़ वाले इस बीच पर वॉटर बाइकिंग, पैरा सेलिंग, वॉटर स्कीइंग आदि के लिए यह उपयुक्त जगह है।

साउथ गोवा टूर

यह टूर ज्यादा मजेदार है। इस टूर पर पणजी के साथ-साथ विश्व धरोहर में शामिल 'वासिलीका ऑफ बॉम जीजस चर्च' भी शामिल है।

कोलवा बीच : कोलवा बीच का सबसे बड़ा आकर्षण है यहां की शांति। यहां के शांत वातावरण में लहरों के बीच समय बिताना एक अद्भुत आनंद देता है। यह पणजी से करीब 40 किलोमीटर दूर है। यहां ठहरने के लिए एयरकंडीशंड रूम के अलावा कॉटेज भी उपलब्ध हैं।

दोनापोंला बीच : यह बीच वैसे तो नॉर्थ गोवा में है, पर इसे साउथ गोवा टूर में रखा गया है। यह बीच अपनी खूबसूरती के साथ व्यावसायिक रूप के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। यहां फिल्मों की खूब शूटिंग होती है। हाल ही में आई फिल्म 'सिंघम' की भी यहां शूटिंग हुई थी। यह वाटर स्पोर्ट्स के लिए हॉट डेस्टिनेशन है।

मीरामार बीच : पणजी से केवल तीन किलोमीटर दूर यह बीच मांडवी नदी और अरब सागर से जुड़ा है। यहां से 'अगूडा फोर्ट' देखने का अलग आनंद है। इसे देखकर मुंबई के चौपाटी की याद आती है।

वासिलिका ऑफ बोम जीसस चर्च : ओल्ड गोवा स्थित भारत का यह प्रसिद्ध चर्च विश्व विरासत की लिस्ट में शामिल है। यह चर्च सन 1605 में बनकर तैयार हुआ। यहां संत फ्रांसिस जेवियर का शरीर आज तक सुरक्षित रखा हुआ



है। हर दस साल बाद उनके शरीर को लोगों के दर्शनार्थ रखा जाता है।

श्रीशांता दुर्गा मंदिर : पणजी से 33 किलमीटर दूर स्थित यह मंदिर मां दुर्गा को समर्पित है। कहते हैं, शिव और विष्णु के बीच युद्ध को रोकने हेतु मां जगदंबा ने यह अवतार लेकर उनके बीच सुलह करवाई थी।

श्री मंगेश मंदिर : प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर के पुरखों द्वारा स्थापित यह शिव मंदिर गोवा आने वालों के लिए हॉट स्पॉट है। मंदिर बहुत बड़ा नहीं है, पर यहां का शांत वातावरण मन को मोह लेता है।

इस टूर की समाप्ति के समय आप गोवा के प्रसिद्ध क्रूज की सैर का आनंद ले सकते हैं। क्रूज में गोवा की संस्कृति को देखते हुए नदी से समुद्र तक जाकर डूबते सूरज को देखने का आनंद आप जिंदगी भर नहीं भुला पाएंगे। गोवा टूर बनाते समय आप इसमें मुंबई व साईं दर्शन के लिए शिर्डी मरगांव को भी जोड़ सकते हैं।

कैसे जाएं : गोवा जाने के लिए मुख्य स्टेशन मरगांव या वास्को डि गामा है। दिल्ली और मुंबई से इसके लिए नियमित ट्रेनें हैं। यहां के डेबोलिन हवाई अड्डा से भारत के साथ-साथ विश्व के कई स्थानों के लिए नियमित उड़ानें हैं। आप बाई रोड भी गोवा में जा सकते हैं।

कब जाएं : गोवा में बहुत ठंड नहीं पड़ती। दिसंबर और जनवरी यहां का हॉटेस्ट सीजन है। इसके अलावा अगस्त-सितंबर छोड़कर कभी भी आप गोवा जा सकते हैं।

सावधानियां

समुद्र का किनारा जितना मनोहारी होता है, उतना ही खतरनाक भी। समुद्र स्नान के लिए वहां के इंस्ट्रक्टर के निर्देशों का अवश्य पालन करें। ज्यादा गहराई में न जाएं। यहां के बीच पर लहरों में बहुत करंट होता है। अतः सावधानी बरतें। सन बर्न से बचने के लिए सन क्रीम का जरूर प्रयोग करें। सन ग्लासेज हमेशा साथ रखें।

क्या खाएं

गोवा सी-फूड शौकीनों के लिए स्वर्ग है। अगर आप मछली के शौकीन हैं, तो आपको कोई परेशानी नहीं है। वैसे शाकाहारी खाना भी यहां आसानी से उपलब्ध है। गोवा का अपना गोवाइन खाना खाने के साथ नारियल पानी का अवश्य स्वाद लें। गोवा के काजू बहुत मशहूर हैं। वहां के खास केक भी आपको लुभाएंगे।



विमल

1

सूची पूरी करें

पांच बच्चे जैकब, देव, अनामिका, साजन और अमरजीत बड़े दिन की छुट्टियों में गोवा, हरिद्वार, उदयपुर, जैसलमेर और शिमला के पर्यटन स्थल देखने गए। उनकी पसंद हैं–पहाड़, झील, रेगिस्तान, तीर्थ स्थल और समुद्र तट। पांचों इन मोहल्लों में रहते हैं–श्रीनगर, प्रीत विहार, मीत नगर, अशोक विहार और साकेत। उनकी सूची बनाई गई थी, पर वह अधूरी रह गई। आप नीचे दिए गए संकेतों के आधार पर उनकी सूची पूरी करें।

संकेत

1. जैकब पर्यटन के लिए गोवा गया। वह प्रीत विहार में नहीं रहता है।
2. जिसका नाम सबसे छोटा है, उसके मोहल्ले का नाम सबसे बड़ा है। उसे तीर्थ स्थल पसंद हैं।
3. श्रीनगर में रहने वाले को पहाड़ पसंद हैं।
4. साजन जैसलमेर घूमने गया। उसे समुद्र तट पसंद नहीं हैं।
5. जिसका नाम सबसे बड़ा है, वह शिमला गया है। वह मीत नगर में नहीं रहता है।
6. मीत नगर में रहने वाले को झील पसंद हैं। वह बच्चा हरिद्वार नहीं गया।

नाम	मोहल्ला	पर्यटन स्थल	पसंद
जैकब		गोवा	
	मीत नगर		झील
साजन		जैसलमेर	
	श्रीनगर		पहाड़





खोजो-जानो

2

इस वर्ग पहेली में भारत में सबसे बड़ा, अधिक, लंबा और ऊंची चीजों के रिकॉर्ड हैं। जिनका जिनसे संबंध हो, उन्हें मिलाइए।

स	ब	से	ब	ड़ा	स	म्मा	न	ब	ड़ा	गु	फा	मं	दि	र
भा	घ	नी	आ	बा	दी	वा	ला	श	ह	र			इं	ए
र	मुं	अ	धि	क	व	र्षा	वा	ला	क्षे	त्र			दि	लो
त	ब	चे	लं	बी	स	ड़	क	ब	ड़ी	न	ह	र	रा	रा
र	ई	रा	ग्रां	दि	ल्ली	की	जा	मा	म	स	जि	द	गां	ब
त्न		पुं	ट	ब	ब	बु	ब	ड़ा	द्वा	र	गं	गा	धी	ड़ा
ऊं	ब	जी	ट्रं	ड़ी	ड़ा	लं	प		अ		लं		न	प
चा	ड़ा	ऊं	क	म	सं	द	र	म	म		बी		ह	शु
ह	रे	चा	रो	स	ग्र	द	म	हा	र	सो	न	पु	र	मे
वा	गि	डै	ड	जि	हा	र	वी	त्मा	ना		दी		दे	ला
ई	स्था	म		द	ल	वा	र	गां	थ				व	ही
अ	न	भा	ख	ड़ा	य	जा	च	धी	ब	ड़ी	गु	फा	ता	रा
ड्डा	था	र	को	ल	का	ता	क्र	से		ऊं	ची	झी	ल	कु
ले	ह	के२	से	ना	प	द	क	तु		लं	बा	डै	म	ड
ऊं	चा	प	र्व	त	शि	ख	र	ब	ड़ा	रि	व	र	ब्रि	ज

3

सुडोकू

3		4		8		9		5
	2		4		9		6	
9		5		3		2		1
	1		3		4		2	
6		8		9		5		4
	7		5		8		9	
2		6		7		1		9
	9		6		5		3	
7		3		4		6		2

एक बड़े वर्ग में 9 मध्यम वर्ग हैं। इन 9 मध्यम वर्गों को फिर 9-9 छोटे वर्गों में बांटा गया है, जिनमें रंगीन वर्गों में 1 से लेकर 9 तक कुछ संख्याएं लिखी हैं, पर सफेद वर्ग खाली हैं। आपको हर मध्यम वर्ग के सफेद वर्गों में 1 से लेकर 9 तक की वे छूटी हुई संख्याएं लिखनी हैं, जो रंगीन वर्गों में न हों। इसके अलावा आपको यह भी चेक करना है कि सबसे बड़े वर्ग की हर लाइन में बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे 1 से लेकर 9 तक ही संख्याएं रहें। इस प्रकार आपको कुल 27 बार यह चेक करना होगा।

सभी उत्तर इसी अंक में



कैलाश नारायन श्रीवास्तव
नौकरी से अवकाश के बाद अध्यापन के साथ-साथ लेखन में भी सक्रिय

चिड़िया का घोंसला

एक राजा के महल की छत पर एक चिड़िया अपना घोंसला बनाने लगी। चिड़िया दिन भर तिनके चुनकर लाती और घोंसला बनाती जाती। उसकी दिन भर की 'चूं चूं' से राजा की दिन की नींद खराब होती। परेशान राजा ने अपने नौकरों को आदेश देकर चिड़िया का घोंसला हटवा दिया। चिड़िया ने इस बात से नाराज होकर राजा को सबक सिखाने की ठान ली। चिड़िया क्रोध में 'चूं-चूं, चें-चें' करती हुई उड़ गई और जंगल में जा पहुंची।

चिड़िया को चीखते-चिल्लाते देख, दो चूहों ने उसकी परेशानी जाननी चाही। सारी बात सुनकर चूहे बोले–''हम तुम्हारी मदद करेंगे। जैसे राजा ने तुम्हारा घोंसला हटाया है, वैसे हम उसके महल की नींव को नीचे से हिलाकर पूरा महल गिरा देंगे।''

यह सुझाव चिड़िया को बहुत अच्छा लगा और उसने राजा के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। उसने जंगल की ढेर सारी सींकें जमा करके एक गाड़ी बनाई। उस गाड़ी को चूहे आगे लगकर खींचने लगे। चिड़िया उस पर बैठ गई। रास्ते में उसे मधुमक्खियां मिलीं। उन्होंने पूछा–''चिड़ो रानी, कहां जा रही हो?''

चिड़िया बोली–''सींकों की गाड़ियां, रे गाड़ियां, रे गाड़ियां, दो दंत लगे जाय, चिड़ो बड़े राजा से लड़ाई लड़ने जाय।''

मधुमक्खियां बोलीं–''हम भी चलेंगे तुम्हारे साथ।''

चिड़िया बोली–''हां-हां, चलो!'' बस ढेर सारी मधुमक्खियां उसकी गाड़ी में बैठ गईं।

गाड़ी आगे बढ़ी, तो रास्ते में चींटियां, चींटे, सांप, कुत्ते, घोड़े, ऊंट, हाथी सभी मिलते गए। सबने उससे पूछा। चिड़िया सबको घोंसला गिराने की बात बताती और फिर बोलती–''मैं घमंडी राजा का महल गिराने जा रही हूं।'' बस, जंगल के सभी जानवर उसके साथ होते गए। इससे चिड़िया का हौसला भी बढ़ गया।

चिड़िया सबको साथ लेकर आगे बढ़ती गई। जब जंगल खत्म हो गया और राजा का महल आ गया, तो चिड़िया ने तोते को अपना दूत बनाकर राजा के पास भेजा। तोते ने राजा को धमकाते हुए कहा–''जैसे तुमने चिड़िया का घोंसला गिराया है, वैसे ही अब तुम्हारा महल भी गिराया जाएगा। तैयार हो जाओ सामना करने के लिए।''

राजा हंसने लगा और तोते को पत्थर मारकर उड़ा दिया। बस, अब तो राजा के महल पर बहुत सारे कौवे-चील आदि उड़ने लगे। अब राजा की समझ में आया कि मामला क्या है! राजा ने भी अपने सिपाहियों को आज्ञा दे दी कि इन सबको मार डालो।

राजा की फौज अभी आगे बढ़ भी नहीं पाई थी कि उस पर मधुमक्खियों ने जोरदार हमला कर दिया, साथ में चींटे, चींटी, सांप, सभी ने राजा की फौज को घेर लिया। कुत्ते बुरी तरह काटने लगे। हाथी चिंघाड़ने लगे। इस जोरदार हमले से राजा की फौज घबराकर भाग खड़ी हुई। अब राजा ने देखा कि उसकी फौज तो हार गई है, तो राजा को अपनी हार माननी पड़ी।

राजा ने सफेद झंडा दिखाकर शांति की दुहाई दी। चिड़िया ने लड़ाई रुकवा दी। राजा को बंदी बना लिया गया। राजा डर के मारे कांप रहा था। चिड़िया से माफी मांगने लगा। बोला–''मुझसे गलती हो गई। आप जो कहेंगी, वहीं करूंगा।''

चिड़िया बोली–''ठीक है, पहले अपनी छत पर मेरा घोंसला रखवाओ।''

राजा के सिपाहियों ने घोंसला वापस छत पर रख दिया।

फिर चिड़िया बोली–''मेरे सभी संगी-साथी जो मेरे साथ लड़ाई में शामिल हुए हैं, वे सब अब यहीं रहेंगे।''

राज बोला–''जी, ठीक है।''

चारों तरफ चिड़िया रानी की जय-जयकार होने लगी। राजा ने पक्षियों के लिए फलों वाले बाग लगवा दिए। घोड़ों के लिए घुड़साल, हाथियों के लिए बाड़ा आदि बनवा दिए। कुत्तों के साथ सभी जानवरों ने अपने लिए जगह बना ली।

बस, तभी से सभी जीव-जंतु शहर व गांवों में बसने लगे।



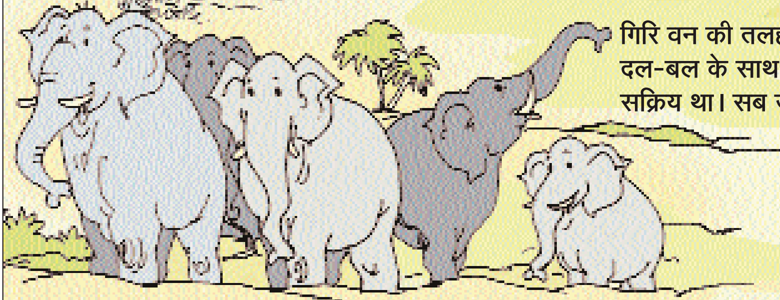


घमंड हुआ चूर

कथा : **विमल चतुर्वेदी** चित्रांकन : **अतुल वर्धन**



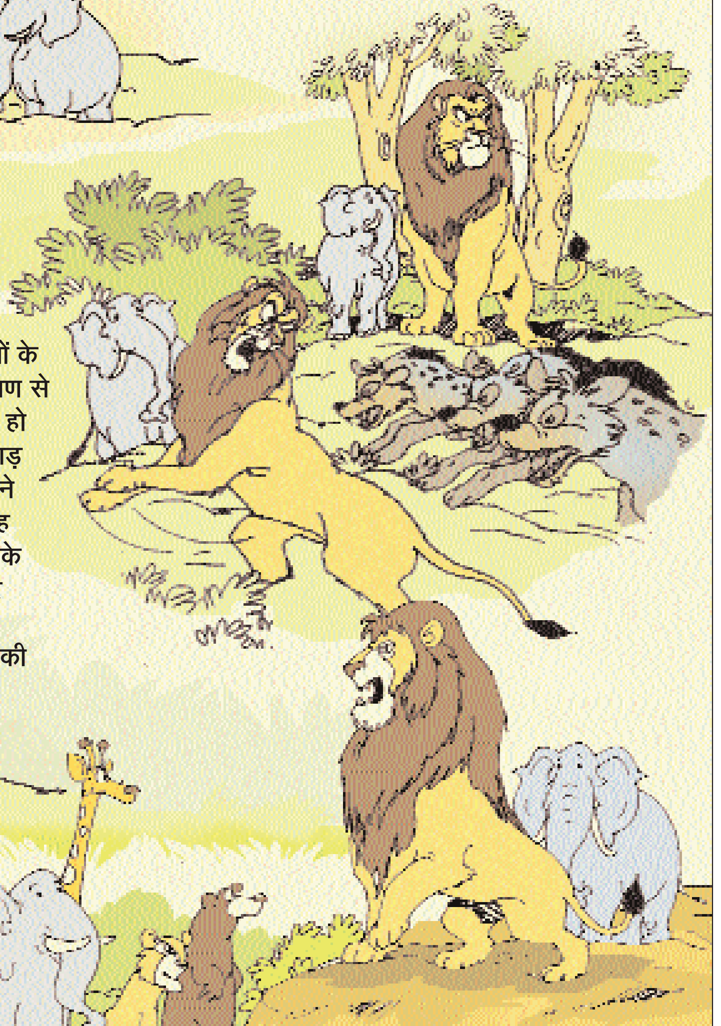
गिरि वन में केसरी सिंह का राज था। उसकी सलाहकार नैंसी नामक चालाक लोमड़ी थी, जिसे अपनी बुद्धिमानी पर बहुत घमंड था।



गिरि वन की तलहटी में एक सुंदर घाटी थी, जहां जंबो हाथी अपने दल-बल के साथ रहता था। वहां भूरा नामक लकड़बग्घे का गिरोह सक्रिय था। सब जानवर वहां दिन छिपने के बाद जाने से डरते थे।

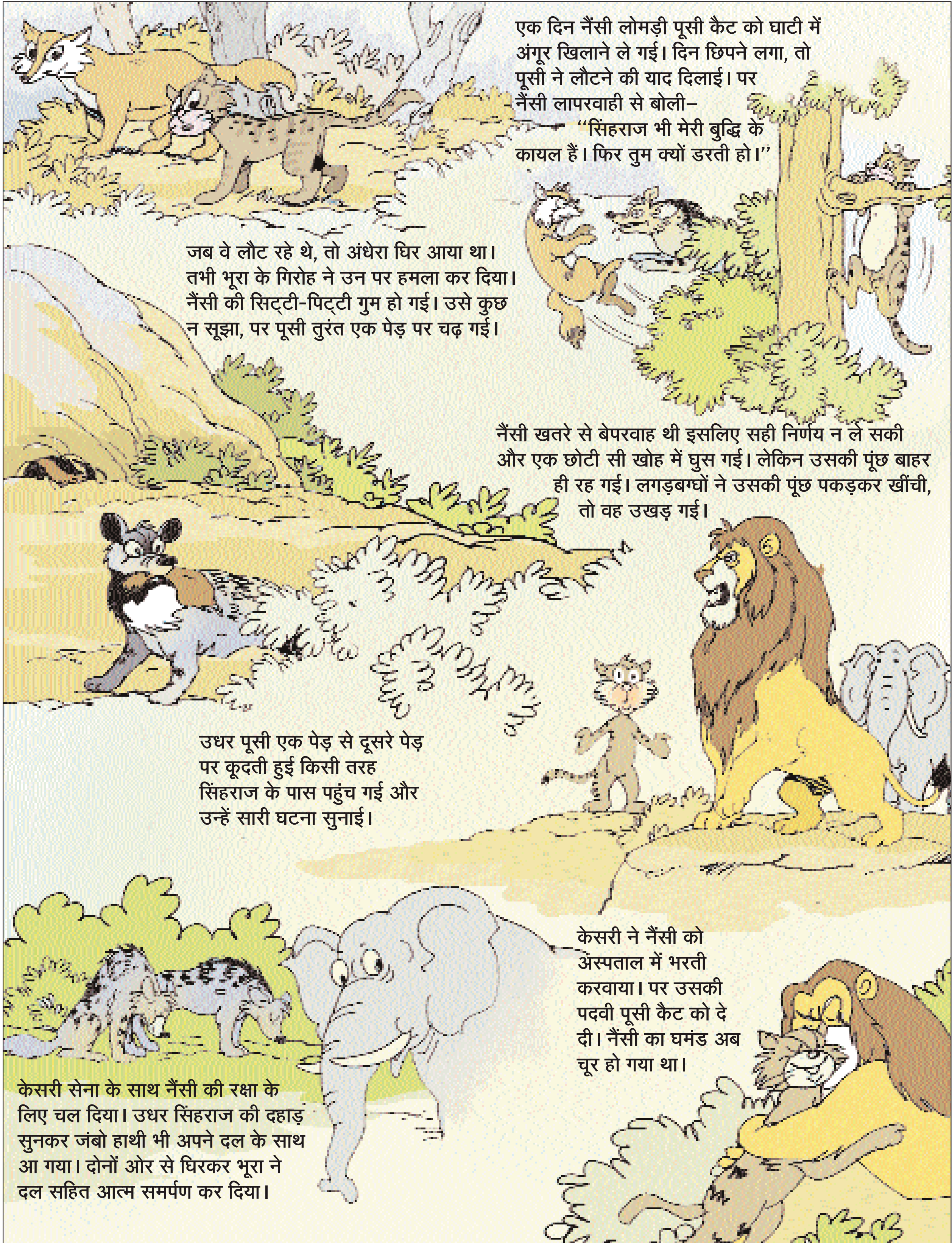
एक रात की बात। सिंहराज केसरी जंबो हाथी से मिलकर वहां से लौट रहे थे कि भूरा ने अपने गिरोह के साथ सिंहराज पर हमला कर दिया।





इतने लकड़बग्घों के एकसाथ आक्रमण से सिंहराज घायल हो गए। उनकी दहाड़ दूर से भी जंबो ने सुन ली। तब वह अपने दल-बल के साथ आया और लकड़बग्घों को भगाकर केसरी की जान बचाई।

तब से केसरी ने फरमान निकाला कि कोई भी जानवर दिन छिपने के बाद घाटी में नहीं जाएगा।


एक दिन नैंसी लोमड़ी पूसी कैट को घाटी में अंगूर खिलाने ले गई। दिन छिपने लगा, तो पूसी ने लौटने की याद दिलाई। पर नैंसी लापरवाही से बोली–
"सिंहराज भी मेरी बुद्धि के कायल हैं। फिर तुम क्यों डरती हो।"
जब वे लौट रहे थे, तो अंधेरा घिर आया था। तभी भूरा के गिरोह ने उन पर हमला कर दिया। नैंसी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसे कुछ न सूझा, पर पूसी तुरंत एक पेड़ पर चढ़ गई।
नैंसी खतरे से बेपरवाह थी इसलिए सही निर्णय न ले सकी और एक छोटी सी खोह में घुस गई। लेकिन उसकी पूंछ बाहर ही रह गई। लगड़बग्घों ने उसकी पूंछ पकड़कर खींची, तो वह उखड़ गई।
उधर पूसी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदती हुई किसी तरह सिंहराज के पास पहुंच गई और उन्हें सारी घटना सुनाई।
केसरी सेना के साथ नैंसी की रक्षा के लिए चल दिया। उधर सिंहराज की दहाड़ सुनकर जंबो हाथी भी अपने दल के साथ आ गया। दोनों ओर से घिरकर भूरा ने दल सहित आत्म समर्पण कर दिया।
केसरी ने नैंसी को अस्पताल में भरती करवाया। पर उसकी पदवी पूसी कैट को दे दी। नैंसी का घमंड अब चूर हो गया था।



कहानी लिखो परिणाम : 335



सपना या हकीकत



दिसंबर का महीना बीत रहा था। बुखार ने मैक के शरीर को तोड़ सा दिया था। उसके पिता भेड़ चराते थे और मां घरेलू महिला थीं। उसके बीमार होने के कारण उसकी प्यारी चैरी और मैरी भेड़ और माऊ बिल्ली हमेशा उसके पास मुंह लटकाए बैठी रहती थीं।

चारों ओर बर्फ पड़ी थी। ठंडी सर्द हवाएं चल रही थीं, जिनसे मैक का शरीर कांप रहा था। उसने यीशु का नाम लिया और आंखें बंद कर लीं। तभी उसे एक तेज रोशनी दिखाई दी। आसमान में प्रभु यीशु प्रकट हुए थे। यह रोशनी उन्हीं से प्रकट हुई थी। रोशनी धीरे-धीरे बढ़ती चली गई।

मैक ने देखा–दो रेंडियर्स की स्लेज पर सांता क्लॉज बहुत से गिफ्ट लिए चले आ रहे हैं। उनके साथ कुछ परियां भी उड़ती हुई साथ आ रही हैं। दो परियां सांता क्लॉज की गाड़ी में बैठी गिफ्ट बांटने में उनकी मदद कर रही हैं।

अचानक मैक को याद आया–'अरे, आज तो क्रिसमस है!' वह झटपट बिस्तर से उठकर बाहर आया, तो देखकर दंग रह गया। उसके घर के बाहर एक सुंदर सा क्रिसमस ट्री लगा था, जिस पर रंग-बिरंगे गुब्बारे लगे हुए थे।

एकाएक सांता क्लॉज की गाड़ी मैक के घर के सामने आकर रुकी। सांता क्लॉज ने मैक के सिर पर हाथ फेरकर कहा–''तुम्हारा क्रिसमस ट्री सबसे अच्छा है। तुम बहुत अच्छे बच्चे हो। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?''

मैक ने अपनी डबडबाई आंखों से अपने बीमार शरीर को देखा। सांता क्लॉज ने अपनी जादुई छड़ी मैक के ऊपर घुमाई और उसे बहुत सारे उपहार दिए। फिर एकाएक वह गायब हो गए।

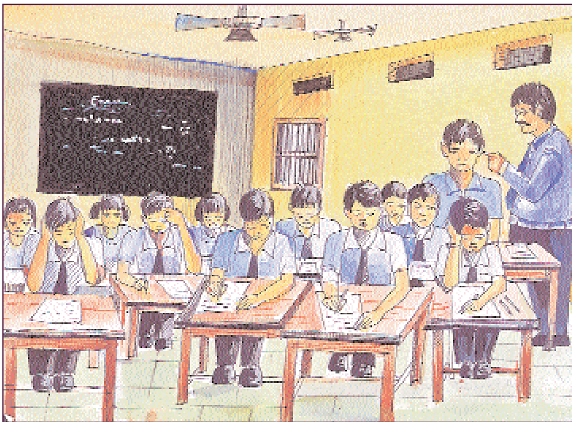
उन्हें गायब देखकर मैक तुरंत उठा, तो उसकी मां ने पकड़ लिया। इतनी रात को कहां जा रहे हो? मैक ने देखा–उसके बिस्तर के पास मां, पिता जी, चैरी व मैरी भेड़ और माऊ बिल्ली खड़ी हैं। मैक समझ गया कि उसने सपना देखा था। लेकिन जो उपहार सांता क्लॉज ने उसे दिए थे, वे सब वहां रखे थे। फिर वह भागकर बाहर गया, तो पाया घर के बाहर भी वही क्रिसमस ट्री लगा हुआ है।

मैक हैरान था। अब वह बिल्कुल ठीक हो गया था। उसका यह क्रिसमस सचमुच बिल्कुल अनोखा था। पर वह सपना था या हकीकत, वह कभी जान न पाया।

अदिति तिवारी
डीपीएस, एनटीपीसी, जामनीपाली, कोरबा

कहानी लिखो 337

नीचे दिए गए चित्र के आधार पर
एक कहानी लिखिए।



रोरिक पारिजातम त्रिपाठी, जवाहर नवोदय विद्यालय, हदगढ़

'कहानी लिखो' और 'कविता पूरी करो' प्रतियोगिताओं में विजेताओं को 'नंदन' की ओर से पुरस्कार दिए जाएंगे। प्रमाण-पत्र भी मिलेंगे।
आप अपनी रचना दिए गए कूपन के साथ भरकर 20 दिसंबर 2011 तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दें। परिणाम फरवरी 2012 अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।
'नंदन' में आपको कौन से कॉलम पसंद हैं और अपनी प्रिय पत्रिका में आप और क्या पढ़ना चाहते हैं, यह भी आप हमें अवश्य लिखकर भेजिए।

हिंदी में नाम...आयु.........
अंग्रेजी में नाम..
पिता का नाम...
पता...
....
राज्य.................................पिनकोड.....................
फोन.......................................कक्षा.....................
स्कूल का नाम..
....स्थान.........................



जादुई पंख

रात में ठंड बहुत पड़ रही थी। एरोन की दादी ने उसे बाइबिल और ईसा मसीह की कहानियां सुनाईं। कहानियां सुनते-सुनते उसे नींद के झोंखे आने लगे।

अचानक एरोन को एक आवाज सुनाई दी। एरोन ने देखा, सांता क्लॉज एरोन के दरवाजे पर खड़े हैं। वह उसे एक परी लोक में ले गए। सांता क्लॉज दो हिरनों की गाड़ी में बर्फ पर सैर कर रहे थे। गिफ्टों से भरी गाड़ी में एक परी बैठी थी और कुछ उड़ती हुई पीछे आ रही थीं। एरोन के भी जादुई पंख निकल आए थे और वह भी सांता क्लॉज के साथ गाड़ी में बैठा सैर कर रहा था।

तभी उन्हें आसमान में ईसा मसीह के साक्षात दर्शन हुए। उसके बाद वे एक चर्च में गए। चर्च इतना सुंदर सजा था, मानो प्रकृति ने वहां सारे रंग बिखेर दिए हों। चर्च में बहुत से लोग आए हुए थे। वहां एक बहुत सुंदर क्रिसमस ट्री सजा हुआ था। उस पर रंग-बिरंगे गुब्बारे लगे हुए थे।

चर्च में प्रार्थना शुरू हुई। उसके बाद फादर ने कहा–''प्रभु यीशु का सच्चा भक्त वह है, जो दूसरों के दुःख में काम आए। अगर तुम्हारा पड़ोसी भूखा है, तो तुम कैसे खाना खा सकते हो। अगर आपके पास एक रोटी है, तो आपको चाहिए कि अपनी आधी रोटी अपने भूखे पड़ोसी को दें और आधी खुद खाएं। आज क्रिसमस है, आज से ही आप यह प्रण लें।'' एरोन पर फादर की बातों का बड़ा प्रभाव पड़ा।

तभी एरोन को लगा, जैसे उसे कोई झकझोर रहा हो। आंखें खुलीं, तो दादी उसे जगा रही थीं। दादी बोलीं–''जल्दी तैयार हो जाओ! जल्दी तैयार हो जाओ। आज क्रिसमस है।''

''क्या दादी, मैं तो सांता क्लॉज की सुंदर दुनिया में था। आपने मुझे उठा दिया!''–एरोन आंखें मलते हुए उठा, तो देखा क्रिसमस ट्री सजा हुआ था, ठीक वैसा ही जैसा उसने चर्च में देखा था। तभी एक लड़का ठंड से कांपता हुआ उनके घर आया। बोला–''मुझे भूख लगी है।''

एरोन ने बिस्कुट, केक, पेस्ट्री और न जाने क्या-क्या चीजें उस बालक को खिलाईं। फिर उसने अपनी नई जैकेट उस लड़के को दे दी, जो क्रिसमस के लिए वह खुद पसंद करके लाया था।

उसके मम्मी-पापा सोच रहे थे कि असली क्रिसमस तो उनका बेटा मना रहा है।

राजन राज दिलवर
इब्राहिम मेमोरियल हाई स्कूल, सासामुसा, गोपालगंज

इनकी कहानियां भी पसंद आईं

- ✦ त्वीशा शर्मा, तपस्विनी गुरुकुलम विद्यालय, जयपुर
- ✦ सुल्तान, श्री ल.ना. स्मारक उच्च विद्यालय, चोरौल, हाथी चौक, सीतामढ़ी
- ✦ प्रियांशु शर्मा, डीएवी पब्लिक स्कूल, लुधियाना
- ✦ प्रिशा जैन, डीपीएस, वसंत कुंज, नई दिल्ली

कविता पूरी करो

'फूल खिलें हैं डाली-डाली...'

इस पंक्ति के साथ तीन पंक्तियां और लिखकर कविता पूरी करें।

कविता पूरी करो परिणाम

अक्तूबर 2011 अंक में छपी पंक्ति *'काम बड़े करके दिखलाओ'* के आधार पर इन दो कविताओं को पुरस्कार दिए गए–

प्रथम पुरस्कार

काम बड़े करके दिखलाओ
दुनिया में तुम नाम कमाओ,
फेस बुक में नहीं, सच में दोस्त बनाओ
सबसे सच्ची दोस्ती निभाओ।

गौरव जोशी
सर्वोदय पब्लिक स्कूल, चंपावत

द्वितीय पुरस्कार

छुटपुट काम की मिले सफलता
तब तुम इतने मत इतराओ,
दाम मिलेगा, नाम भी होगा
काम बड़े करके दिखलाओ।

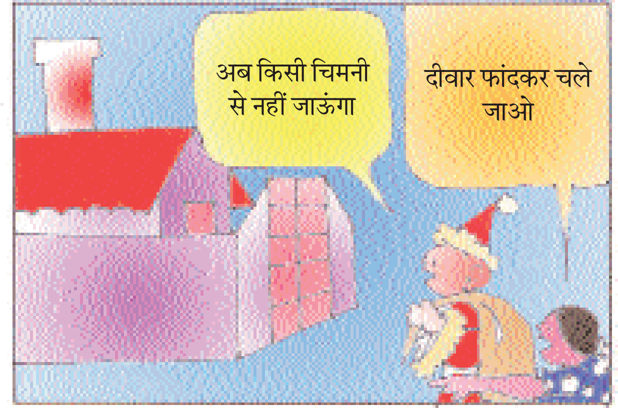
मानसी शर्मा
नेशनल पब्लिक स्कूल, हनुमानगढ़

इनकी कविताएं भी पसंद आईं

- ☛ आकांक्षा पाठक, वायु सेना विद्यालय, वायु सेना स्टेशन, आगरा
- ☛ मो. अशहब खान, मारहरा पब्लिक स्कूल, मारहरा, एटा
- ☛ नित्या बारमाटे, सेंट मेरीज इंग्लिश मीडियम स्कूल, बालाघाट
- ☛ शिवांशु सक्सेना, डा. वीएसईसी. स्कूल, अवधपुरी, कानपुर
- ☛ हर्षित यादव, केंद्रीय विद्यालय नं.1, सीआरपीएफ, अजमेर
- ☛ वैभव पांडे, स्वराज इंडिया पब्लिक स्कूल, कानपुर




चीटू-नीटू
सुशील कालरा


अब किसी चिमनी से नहीं जाऊंगा
दीवार फांदकर चले जाओ


क्रिसमस पर कई बच्चे खुशियों से वंचित रह जाते हैं। उन्हें मिठाइयों और खिलौनों की उम्मीद रहती है
हम देंगे उन्हें खुशियां


वेश बदलकर दूसरों के घर में घुस रहे हो, तुम्हें तो दरोगा के पास चलना होगा
अंकल हम तो खुशियां बांट रहे हैं! घरों में नहीं, तो गलियों में बांट देंगे


इस घर में तो चिमनी भी है! खुशियां बांटने मैं इसी रास्ते से...!


खुशियां ले जाइए
मुफ्त


इतना काले सांता नहीं हो सकते! सांता हो, तो तुम्हारी टोपी...?
चिमनी से उतरने में कहीं गिर गई होगी! तोहफों की उम्मीद हो, तो चिमनी से कालिख तो साफ करा लो


सब कुछ छीनकर ले गए और कपड़े भी फाड़ गए!
तभी तो मैं सोचता था कि सांता अब इधर क्यों नहीं आते!

पछतावा

कृष्णा अग्निहोत्री

चरवाहे का बेटा गणेश दिन भर सोता या हरी घास में लेटा रहता, उसके माता-पिता उसके लिए बहुत मेहनत करके भोजन का बंदोबस्त करते थे। एक दिन गुस्से में पिता ने उसकी बांह पकड़ी और कहा–''मैं तुम्हें मौसी के पास छोड़ आऊंगा, वही तुझे ठीक करेंगी।''

–''नहीं, मुझे उस सख्त मिजाज मौसी के घर नहीं जाना। वह मुझसे हल चलवाती हैं।''

तब भी चरवाहा उसे जंगल के रास्ते से लेकर चल पड़ा। रास्ते में एक हरे पेड़ के नीचे वे विश्राम करने रुके। पेड़ बोला–''चरवाहे, तुम इसे मेरे पास छोड़ दो, मैं यहां का राजा हूं, इसे ठीक कर दूंगा। साल भर बाद यहीं आकर ले जाना, पर यदि तुम इसे पहचानोगे, तो ही मैं इसे वापस करूंगा।''

चरवाहे ने गणेश को वहीं छोड़ा और वापस लौट आया।

कुछ देर में ही ठूंठ से एक युवक निकला और गणेश को नीचे ले गया। नीचे हरी-भरी झाड़ियां व पेड़ थे।

–''तुम इनकी सफाई करो व पेड़ से फल तोड़ो, वरना तुम्हें खाना नहीं मिलेगा और मैं तुम्हें मक्खी बना दूंगा।''

आलसी गणेश ने डरकर झाड़ी साफ की, पर पेड़ से फल नहीं तोड़ पाया।

गुस्से में जंगल के राजा ने उसे कबूतर बना दिया।

'गुटर-गूं' करते कबूतर ने राजा के पैरों पर लोटकर कहा–''अब काम करूंगा।''

–''ठीक है जाओ दूसरे कबूतरों को भगाकर पेड़ की रक्षा करो।''

गणेश आलस से दाना चुगकर सो गया व पेड़ों को जंगली कबूतरों ने नष्ट कर दिया। गुस्से में राजा ने गणेश को कोयल बना दिया। अब गणेश की समझ में आ गया कि उसे तो कुछ अच्छा करके राजा का दिल जीतना पड़ेगा। वह रात भर जागकर चोरों से फलों एवं दानों की रक्षा करता, जैसे ही कोई आता वह 'कुहू-कुहू, जागो राजा जागो, आया वानर, जागो राजा जागो' पुकारता।

बस, राजा की फौज सबको घेरकर भगाने में सफल हो जाती। इसी तरह हरियाले पेड़ों व फलों को जब भी जानवर चुराने आते कोयल गाकर उन्हें पकड़वा देती। तब खुश होकर जंगल के राजा ने गणेश को एक होनहार लड़का बना दिया। वर्ष बीता। चरवाहा बेटे को वापस लेने उसी वृक्ष के नीचे आया। वहां दो-तीन लड़के बैठे मक्खी मार रहे थे। एक आंखों में आंसू भर पेड़ सींच रहा था।

राजा ने बोला–''पहचानो, कौन है तुम्हारा बेटा।''

–''वह जो पछतावे के आंसू से पेड़ सींच रहा है।''

''ठीक है, ले जाओ गणेश को। वह अब मेहनती बेटा है। यह रहा उसका इनाम और गिन्नियों की थैली।''–पेड़ राजा बोले। चरवाहे की मेहनत सफल रही, समय पर बेटा समझदार हो गया था।

अतुल वर्धन



कहानी

राजा की खोज



श्याम नारायण श्रीवास्तव

नौकरी के साथ-साथ लेखन में भी सक्रिय

बहुत पहले की बात है। एक राजा थे। जिनका नाम था गजेंद्र प्रताप सिंह। राजा के कोई पुत्र न था। एक पुत्री थी, जिसका नाम था प्रज्ञा। राजकुमारी प्रज्ञा बहुत सुंदर थी। सुंदरता से कहीं अधिक बुद्धिमान थी। राजा अपनी पुत्री का विवाह एक ऐसे राजकुमार से करना चाहते थे, जिसके पास बुद्धि, साहस व पराक्रम हो। उनका विचार था कि जिस राजकुमार से वह अपनी पुत्री का विवाह करेंगे, बाद में वही उनके राज्य का उत्तराधिकारी भी होगा।

उन्होंने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी। दूसरे राज्यों में संदेश भिजवा दिया कि वह अपनी राजकुमारी का विवाह करना चाहते हैं। जो भी राजकुमार विवाह करना चाहता है। उसे पहले कुछ प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। राजा प्रश्नों के माध्यम से उन राजकुमारों की बौद्धिक, तार्किक एवं साहसिक क्षमता को परखना चाहते थे।

धीरे-धीरे कई राजकुमार आए। किसी ने एक प्रश्न का उत्तर दिया। किसी ने दो प्रश्नों का और कुछ तो शुरू में ही हार मान कर चले गए।

राजा ने इस कार्य के लिए एक मंत्रिपरिषद का गठन भी किया था। मंत्रिपरिषद के लोग आए हुए अतिथियों का स्वागत करते थे। फिर उनमें से कोई एक प्रश्न पूछता था। राजगढ़ के राजकुमार को अपनी बुद्धि और वीरता पर बहुत अभिमान था। वह भी वहां पहुंचा। एक मंत्री ने कहा–''राजकुमार जी, आप अग्नि के विषय में तो जानते ही होंगे? बताइए आग में जल जाने से क्या होता है?''

राजकुमार ने कहा–''यह तो बहुत ही साधारण सी बात है। आग में जल जाने से छाले पड़ जाते हैं।''

मंत्री ने कहा–''क्या आग में जल जाने से सिर्फ छाले ही पड़ते हैं?''

इस पर राजकुमार ने कहा–''ऐसी बात नहीं है। आग में जल जाने से कोई वस्तु राख भी हो सकती है। झुलस भी सकती है।''

मंत्री ने कहा–''क्षमा करें, राजकुमार कोई एक उत्तर दें।'' वह अपने ही द्वारा दिए गए उत्तरों में फंस गया। समझ नहीं पा रहा था। सही उत्तर क्या होगा। दूसरा प्रश्न भी तभी किया जाएगा, जब पहले का सही उत्तर मिल जाए। अंततः वह राजकुमार अपने राज्य वापस चला गया।

एक देश के राजकुमार ने अपने पहले प्रश्न का सही उत्तर दे दिया, तो उससे दूसरा प्रश्न पूछा गया–''एक किसान ने अपने पुत्र के जन्म के दिन ही एक बक्स में एक स्वर्ण मुद्रा रख दी। फिर इसी तरह प्रत्येक जन्मदिन पर वह एक स्वर्ण मुद्रा उसमें रखता गया। बीस वर्ष बाद जब वह बक्स खोला, तो उसमें मात्र पांच ही स्वर्ण मुद्राएं मिलीं–ऐसा क्यों?''

राजकुमार ने कहा–''ऐसा कैसे हो सकता है? बीस वर्ष बाद तो बीस स्वर्ण मुद्राएं होनी चाहिए। संभव है किसी ने स्वर्ण मुद्राएं चुरा ली होंगी। यह किसान की पत्नी की चालाकी भी हो सकती है। यह तो किसान व उसके पुत्र का दुर्भाग्य है।''

मंत्री ने कहा–''नहीं राजकुमार जी, यह किसान का नहीं आपका दुर्भाग्य है कि आपके पास दूसरे प्रश्न का सही उत्तर नहीं है। क्षमा करें, बिना समझे किसी पर आरोप नहीं लगाना चाहिए। हम अपने नियम के अनुसार आपको एक हजार स्वर्ण मुद्राएं प्रदान करते हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपने राज्य लौट जाएं।''

इस प्रकार कई माह बीत गए। कई लोग आए, किंतु कुछ उपहार लेकर लौट गए। राजा की चिंता कम न हुई। इस बीच अंतपुर का राजकुमार भी अपना भाग्य आजमाने आ गया। मंत्रिपरिषद से भेंट हुई। अपना परिचय देते हुए प्रश्नों को जानने की इच्छा प्रकट की।

मंत्रिपरिषद ने उसे आदर पूर्वक आसन दिया। फिर पहला प्रश्न किया–''आग में जल जाने से क्या होता है?'' राजकुमार ने विचार किया। आग में जल जाने से अर्थात आग



अतुल वर्धन

में पानी जाने से, उसने तत्काल ही कहा–''आग में जल जाने से आग बुझ जाती है।'' मंत्रिपरिषद को इसी उत्तर की प्रतीक्षा थी।

उन्होंने दूसरा प्रश्न किया। राजकुमार ने प्रश्न को समझा। बीस वर्ष में पांच स्वर्ण मुद्राएं। इसका मतलब यह भी हो सकता है कि बीस वर्ष में उसका जन्मदिन पांच बार ही मनाया गया हो। परंतु ऐसा कैसे हो सकता है। वह इसी सोच में था कि उसे ध्यान आया कि उनतीस फरवरी प्रति वर्ष नहीं आती। उस बच्चे का जन्मदिन उनतीस फरवरी का है। तभी वह बीस वर्ष में पांच बार आया और स्वर्ण मुद्राएं भी पांच ही मिलीं। मंत्रियों ने कहा–''राजकुमार आपने बहुत सही उत्तर दिया। हमें बहुत प्रसन्नता है। अब आपको आज रात्रि हमारे अतिथि भवन में विश्राम करना होगा। कल सुबह आपको यहां से पांच मील दूर नदी पार करके राजमहल पहुंचना होगा। नदी को पार करते समय कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आप कैसे पार करेंगे, यही आपका तीसरा प्रश्न है? हम सब आपको राजमहल के निकट ही मिल जाएंगे।''

प्रातः होते ही राजकुमार ने नदी पार करने की तैयारी की। वह अपने कुल देवता को याद करता हुआ कुछ ही दूर पहुंचा कि रास्ते में उसे एक महात्मा ने रोका। राजकुमार घोड़े से उतर गया। उस महात्मा को प्रणाम करते हुए राजकुमार ने रोकने का कारण पूछा।

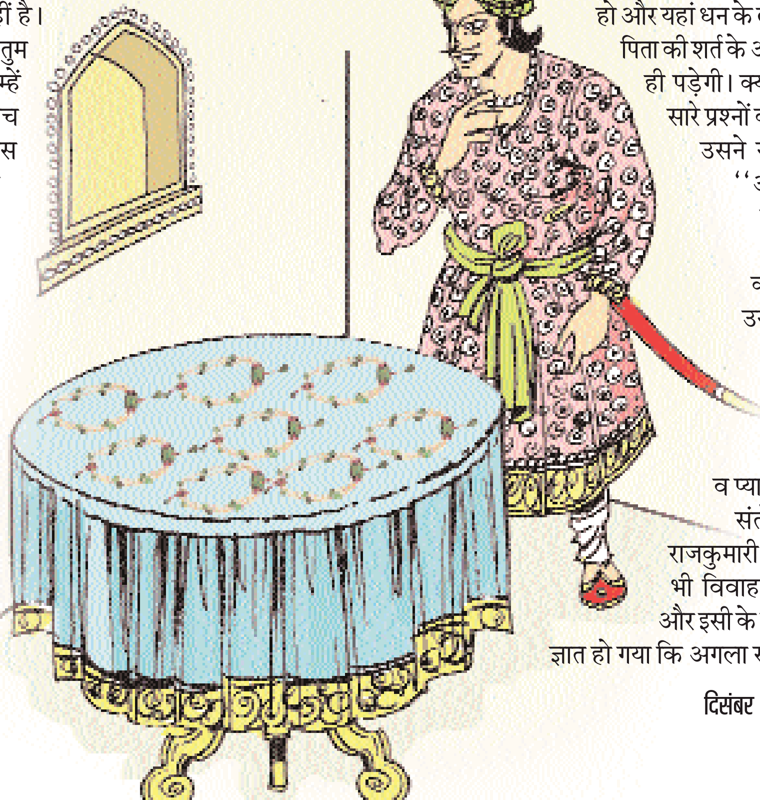
उन्होंने कहा–''बेटा, तुम जिस पुल से नदी पार जाना चाहते हो, वह बहुत कठिन रास्ता है। लेकिन और कोई रास्ता भी नहीं है। इस पुल की अपनी एक विशेषता है। तुम चाहे जिस साधन से इसे पार करो। तुम्हें दस मिनट अवश्य लगेंगे। पुल के बीच में एक राक्षस बैठा रहता है। वह राक्षस पांच मिनट सोता है और पांच जागता है। उसके जागते रहने पर तो पुल पार करना संभव नहीं है। वह पहले लोगों को मना करता है फिर जो नहीं मानता उसे मारकर नदी में फेंक देता है। यदि कोई उसके सोते समय आधी दूरी तक आ भी जाता है, तो वह उसी दिशा में पुनः वापस कर देता है जिधर से वह आदमी आ रहा होता है।''

राजकुमार ने विनम्र होकर पूछा–''आप ही कोई रास्ता बताइए।'' महात्मा जी उसे तरीका बताकर अदृश्य हो गए। वह समझ गया, अवश्य ही उसके कुल देवता सहायता करने आए थे।

राजकुमार आगे बढ़ा। पुल भी निकट आ गया था। उसने पहले राक्षस के सोने की प्रतीक्षा की। जैसे ही राक्षस सोया, राजकुमार ने घोड़े को दौड़ा दिया। लेकिन पांच मिनट पूरे होने से पहले राजकुमार घोड़े का मुंह उधर करके खड़ा हो गया, जिधर से वह आ रहा था। राक्षस ने जगते ही कहा–''वापस जाओ।'' फिर क्या था, राजकुमार पीछे मुड़ गया। इस प्रकार वह फिर अपनी सही दिशा में आ गया और पुल से नदी पार कर गया।

दूर से ही राजा का महल दिखाई पड़ रहा था। थोड़ी दूर चलने पर वह उस स्थान पर पहुंच गया, जहां मंत्रिपरिषद के लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। राजकुमार के सकुशल यहां तक पहुंचने पर फिर स्वागत किया गया। मंत्रियों ने कहा–''हमें विश्वास हो गया कि अब आपसे ही राजकुमारी का विवाह होगा। अब आपको राजकुमारी के पास जाना होगा। वहीं महाराज भी मिलेंगे।

''लेकिन शर्त यह है कि आपको खाली हाथ नहीं जाना है। साथ में एक हीरे का हार उपहार में ले जाना होगा। इसके लिए आपको उस सामने वाले कक्ष में जाना होगा। वहां नौ हार रखे हुए हैं। देखने में सभी हीरे के लगते हैं। लेकिन असली एक ही है। यदि आप हीरे के अच्छे पारखी हैं, तो आराम से पहचान जाएंगे। यदि न पहचान सकें, तो एक बात और है। वह हीरे का हार अन्य हार से थोड़ा सा भारी है। बाकी आठों का वजन बराबर है। वजन मापने के लिए वहां एक तराजू भी रखा है। जिस पर कोई भी आदमी मात्र दो बार ही वजन कर सकता है। तीसरी बार वह उसके लिए काम नहीं करेगा।''



राजकुमार ने कक्ष में प्रवेश किया। हीरों का हार देखकर वह चकित हो गया। उनमें असली कौन सा है, सहज ही बताना बहुत कठिन था। एक तराजू भी था, लेकिन कोई बाट नहीं था। उसे लगा अब वह आगे नहीं बढ़ पाएगा। तभी राजकुमार ने देखा हीरों के तीन-तीन हार एक साथ रखे थे। उसे लगा अवश्य ही इसमें कोई रहस्य है। उसने एक पलड़े में तीन हार, दूसरे में तीन हार रखे। सोचा जिस पलड़े में वह भारी हार होगा वह झुक जाएगा। यदि दोनों में नहीं होगा तो नीचे रखे तीनों में होगा। जिससे उसे यह ज्ञात हो जाएगा कि नौ में से किस तीन में वह हार है। फिर वही प्रक्रिया दोहराई जाए, दोनों पलड़ों में एक-एक हार और एक नीचे। जिस पलड़े में असली हार होगा वह झुक जाएगा और नहीं तो जो नीचे रखा है वही होगा। अंततः असली हार भी मिल गया।

राजकुमार ने असली हार को पहचान लिया और उपहार में देने के लिए अपने पास रख लिया।

अब अंतिम प्रश्न राजकुमारी को ही पूछना था। वहां राजा-रानी, मंत्री सभी बैठे थे। राजकुमारी सोच रही थी। ऐसा तो नहीं यह राजकुमार और किसी राजकुमारी को चाहता हो और यहां धन के लालच में आ गया हो। पिता की शर्त के अनुसार तो शादी करनी ही पड़ेगी। क्योंकि इसने अब तक सारे प्रश्नों का सही उत्तर दिया है, उसने राजकुमार से पूछा–''आप बताएं कि किसी से प्यार किया है।''

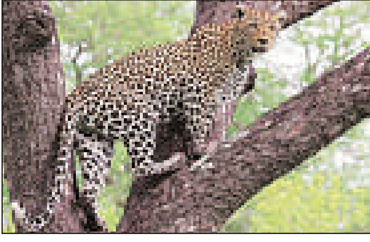
राजकुमार ने कहा–''हां।''

उसने सहमते हुए फिर पूछा–''किससे?''

उत्तर मिला–''अपने माता-पिता, भाई-बहन व प्यारी जनता से।''

संतोषजनक उत्तर पाकर राजकुमारी प्रसन्न हो गई। राजा ने भी विवाह की घोषणा कर दी और इसी के साथ लोगों को यह भी ज्ञात हो गया कि अगला राजा कौन होगा। ●

निराली बेटी



राजस्थान की गाजीपुर वन चौकी पर नाकेदार हैं मोहन सिंह। जब उन्हें तेंदुए की आवाज सुनाई देती है और वह प्यार से पुकारते हैं–''बेटा लक्ष्मी!'' तो एक मादा तेंदुआ दौड़ी चली आती है। वह उनके साथ खेलती है। उनके गले से लिपटती है। हाथ चाटती है। वह जो कहते हैं उसे मानती है। जब वह छोटी थी, तो रणथंभौर के पास नन्हे बच्चे के रूप में मिली थी। तब उसे प्रभुदयाल नाम के सहायक वन अधिकारी ने पाला था। बाद में उसकी देख-रेख मोहन सिंह ने की। इसके बाद उसे पिछले साल जंगल में छोड़ दिया गया।

बेशक लक्ष्मी अब जंगल में रहती है, मगर मोहन सिंह से उसका रिश्ता कायम है। वह उसे अपनी बेटी मानते हैं।

जज विग नहीं पहनेंगे

आयरलैंड में अब जज ब्रिटेन में बनी विग नहीं पहनेंगे। सदियों से यह परंपरा चली आ रही थी। हर जज को यह विग पहननी पड़ती थी। इसे ब्रिटेन में बनाया जाता था। एक विग की कीमत लगभग 2200 पौंड बैठती थी। अब जजों के विग न पहनने से सरकार के हजारों पौंड बच सकेंगे।



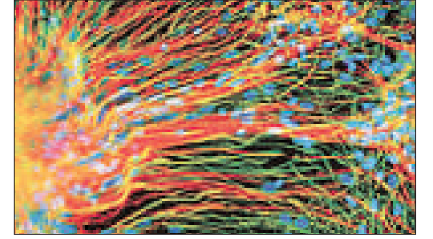
उड़ने वाला कालीन

अमेरिका की प्रिंसटन युनिवर्सिटी में प्लास्टिक की मदद से एक ऐसा कालीन बनाया गया है, जिसमें यदि बिजली की तरंगें प्रवाहित की जाएं और हवा का दवाब बनाया जाए, तो यह जमीन से कुछ ऊपर उड़ने लगता है। वैज्ञानिक इस प्रयोग से बेहद उत्साहित हैं। उनका कहना है कि हो सकता है भविष्य में ऐसा उड़ने वाला कालीन बनाने में सफलता पा लें, जिसका जिक्र कहानियों में होता है।



संस्कृत का एकमात्र अखबार

मैसूर से निकलने वाला सुधर्मा संस्कृत भाषा में निकलने वाला दुनिया का इकलौता अखबार है। प्रिंट एडीशन का सर्कुलेशन तीन हजार है। इसके वेब एडीशन को हर रोज 29000 हिट्स मिलते हैं।



स्टेम सेल से कुत्ता ठीक हुआ

जॉन नामक लेब्राडोर कुत्ता इंडो तिब्बतन बॉर्डर पुलिस में तैनात था। देहरादून में ड्यूटी के दौरान उसे रीढ़ की हड्डी में इतनी चोट लगी कि लकवा मार गया। वह किसी भी इलाज से ठीक नहीं हो रहा था। ऐसे अपंग कुत्तों को जहर का इंजेक्शन दे दिया जाता है। मगर जॉन को इज्जत नगर के वेटरनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट में ले जाया गया। वहां स्टेम सेल से उसका इलाज किया गया। अब जॉन न केवल ठीक है, बल्कि दौड़ भी रहा है। हो सकता है, जल्दी ही वह अपनी ड्यूटी पर भी वापस चला जाए।



सुधर्मा

सुभाषितम्



ऐफिल टॉवर से ऊंची इमारत

बताया जाता है कि चीन का हुक्कासी गांव दुनिया का सबसे अमीर गांव है। यहां की आबादी 2000 है। यहां हर परिवार के पास यूरोपियन स्टाइल के मकान, मुफ्त मेडिकल सुविधा है। उन्हें जैविक सब्जियां खाने को दी जाती हैं। चीन के बहुत से लोग इस गांव को देखने आते हैं। इस गांव की अमीरी यहां के लोगों की मेहनत का परिणाम है। गांव के लोग अब इसे टूरिस्ट स्पॉट बनाना चाहते हैं। इसीलिए गांव की पचासवीं सालगिरह मनाने के लिए ऐफिल टावर से भी ऊंची बिल्डिंग बनाई है। इसमें एक बैल की प्रतिमा लगाई गई है जो चौबीस किलो ठोस सोने से बनी है। इस इमारत को बनाने में 334 मिलियन डॉलर का खर्च आया है।

मम्मी बनाई



ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने लगभग तीन हजार साल बाद ममी बनाई है। इसके लिए एक टैक्सी ड्राइवर एलन बिलिस ने मृत्यु से पूर्व अपना शव दान किया था।

मरीजों के लिए हेलिकॉप्टर



बनारस हिंदू युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर लालजी सिंह का कहना है कि यहां के सुंदरलाल अस्पताल में गंभीर रूप से बीमार मरीजों को लाने के लिए हेलिकॉप्टर सेवा शुरू की जाएगी। यहां हेलिपैड भी बनाया जाएगा।

फेसबुक के आदी हैं बच्चे



भारत ही नहीं, दुनिया भर में सात से बारह वर्ष तक के बच्चे सोशल नेटवर्किंग फेसबुक के आदी हैं। समाचार पत्र 'सन' के मुताबिक वे दिन में एक बार जरूर इस नेटवर्क को खोलते हैं। इनमें लड़कियों की संख्या ज्यादा है। दोस्तों द्वारा पड़ने वाले दबाव के कारण वे इस या इस जैसी सोशल नेटवर्क साइट्स का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं। यही कारण है कि आजकल के बच्चे इंटरनेट के सभी पहलुओं से परिचित हैं।



अनोखा जन्मदिन



शिवम मेरा अच्छा दोस्त है। बहुत साल पहले शिवम की मां की मृत्यु हो गई थी। उसकी सौतेली मां उसे प्यार नहीं करती थी। वह अपने बेटे बोनी को बहुत लाड करती थी। शिवम दोनों भाइयों के बीच भेदभाव देखकर बहुत दुखी रहता था। उसकी मां घर के बहुत से काम भी शिवम से ही करवाती थी। बोनी का जन्मदिन आया, तो उसके मां-पिता ने बड़ी धूमधाम से मनाया। दो महीने बाद शिवम का जन्मदिन था। उसने भी अपना जन्मदिन मनाने के लिए कहा, तो उसे हमेशा की तरह मना कर दिया। उसने यह बात मुझसे कही। वह बहुत दुखी था। मैंने सभी दोस्तों को शिवम की उदासी का कारण बताया। हम सब दोस्तों ने प्रोग्राम बनाया। शिवम के जन्मदिन पर हम सब दोस्तों ने अपनी पॉकेटमनी से एक सरप्राइज पार्टी रखी। शिवम जब शाम को पार्क खेलने आया, तो बहुत उदास लग रहा था। पार्क में आकर चौंक गया। एक पौधे पर हमने गुब्बारे लगाए थे। पार्क के बेंच पर केक, कोल्ड ड्रिंक्स, चिप्स रखे थे। हम सबने जब शिवम को जन्मदिन की मुबारक दी, तो खुशी के आंसू उसकी आंखों से छलक आए। सबने तरह-तरह के उपहार दिए। सबने मजे से मनाया अपने दोस्त का जन्मदिन। शिवम ने दोस्तों को धन्यवाद देते हुए कहा—''मैं हर साल जन्मदिन मनाने के लिए तरस जाता था। पर यह जन्मदिन तो मैं सात जन्म तक नहीं भूल पाऊंगा!''

कन्हाई कुमार (अंकित), प्रिस्टाईन चिल्ड्रेंस हाई स्कूल, मुजफ्फरपुर, बि.

बहुत से बच्चों ने मनाया अनोखे ढंग से अपना जन्मदिन। जिन बच्चों का जन्मदिन मनाने का तरीका सच में अनोखा था, वे हैं–

मिताक्षरा सक्सेना, सरस्वती शिशु मंदिर, जयेंदगंज, ग्वालियर; अजय कुमार चौहान, रत्नाकर (नार्थ पाइंट), हावड़ा; सुहानी शर्मा, नोसेगे पब्लिक स्कूल, खातिमा, उधान सिंह नगर, उत्तराखंड; यश्ना शंकर, रामजस स्कूल, आर.के.पुरम, सेक्टर-4, नई दिल्ली

अनोखा जन्मदिन

आपका या आपके दोस्त का जन्मदिन! हां, वर्ष भर में सबसे विशेष दिन! इसे पार्टी देकर मजे में तो सभी मनाते हैं। अपने जन्मदिन को औरों से हटकर किसी निराले ढंग से मनाया हो, तो इसका पूरा किस्सा 300 शब्दों में लिखकर भेजिए। इसके साथ अपना फोटोग्राफ व कूपन भी भरकर भेजिए।

हिंदी में नाम...**आयु**..................
अंग्रेजी में नाम...
पिता का नाम..
पता...
....
राज्य...**पिनकोड**..................
फोन...**कक्षा**.....................
स्कूल का नाम..
....**स्थान**...........................



कहानी

चतुराई धरी रह गई



चतुरसिंह के पिता का देहांत हो चुका था। उसने अपने छोटे भाई कोमलसिंह को बंटवारा करने के लिए बुलाया था। ''बंटवारे से पहले हम खाना खा लेते हैं।''—खाना परोसते हुए चतुरसिंह ने कोमलसिंह से कहा।

कोमलसिंह ने जवाब दिया—''भैया! बंटवारा आप ही कर लेते। मुझे अपना हिस्सा दे देते। बाकी आप रख लेते। मुझे बुलाने की क्या जरूरत थी?''

''नहीं भाई, मैं यह नहीं सुनना चाहता कि बड़े भाई ने छोटे भाई का हिस्सा मार लिया।''—कहते हुए चतुरसिंह ने भोजन की दो थालियां परोसकर सामने रख दीं।

एक थाली में मिठाई ज्यादा थी। इस वजह से वह थाली खाली-खाली नजर आ रही थी। दूसरी थाली में पापड़, चावल, भुजिया ज्यादा थे। वह ज्यादा भरी हुई नजर आ रही था। मिठाई वाली थाली में दूधपाक, मलाई-बर्फी व अन्य कीमती मिठाइयां रखी थीं।

''जैसा भी खाना चाहो, वैसी थाली उठा लो।''—चतुरसिंह ने कहा। वह यह जानना चाहता था कि बंटवारे के समय कोमलसिंह किस बात को तवज्जो देता है। ज्यादा माल लेना पसंद करता है या कम माल। चूंकि कोमलसिंह को मीठा कम पसंद था इसलिए उसने पापड़-भुजिया वाली थाली उठा ली।

''भैया मुझे यह खाना पसंद है।''—कहते हुए कोमलसिंह खाना खाने लगा।

चतुरसिंह समझ गया कि कोमलसिंह को ज्यादा माल चाहिए। वह लालची है। इस कारण उसने ज्यादा भरी हुई थाली ली है। इसे इसका मजा चखाना चाहिए। यह सोचते हुए चतुरसिंह ने बंटवारे के लिए नई तरकीब सोच ली। खाना खाकर दोनों भाई कमरे में पहुंचे। चतुरसिंह ने घर के सामान के दो हिस्से कर रखे थे।

''इनमें से कौन-सा सामान चाहिए?''—चतुरसिंह ने सामने रखे सामान की ओर इशारा किया।

एक ओर फ्रिज, पंखे, वाशिंग मशीन रखी थी दूसरी ओर ढेर सारे बरतन रखे थे। चूंकि कोमलसिंह के पास फ्रिज, पंखे, वाशिंग मशीन थी, उसने सोचा कि भाई साहब के पास यह चीजें नहीं हैं, इसलिए ये चीजें भाई साहब के पास रहनी चाहिए।

यह सोचते हुए कोमलसिंह ने बड़े ढेर की ओर इशारा करके कहा—''मुझे यह बड़ा वाला ढेर चाहिए।''

चतुरसिंह मुसकराया—''जैसी तेरी मरजी। यूं



ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
बच्चों के प्रसिद्ध कवि व कथाकार। अनेक रचनाएं प्रकाशित

मत कहना कि बड़े भाई ने बंटवारा ठीक से नहीं किया।'' चतुरसिंह अपनी चतुराई पर मंद-मंद मुसकराता हुआ बोला। जबकि वह जानता था कि उसे ज्यादा कीमती सामान प्राप्त हुआ है।

कोमलसिंह खुश था। वह अपने बड़े भाई की मदद कर रहा था।

''अब इन दोनों ढेरों में से कौन-सा ढेर लेना पसंद करोगे।''—चतुरसिंह ने अपने माता की जेवरात की दो पोटली दिखाते हुए कहा।

कोमलसिंह ने बारी-बारी से दोनों पोटलियों का निरीक्षण किया। एक पोटली भारी थी। दूसरी हल्की व छोटी। उसने सोचा कि चतुरसिंह बड़े भाई हैं इसलिए उन्हें ज्यादा हिस्सा मिलना चाहिए।

''भैया! आप बड़े हैं। बड़ी चीज पर आपका हक बनता है।''—कहते हुए कोमलसिंह ने छोटी पोटली रख ली।

चतुरसिंह चकित रह गया। उसने बड़ी पोटली

में चांदी के जेवरात रखे थे। छोटी पोटली में सोने के जेवरात थे। वह जानता था कि कोमलसिंह लालच में आकर बड़ी पोटली लेगा, जिससे उसके पास चांदी के जेवरात चले जाएंगे और वह सोने के जेवरात ले लेगा।

मगर, यहां उलटा हो गया था।

अबकी बार चतुरसिंह ने चतुराई की– ''कोमलसिंह इस बार तू बंटवारा करना। नहीं तो लोग कहेंगे कि बड़े भाई ने बंटवारा करके छोटे भाई को ठग लिया।'' चतुरसिंह ने कोमलसिंह को ठगने के लिए योजना बनाई।

कोमलसिंह कोमल हृदय था। वह बड़े भाई का हित चाहता था। बड़े भाई के ज्यादा बच्चे थे। इसलिए वह चाहता था कि जमीन का ज्यादा हिस्सा बड़े भाई को मिले। इसलिए वह चतुरसिंह को अपने पैतृक घर पर ले गया।

''भाई साहब! यह अपना पैतृक मकान है। पिता जी ने आपके जाने के बाद इसे बनवाया था।''–कोमलसिंह ने कहा।

चतुरसिंह ने देखा कि एक ओर दो दुकान पर तीन मंजिल भवन खड़ा है। दूसरी ओर एक दुकान के पास अंदर जाने का गेट है। यानी एक ओर बहुमंजिले भवन के साथ दो दुकानें बनी हुई थीं। दूसरी ओर एक दुकान और पीछे जाने का गेट था।

चतुरसिंह नहीं चाहता था कि वह जेवरात की तरह ठगा जाए। इसलिए उसने कहा–''कोमलसिंह तुम ही बताओ, मुझे कौन-सा हिस्सा लेना चाहिए?''

''भाई साहब, मेरी राय में तो आपको दूसरा हिस्सा लेना चाहिए।''–कोमलसिंह ने कहा तो चतुरसिंह चकित रह गया।

छोटा भाई होकर बड़े भाई को ठगना चाहता है। खुद बहुमंजिला मकान और दो दुकान हड़पना चाहता है, मुझे एक दुकान और छोटा-सा बाड़ा देना चाहता है। यह सोचते हुए चतुरसिंह ने कहा– ''कोमलसिंह, मेरा परिवार बड़ा है। इसलिए मैं चाहता हूं कि यह बहुमंजिला मकान मैं ले लूं।''

इस पर कोमलसिंह ने कहा–''भैया! आप हिस्सा लेने से पहले यह दूसरा हिस्सा देख लें।'' वह चाहता था कि बड़े भाई को ज्यादा हिस्सा मिले, क्योंकि दूसरे हिस्से के अंदर दस मकान और लंबा-चौड़ा खेत था। साथ ही बहुत सारे मवेशी भी थे।

मगर चतुरसिंह ने सोचा कि छोटा भाई उसे ठगना चाहता है इसलिए चतुरसिंह ने कहा– ''कोमल, मुझे कुछ नहीं देखना है। यह दूसरा हिस्सा तेरा रहा। पहला हिस्सा मेरा रहेगा।''

''भैया! एक बार सोच लो।'' कोमलसिंह ने कहा–''आपको ज्यादा हिस्सा चाहिए इसलिए आप यह दूसरा हिस्सा ले लें।''

चतुरसिंह जानता था कि खाली जमीन के ज्यादा हिस्से से उसका यह बहुमंजिला मकान अच्छा है। इसलिए उसने छोटे भाई की बात नहीं मानी। सभी पंचों के सामने अपने-अपने हिस्से का बंटवारा लिख दिया।

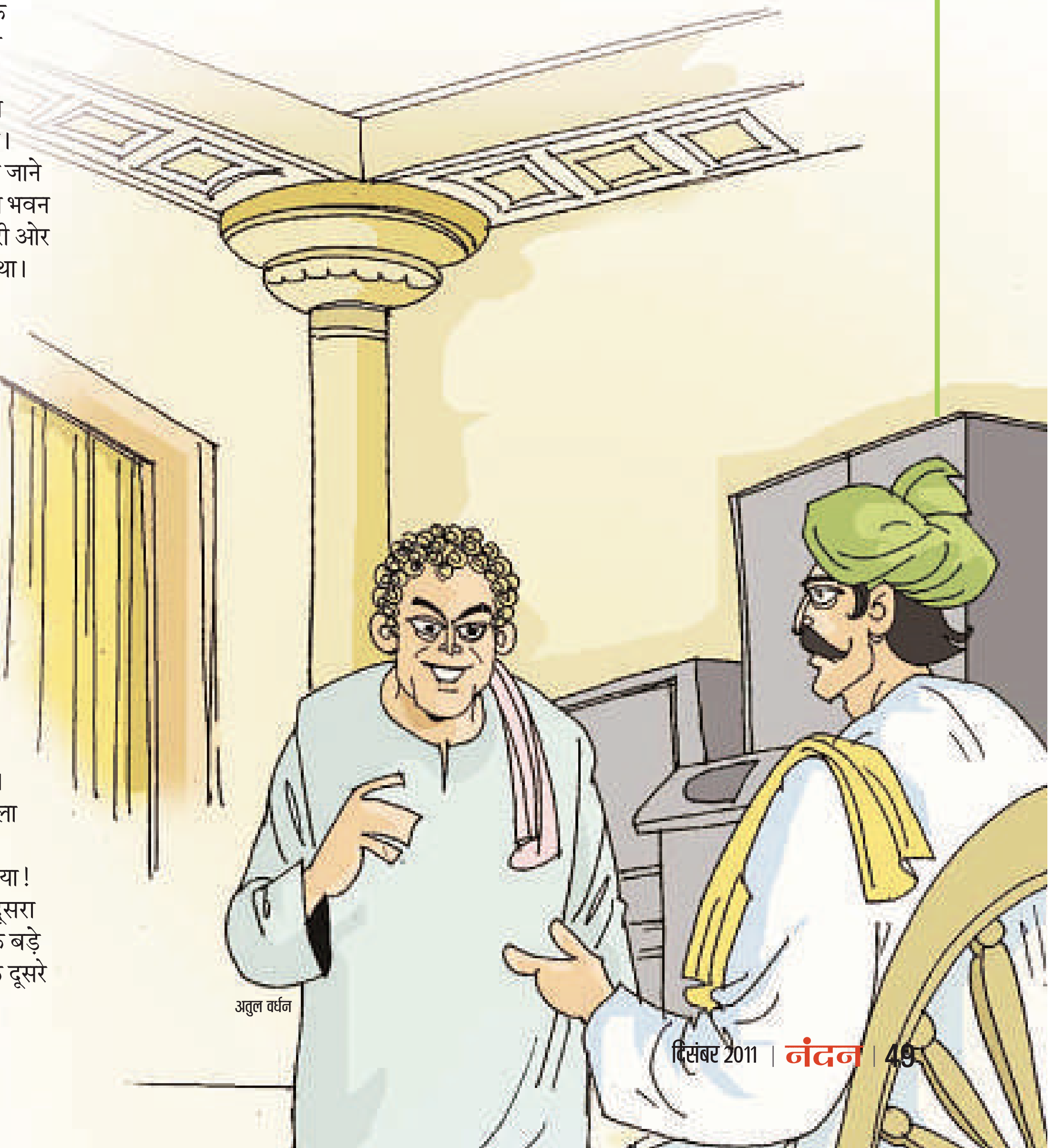
''भैया! एक बार मेरा हिस्सा भी देख लेते।''–कहते हुए कोमलसिंह चतुरसिंह को अपना हिस्सा दिखाने के लिए दुकान के पास वाले गेट से अंदर गया।

आगे-आगे कोमलसिंह था। पीछे-पीछे चतुरसिंह चल रहा था। जैसे ही वे गेट के अंदर गए, उन्हें गेट के पीछे लंबा-चौड़ा खेत नजर आया। सामने की तरफ 10 भवन बने हुए थे। कई मवेशी चर रहे थे।

यह देखकर चतुरसिंह दंग रह गया–''कोमल, यह हिस्सा पापा जी ने कब खरीदा था?''

''भैया! आपके जाने के बाद।'' कोमलसिंह ने बताया–''इसीलिए मैं आपसे कह रहा था कि आप बड़े हैं। आपको बड़ा हिस्सा चाहिए। मगर आप माने ही नहीं।''

मगर, अब चतुरसिंह क्या करता? उसकी चतुराई की वजह से वह लुट चुका था। वह चुप हो गया।



पुरस्कृत

अध्यापक–''सौरभ, लंका को सोने की लंका क्यों कहा जाता है?''
सौरभ–''क्योंकि वहां कुंभकरण रात-दिन सोया रहता था।''
अभिषेक कुमार, झारखंड



पापा–''मैंने तुम्हें पांच का सिक्का दिया था। मैंने कहा था कि इसे खर्च मत करना। किसी को दान में दे देना।''
शकील–''मैं उसे दान में देना चाहता था। फिर खयाल आया कि यह नेकी मैं क्यों कमाऊं। क्यों न आइसक्रीम वाले को कमाने दूं, सो मैंने उसे दे दिया। अब उसका काम है कि वह दान में दे या न दे।''
मिनी, कोलकाता

***

अध्यापक–''जलचर किसे कहते हैं?''
सूरज–''जल में रहने वाला प्राणी।''
अध्यापक–''और टीचर का मतलब?''
सूरज–''चाय में रहने वाला प्राणी।''
राजन राज दिलवर, बिहार

***

अन्ना–''बिल तो पास करना ही होगा।''
मनमोहन सिंह–''जब आपने कुछ खाया ही नहीं तो बिल किस बात का?''
शुभम दीक्षित, उत्तर प्रदेश

***

अध्यापक –''मैंने जो कल तुम्हें हिंदी का पाठ पढ़ाया था, वह सुनाओ।''
रश्मि–''जी, याद नहीं।''
अध्यापक–''ठीक है, जो याद है वह सुनाओ।''
रश्मि–''जी, मुझे गाना याद है, वही सुना दूं।''
राहुल, लखनऊ

***

संजू–''यार शाहिद, सभी डाक्टर ऑपरेशन से पहले इंजेक्शन लगाकर मरीज को बेहोश क्यों करते हैं?''
शाहिद–''ताकि मरीज ऑपरेशन सीखकर डाक्टर ही न बन जाए।''
प्रियंका विजय, दिल्ली

***

अमिताभ बच्चन–''मेरे पास रॉकेट है, मोर छाप बम है, फुलझड़ी, अनार और सुतली बम है। तुम्हारे पास क्या है?''
शशि कपूर–''मेरे पास माचिस है।''
अविनाश झा, बिहार

***

प्रोड्यूसर–''पिक्चर का नाम सुनते ही सब बच्चे डर जाएं। ऐसा कुछ शीर्षक बताइए।''
डायरेक्टर–''सुबह इम्तिहान शाम नतीजा।''
प्रिया सांकला, दिल्ली

***

वकील अपराधी से बोला–''चाकू पर तुम्हारी उंगलियों के निशान पाए गए हैं। खून तुमने ही किया है।''
अपराधी–''वकील साहब, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं कि चाकू पर मेरी उंगलियों के निशान पाए गए हैं, क्योंकि खून करते वक्त तो मैंने दस्ताने पहने हुए थे।''
रवींद्र शुक्ला, जालंधर

***

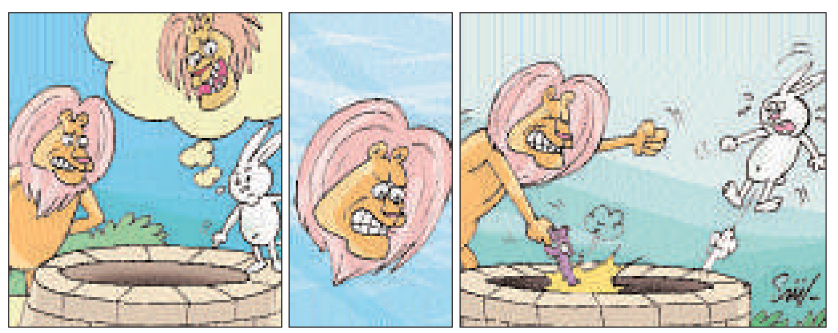
एक कंडक्टर की शादी हो रही थी, जब दुलहन फेरों के लिए पास आकर बैठी, तो वह बोला–''थोड़ा पास आकर बैठ जाओ। एक सवारी और बैठ सकती है।''
कृष्ण मोहन, आगरा

पुरस्कृत

एक बार पीटर पहाड़ों की सैर पर गया। रास्ते में उसे एक विचित्र सा पत्थर दिखा। उस पत्थर पर लिखा था–'इसे पलटो, कुछ बन जाओगे।'
पीटर ने तुरंत पत्थर को पलटा, तो उस पर लिखा था–'बन गए बुद्धू!'
कर्णवीर सिंह, लुधियाना



नंदन में चुटकुले SMS से भेजने के लिए NANJ के बाद अपना चुटकुला व पूरा नाम-पता लिखकर 54242 पर SMS करें या 'नंदन' के पते पर पत्र या ई-मेल nandan@livehindustan.com पर भेजें। दो सबसे अच्छे चुटकुलों को 'नंदन' की ओर से पुरस्कार दिए जाएंगे। चुटकुलों के साथ अपना नाम व पूरा पता लिखकर भेजें।





तलवार से ढाल भली

कथा : मनोहर चित्रांकन : राजीव तिवारी



राजा कृष्णदेव राय का जन्मदिन था। राजा को बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ था। राजा की ओर से हर किसी को उपहार में कुछ न कुछ मिल रहा था। अंत में दरबारियों ने भी बधाई देनी शुरू की। चाटुकार दरबारी राजा को खुश करने की युक्ति सोचने लगे।

राजा ने मुख्य दरबारियों से कहा–''जो चाहो, मांग लो।''

सेनापति बोला–''महाराज, मुझे आप कोई तलवार दे दीजिए।'' राजा ने सेनापति को अपनी एक तलवार भेंट कर दी।

मंत्री और नगर कोतवाल एक साथ बोल उठे–''महाराज, हमें भी तलवार दीजिए।'' राजपुरोहित क्यों पीछे रहता। उसने कहा–''महाराज, सुरक्षा के लिए तलवार तो मुझे भी चाहिए। क्या पता राजहित में तलवार कब काम आ जाए।'' राजा ने देखा कि तेनालीराम दूर खड़ा मुसकरा रहा है।

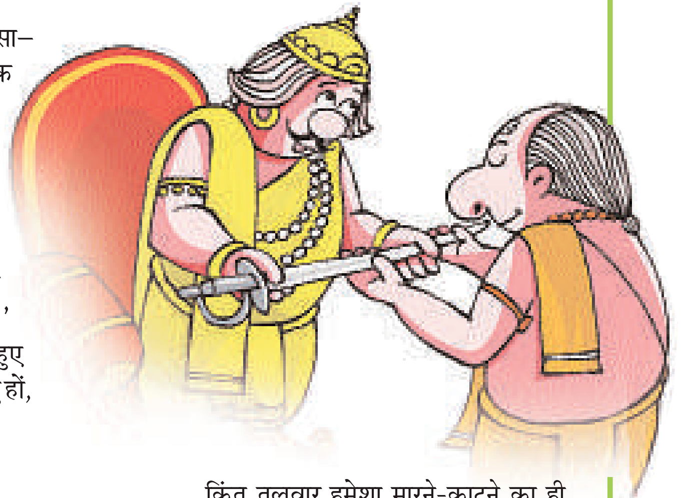
राजा ने पूछा–''क्यों तेनालीराम, तुम्हें क्या चाहिए?''

तेनालीराम ने कहा–''महाराज, मैं तलवार से अधिक ढाल लेना पसंद करूंगा।'' यह सुनकर दरबारी हंस पड़े।

सेनापति ने चुटकी लेते हुए कहा–''लगता है, तेनालीराम ने कभी तलवार नहीं उठाई।''

मंत्री बोला–''सेनापति जी, आप तो जानते ही हैं कि बैठे-ठाले दरबार में सलाह देने और रणभूमि में तलवार उठाने में अंतर होता है।''

राजपुरोहित ने भी व्यंग्य कसा–''भई, हमें तो तलवार से अधिक तेनालीराम की बातों में वजन महसूस होता है। अब देखते हैं कि तेनालीराम तलवार के विरुद्ध क्या तर्क देता है।''



राजा बोले–''कहो तेनालीराम, तलवार के सामने तुच्छ सी ढाल क्यों चाहते हो?''

तेनालीराम ने सिर झुकाते हुए कहा–''महाराज, आप दीर्घायु हों, किंतु तलवार हमेशा मारने-काटने का ही काम करती है। वहीं ढाल बचाने का काम करती है। आप ही अकसर कहते हैं कि मारने वाले से बचाने वाला भला। तो भला मैं तलवार लेकर क्या करूंगा!''



राजा तेनालीराम का आशय समझ गए। मुसकराते हुए दरबारियों से बोले–''तेनालीराम ठीक कहता है। आप सब तो तलवार उठाकर दुश्मनों से लड़ेंगे, किंतु किसी अवांछित प्रहार से मेरी रक्षा करने वाला भी तो कोई होना चाहिए। तब भला मेरे लिए तेनालीराम से अधिक विश्वासपात्र कौन हो सकता है।''

यह सुनकर दरबारियों के सिर झुक गए। दरबारियों की तेनालीराम को नीचा दिखाने की युक्ति व्यर्थ गई।



खींची लगाम

वह अरबी नस्ल का शानदार घोड़ा था। घोड़े के मालिक थे, महाराजा मानसिंह। घोड़ा उन्हें अत्यंत प्रिय था। वह उसे 'हीरा' कहकर पुकारते थे। जब भी कहीं बाहर जाते, हीरा उनकी पहली पसंद हुआ करता था। वह उसे ही साथ ले जाते।

एक बार महाराज को एक मंदिर में जाना था। मंदिर दूर जंगल में बना हुआ था। शाही बग्घी में हीरा को जुतवाया गया। आखिर, महाराज को उस पर पूरा भरोसा था।

सारथी के इशारे की देर थी कि हीरा सरपट मंजिल की ओर दौड़ पड़ा। शीघ्र ही वे मंदिर पहुंच गए। मंदिर में पूजा-अर्चना की। तब तक बहुत देर हो चुकी थी। गरमी की तेज धूप थी। इसीलिए दोपहर के समय वहीं विश्राम किए जाने का कार्यक्रम बन गया। सारथी ने हीरा की पीठ थपथपाई। उसे दाना-पानी खिलाया। फिर विश्राम के लिए एक पेड़ से बांध दिया।

पेट भर जाने से हीरा को भी सुस्ती आने लगी थी। आंखें मूंदकर वह सुस्ता रहा था। उसे नींद का एक झोंका आ गया। अचानक एक अजनबी स्वर सुनकर उसकी नींद खुल गई। उसने आंखें खोलकर देखा। सामने एक घोड़ा खड़ा था। एकदम दुबला-पतला सा। वह लगातार हीरा को घूरे जा रहा था। उसे यूं घूरते देख, हीरा ने पूछा–''कहो भाई, क्या बात है, क्या चाहते हो?''

पर वह अपलक हीरा को देखता रहा। उसकी नजरें हीरा के मोटे शरीर पर थीं। राजसी ठाट-बाट से गहने पहनकर वह और भी सुंदर लग रहा था। वह हीरा से बोला–''लगता है, खूब मजे में हो।''

''हां, कोई तकलीफ नहीं है। सचमुच मजे में हूं। कहो, तुम क्या चाहते हो?''–हीरा ने पलटकर उससे पूछा।

''अरे, छोड़ो यार! मैं तो खानाबदोश हूं। अपनी मर्जी का मालिक हूं। भला तुमसे मैं क्या चाह सकता हूं? तुम अपनी सुनाओ। यह जंगल हमारा है। तुम्हें यहां किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं?''–उसने पूछा।

''नहीं, कोई तकलीफ नहीं। मुझे कोई तकलीफ हो भी नहीं सकती। तुम नहीं जानते, मैं महाराजा मानसिंह का चहेता घोड़ा हूं। हां, तुम अपनी कहो! क्या नाम है तुम्हारा? क्या करते हो?''–हीरा ने पूछा।

''मेरा नाम जानकर क्या करोगे? भला खानाबदोशों का भी कोई नाम होता है? यदि जानना ही चाहते हो, तो बता देता हूं। मेरा नाम भोलू है। इसी जंगल में रहता हूं। जो मिलता है, खा-पी लेता हूं। अरे हां, तुमने अपना नाम नहीं

अतुल वर्धन

बताया।''—भोलू ने भी जानना चाहा।

''मां-बाप का दिया हुआ नाम तो मैं नहीं जानता। मेरे मालिक ने मुझे हीरा नाम दिया है।''—उसने कहा।

''हां, राजा-महाराजा ऐसे ही नाम रखते हैं। तुम्हारे खाते-पीते शरीर व राजसी ठाट-बाट देखकर, मैं पहले ही भांप गया था। समझ गया था कि जरूर तुम किसी राजा की चाकरी में हो।''— भोलू बोला।

''कहो, यदि तुम भी चाहो, तो करूं सारथी दादा से तुम्हारी सिफारिश। वे हमारी भाषा जानते हैं। मेरा कहना नहीं टालेंगे। तुम्हें आज ही साथ ले चलेंगे। आगे तुम्हारा भाग्य। जैसी सेवा करोगे, वैसी ही तरक्की पाते जाओगे।''—हीरा ने फूलकर इतराते हुए कहा।

भोलू बोला—''न बाबा, न। मैं भला, और मेरा यह जंगल भला। अपने वश की बात नहीं चाकरी करना। मैं किसी की गुलामी नहीं कर सकता, चाहे वह कहीं का राजा-महाराजा ही क्यों न हो।''

''क्या बात करते हो? अच्छी सेवा करोगे, तो महाराज निहाल कर देंगे। बढ़िया घास-दाना व राज भवन जैसा तबेला मिलेगा। पहनने के लिए राजसी वस्त्र, गहने व प्रेमपूर्ण देखभाल होगी। सोच लो, इतना तो कहीं भी संभव नहीं है।''—हीरा ने समझाया।

''मैं मानता हूं भाई। तुम्हारे जैसे ठाठ-बाट मैं सात जन्मों में भी प्राप्त नहीं कर सकता। फिर भी एक बात है। तुम्हारा मालिक तुम्हें सब कुछ दे सकता है। मगर वह तुम्हें आजादी नहीं दे सकता।''—भोलू ने दो टूक बात कही।

—''आजादी? भला वह क्या होती है?''

—''तुम क्या जानो आजादी? जो गुलामी से प्यार करते हैं, वे आजादी का अर्थ कैसे जान सकते हैं?''



नगर का मुख्य चौराहा आने वाला था। वहां से राजमहल जाने के लिए बाईं ओर घूमना था। वह जान-बूझकर दाईं ओर घूम गया। दूसरी दिशा में घूमते देख, सारथी ने लगाम खींची। लगाम इतनी जोर से खींची थी कि नाक व मुंह पर तेज दबाव पड़ा।

''मैं आजादी की बात तो नहीं जानता। हां, यह जरूर जानता हूं कि तुम सूखकर हड्डियों का ढांचा मात्र रह गए हो। जरा मेरी ओर देखो। कितने ही नौकर-चाकर मेरी मालिश करते हैं। मेरा ध्यान रखते हैं। ऐसा तो बड़े भाग्य से ही मिलता है।''—भोलू को ललचाते हुए हीरा ने कहा।

लेकिन भोलू प्रभावित नहीं हुआ। वह बोला—''सच कहते हो तुम। मैं जानता हूं कि तुम मजे में हो। मगर हो सोने की जंजीरों में जकड़े हुए, राजमहल के बंदी घोड़े। मैं ठहरा एक आजाद घोड़ा। अपनी मर्जी का मालिक हूं।''

भोलू की बातों से हीरा सहमत न था। वह उसे तरह-तरह से समझा रहा था। मगर उसे आजादी की तुलना में गुलामी अच्छी लग रही थी। अंत में जाने से पहले भोलू ने कहा—''मैं केवल एक ही बात जानता हूं। कभी तुम अपने मालिक की इच्छा के विपरीत चलकर देखना। जब वह तुम्हें दाएं जाने को कहें, तब तुम बाएं जाने के लिए अकड़ जाना। अपने आप जान जाओगे कि तुम स्वाधीन हो या पराधीन?''

यह कहकर भोलू चला गया। पर हीरा की नींद उड़ चुकी थी। वह बार-बार उसकी कही बातों पर विचार कर रहा था। उसे कभी उसकी बातें सही लग रही थीं, तो कई बार उसे अपनी स्थिति, उससे कहीं अच्छी महसूस हो रही थी। वह सोच रहा है काश! वह उससे और बातें कर





रमाकांत 'कांत'
बच्चों के वरिष्ठ साहित्यकार। बैंकिंग सेवा से अवकाश प्राप्त अधिकारी।

पाता। अब वह उससे मिले भी तो कैसे? वह उसे कहां मिलेगा? आखिर वह ठहरा स्वच्छंद। न जाने कहां से कहां चला गया होगा। उसे पहली बार अपने बंधनों व बेबसी पर गुस्सा आया।

इसी उधेड़बुन में वापसी यात्रा शुरू हो गई। वह फिर बग्घी में जोत दिया गया। उसका मानसिक संतुलन गड़बड़ा रहा था। भोलू के शब्द उसे बार-बार याद आ रहे थे। इसीलिए वह सही ढंग से नहीं दौड़ पा रहा था। सारथी सोच रहा था कि कहीं हीरा अस्वस्थ तो नहीं हो गया?

वह दौड़ रहा था, पर ध्यान भोलू की बातों में लगा था। उसे भोलू की कही एक बात याद आ गई। उसने कहा था कि कभी मालिक की इच्छा के विपरीत चलकर देखना। तुम्हें अपनी औकात का पता लग जाएगा। उसने विचार किया—'क्यों न मैं ऐसा करके देखूं। मुझे उसकी बात आजमाकर देखनी चाहिए।'

तब तक वह राजधानी के नजदीक पहुंच चुका था। नगर का मुख्य चौराहा आने वाला था। वहां से राजमहल जाने के लिए बाईं ओर घूमना था। वह जान-बूझकर दाईं ओर घूम गया। दूसरी दिशा में घूमते देख, सारथी ने लगाम खींची। लगाम इतनी जोर से खींची थी कि नाक व मुंह पर तेज दबाव पड़ा। पूरे शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

सारथी ने उसे सही दिशा की ओर घुमाना चाहा। लेकिन वह अड़ा रहा। यह देख, सारथी को गुस्सा आया। उसने तड़ातड़ पीठ पर चाबुक मारने शुरू कर दिए। आखिर हीरा को हठ छोड़नी पड़ी। उसे उसी रास्ते पर जाना पड़ा, जिधर सारथी ले जाना चाहता था।

अब हीरा को लगा कि भोलू सच कह रहा था। वह आजादी से एक कदम भी नहीं रख सकता। जबकि भोलू मर्जी का मालिक है। जहां चाहे, जाने को स्वतंत्र है। अब उसे आजादी के सुख व पराधीनता के दुःख का पता लगा। राजसी ठाट एवं गुलामी की जंजीरें अखरने लगीं। भोलू का फक्कड़पन उसके मन को भाने लगा। पराधीनता की पीड़ा कचोटने लगी। मगर वह कुछ नहीं कर सकता था, सिवाय भोलू के भाग्य पर ईर्ष्या करने के।•

रहस्यमय संदेश

जूलियस चैम्बर्स

बर्नर और हैमर दो दोस्त थे। दोनों छोटा-मोटा व्यवसाय करते थे, पर जब भी मौका मिलता, जासूसी में हाथ आजमाने निकल पड़ते। एक बार दोनों को एक दावत में जाने का मौका मिला। वहां शहर के बड़े लोग मौजूद थे। बर्नर और हैमर सावधानी से सब तरफ देख रहे थे। उनका खयाल था कि ऐसे ही मौकों पर अपराध होते हैं या अपराध की योजना बनाई जाती है।

एक आदमी काला चश्मा लगाए कोने में बैठा था। हैमर ने कहा–''दोस्त, मुझे तो वह अपराधी लगता है, वरना रात के समय काला चश्मा पहनने की क्या जरूरत है!''

सब भोजन करने में लगे थे, पर बर्नर और हैमर की नजरें उसी काले चश्मे वाले पर टिकी थीं, जो कोने में कुरसी पर चुप बैठा था। तभी बर्नर फुसफुसाया–''हैमर, बुफे टेबल की तरफ देखो, वहां कुछ हो रहा है!''

''क्या हो रहा है?''–हैमर ने पूछा और फिर कुछ ऐसा दिखाई दिया, जो अजीब था। उसने देखा कि एक महिला अपनी प्लेट में खाना लगा रही थी, तभी एक व्यक्ति उसके पास गया और महिला के हाथ में एक कागज थमा दिया। कागज पर नजर डालते ही महिला रो पड़ी और प्लेट मेज पर पटककर तेजी से बाहर चली गई।

जिस आदमी ने कागज दिया था, वह बोला–''इवा, सुनो तो सही!''

पर वह महिला तेजी से बाहर निकल गई। फिर दो शब्द सुनाई दिए–इवा और विलियम। दोनों पति-पत्नी थे। विलियम इवा के पीछे दौड़ा, पर तभी ट्रे लेकर बढ़ते बेयरे से टकरा गया। ट्रे गिर गई और धक्के से विलियम भी नीचे गिर गया।

हैमर ने कहा–''जल्दी बाहर चलो, देखो, इवा कहां जाती है।''

बर्नर ने चौकीदार से पूछा–''क्या कोई महिला रोती हुई बाहर आई थी, वह कहां गई?''

चौकीदार ने बताया–''जी, वह तो मिसेज इवा विलियम थी। वह बाहर आकर सड़क पर खड़ी हो गई थीं। तभी एक कार वहां आकर रुकी। इवा ने कार में बैठे आदमी से कुछ बात की, फिर कार में बैठकर चली गई।''

''जरूर उस कागज पर कोई रहस्यमय संदेश लिखा होगा, जो विलियम ने इवा के हाथ में दिया था।''–कहते हुए हैमर सड़क पर ध्यान से देखने लगा। तभी उसे एक तरफ पड़ा कागज का एक टुकड़ा नजर आया। उसने झुककर तुरंत कागज उठा लिया। उस पर के-70 लिखा था।

बर्नर बोला–''अरे, यह किसी इमारत का नंबर लगता है। जरूर इवा वहीं गई है।''

जिस इमारत में दावत चल रही थी, उसका नंबर के-30 था। बर्नर ने कहा–''दोस्त, के-70 नंबर का भवन ज्यादा दूर नहीं होना चाहिए। इवा वहीं गई होगी। चलो, वहां खोज की जाए।''

वहां पहुंचकर दोनों निराश हो गए। के-70 इमारत एक पुराना भवन था। बंद दरवाजे के बाहर एक पहरेदार मौजूद था। उससे पूछने पर पता चला कि यह इमारत तो काफी समय से खाली है। हैमर ने पूछा–''कोई औरत यहां आई थी?''

चौकीदार ने कहा–''जी नहीं, यहां तो काफी समय से कोई नहीं आया।''

हैमर ने बर्नर से कहा–''हमें इमारत के पीछे जाकर खोजना चाहिए, शायद उस तरफ कोई दूसरा रास्ता हो।'' इसके बाद दोनों ने गुपचुप घूम-घूमकर इमारत की जांच की। इमारत में हर तरफ अंधेरा था। किसी भी खिड़की में रोशनी नहीं थी। इमारत के पिछवाड़े एक दरवाजा था वह भी बंद था। दोनों परेशान हो गए। बर्नर ने कहा–''हो सकता है के-70 नंबर किसी और इमारत का हो या फिर कोई गुप्त संकेत हो। हमें वापस जाकर विलियम से ही पूछना चाहिए।''

जब दोनों वापस पहुंचे, तो दावत खत्म हो चुकी थी। पूछने पर पता चला

अतुल वर्धन

कि मि. विलियम अपनी पत्नी इवा के एकाएक गायब हो जाने से परेशान हैं और वह इवा की खोज में गए हैं।

हैमर बोला—''हमने ही विलियम को इवा के हाथ में एक कागज थमाते हुए देखा था। जरूर विलियम इस रहस्य के बारे में कोई गहरी बात जानता है। हमें तुरंत चलकर उससे मिलना चाहिए।''

बर्नर ने कहा—''पहले हम पुलिस इंस्पेक्टर के पास चलकर उसे यह बता दें।।''

अगले दिन सुबह दोनों मित्र इंस्पेक्टर थाम्पसन के पास थाने में पहुंचे, तो वह मिल गया। बर्नर ने उसे रात की पूरी घटना कह सुनाई।

इंस्पेक्टर ने कहा—''इसका मतलब है कि विलियम जानता है कि इवा कहां गई है।''

अभी यह चर्चा चल ही रही थी कि विलियम वहां चला आया। उसने थाम्पसन से कहा—''इंस्पेक्टर, मेरी पत्नी रात से गायब है।''

थाम्पसन ने कहा—''मि. विलियम, मुझे पूरी घटना के बारे में पता चल चुका है। क्या आप बताएंगे कि के-70 का क्या मतलब है?''

''के-70!''—विलियम ने आश्चर्य से कहा।

''हां, यह संख्या उस कागज पर लिखी हुई थी, जिसे आपने अपनी पत्नी इवा के हाथ में दिया था। वह कागज हमारे पास है।''—कहते हुए हैमर ने वह कागज दिखाया।

कागज देखते ही विलियम ने आंखें झुका लीं। बोला—''हां, यह कागज मैंने ही इवा के हाथों में दिया था, लेकिन इस कागज का उनके गायब होने से कोई संबंध नहीं है।''

''अच्छा के-70 का मतलब क्या है?'' —इंस्पेक्टर ने पूछा।

—''यह मेरा और इवा का आपसी मामला है, मैं इस समय कुछ नहीं बता सकता। लेकिन इतना विश्वास कीजिए कि जब हम दोनों आमने-सामने होंगे, तो मैं इस बारे में सब कुछ बता दूंगा।''

कुछ देर कमरे में सन्नाटा छाया रहा। फिर विलियम धीरे-धीरे बाहर चला गया। उसने कहा—''तो आप इवा को ढूंढ़ने में मेरी मदद नहीं करेंगे। मुझे लगता है इवा एक बड़ी गलतफहमी का शिकार हो गई है। हे भगवान, मैं कहां ढूंढ़ूं उसे।''

विलियम के जाने के बाद थाम्पसन ने कहा—''इस रहस्य की चाबी विलियम के हाथ में है और वह कुछ बताने को तैयार नहीं है।''

बर्नर और हैमर भी विलियम के घर के आसपास नजर रखने लगे। उसी शाम एक अजनबी विलियम से मिलने आया। कुछ देर बाद विलियम अजनबी के साथ बाहर निकला। उस समय बर्नर और हैमर ने वेश बदला हुआ था।

दोनों विलियम और अजनबी के आगे-पीछे चलते रहे। हैमर ने विलियम को कहते सुना—''माफी, कैसी माफी। भला यह भी कोई बात हुई। खैर, मैं चलकर मिलता हूं। हे भगवान, उन्होंने तो मेरी जान ही निकाल दी।''

वे समुद्र तट पर जा पहुंचे। वहां ऊंचाई पर एक कॉटेज बनी हुई थी। विलियम अजनबी के साथ उसी कॉटेज में घुस गया।

हैमर ने बर्नर से कहा—''झट थाम्पसन को फोन पर बताकर उसे यहां बुला लो।'' जल्दी ही थाम्पसन सिपाहियों के साथ आ पहुंचा।

उसने कॉटेज का दरवाजा खटखटाया, तो दरवाजा खुद विलियम ने खोला। बोला—''तो आप भी आ गए। चलिए, मैं सब कुछ बता देता हूं।'' फिर सामने बैठी महिला की ओर इशारा करके बोला—''मीट माइ वाइफ इवा।''

''तो आप जानते थे कि आपकी पत्नी यहां हैं। और हमसे उन्हें ढूंढ़ने को कह रहे थे।''—थाम्पसन ने गुस्से से कहा।

''मैं आपको सारी बात बताती हूं। कृपया नाराज न हों।''—इवा ने कहा।

''ये के-70 वाले कागज का क्या मामला है?''—बर्नर ने पूछा।

विलियम बोला—''इंस्पेक्टर, मैंने कहा था न कि यह हम दोनों का आपसी मामला है, जो मैं इनके सामने ही बताऊंगा।''

''हां, तो बताइए?''—इंस्पेक्टर ने कहा।

''इधर कुछ समय से इवा का वजन काफी बढ़ गया था। इससे इनके घुटनों में दर्द रहने लगा था। डाक्टर ने दवा के साथ वजन कम करने की सलाह दी थी। उस दिन दावत में मैंने देखा कि इन्होंने अपनी प्लेट में ढेर सारा भोजन भर लिया। मुझे यह ठीक नहीं लगा, पर सबके सामने क्या कहता, तो मैंने एक कागज पर के-70 लिखकर इन्हें थमा दिया—संकेत यही था कि तुम्हारा वजन 70 किलो है, इसका ध्यान रखो।''

इवा ने बात आगे बढ़ाई—''सचमुच इनकी हर समय की टोका-टोकी से मुझे गुस्सा आ गया। मैं रोती हुई बाहर चली गई। तभी मेरी सहेली मुझे अपने साथ ले गई। विलियम सब जगह मेरी खोज करते रहे। आज मैंने सहेली के नौकर से संदेश भेजा था कि वह आकर मुझे माफी मांगें, तो मैं उनके साथ वापस चलूंगी। इन्होंने आकर माफी मांग ली। हमारा झगड़ा खत्म हो गया।''—कहकर इवा मुसकराने लगी।

हैमर और बर्नर वहां से लौटते हुए बातें कर रहे थे—''यार, यह हमने कैसी जासूसी की!''

''कुछ भी कहो के-70 वाला कागज तो हमने ही ढूंढ़ा था।''—बर्नर ने कहा।

''हां, यह तो है।''—हैमर का जवाब था। दोनों खुश थे।

(प्रस्तुति : देवेंद्र कुमार)





बज रही शहनाई

आया क्रिसमस मेरे भाई देख लो
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई देख लो
इस दिन से दिन बड़े होने लगे
बज रही चारों ओर शहनाई देख लो।
ईसा मसीह की याद में डूबे हम
सोचकर मेरी आंख भर आई देख लो
सोच रखिए बिल्कुल ईसा की तरह
कैसे उन्होंने अपना फर्ज निभाया देख लो।
सांता क्लॉज आएं इस पर्व पर
साथ में लाएं ढेर मिठाई देख लो
बाइबिल का पाठ आप पढ़ लीजिए
मिलती है सीख मेरे भाई देख लो।
क्रिसमस का पर्व देखो फिर से आया
साथ ही ढेरों खुशियां आईं देख लो।

सुरेंद्र प्रताप



सांता आया है

रोने वाले बच्चो, अब चुप हो जाओ
भरो ठहाके जी भर, सब खुश हो जाओ,
क्रिसमस के उपहार सांता लाया है,
खोलो अपने द्वार सांता आया है।
फुंदनों वाली लाल टोपियां बांटेगा
नाच नचाकर सबको, खुद भी नाचेगा,
उसका जादू दुनिया भर पर छाया है,
खोलो अपने द्वार, सांता आया है।
तरह-तरह के जादू उसको आते हैं
उसको नहीं किसी के आंसू भाते हैं,
उसने तो बच्चों को सदा हंसाया है
खोलो अपने द्वार, सांता आया है।

रमेश तैलंग

हुआ हाल-बेहाल

ठंड पड़ी इस बार गजब की,
हाल सुनो भई जाड़े का,
भालू दादा ने पहना है,
मोटा कुरता गाढ़े का।
छोटा-सा खरगोश बजाता
छोटे दांतों से तबला,
बबलू की बिल्ली ने पहना,
ऊनी फुंदनों वाला झबला।
ओढ़े कंबल बंदर मामा
चुहिया ओढ़े शाल,
छींक-छींककर मेढक का
हुआ हाल-बेहाल।

आभा श्रीवास्तव



सर्दी के दिन-रात

हंसते हैं तो घुंघरू बजते
हरिणों के छौनों से लगते,
उतर-उतर आंगन में मेरे
सर्दी के दिन करें नमस्ते।
रातें लंबी लगतीं इतनी
जैसे कोई आकर हथिनी,
बैठी हो मेरे कमरे में
होकर गूंगी और अनमनी।

मदन देवड़ा

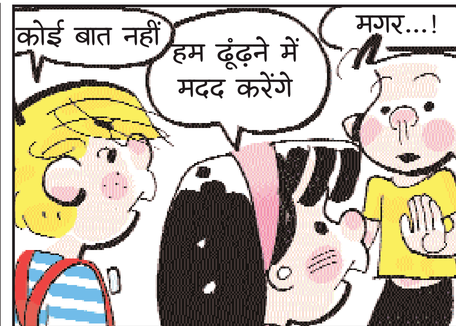

अतुल वर्धन


Hank Ketcham's
मन की बात

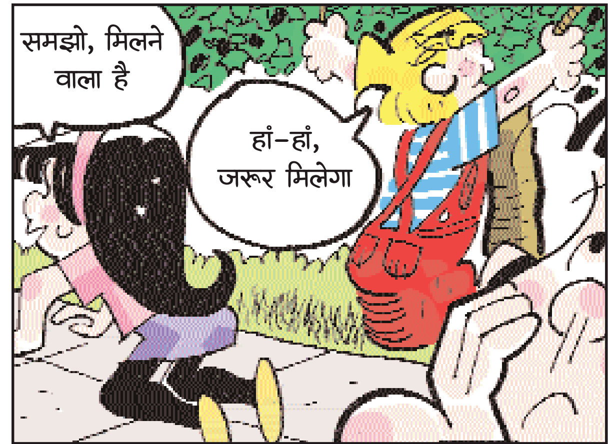

क्या तुम्हें पिज्जा पसंद है?
मजाक कर रही हो?


मैं कभी पिज्जा से नहीं मिला


जॉय क्या हुआ?
परेशान लग रहे हो?
मेरा डॉलर खो गया है।


कोई बात नहीं
हम ढूंढ़ने में मदद करेंगे
मगर...!


अगर-मगर नहीं, हम ढूंढ़कर ही दम लेंगे
हां, तुम चुप रहो
पर...!


समझो, मिलने वाला है
हां-हां, जरूर मिलेगा


यार, तुम सब अपना समय खराब कर रहे हो। दरअसल डॉलर घर में खोया है
?!
?!


उसने कितनी देर बाद यह बात बताई
वह क्या सोचता है, हम दिमाग पढ़ लेते हैं?



घर आए भगवान



सुरेश ऋतुपर्ण

दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन के बाद आजकल जापान में प्रोफेसर पद पर कार्यरत

कुछ समय पहले जापान के एक गांव में एक गरीब बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों आसपास के जंगलों में काम करते थे और दो वक्त का खाना कमा लेते थे। उनके इलाके में बर्फ पड़ती रहती थी। नए साल के आने में कुछ ही दिन रह गए थे। उनके पास पैसे भी नहीं थे कि और सामान खरीद सकें।

बुढ़िया कुछ दिनों से चावल के लंबे तिनकों से सिर ढकने वाले सुंदर हैट बना रही थी। वह अब तक चार हैट बना चुकी थी। उसने अपने पति से कहा–''शहर जाकर ये हैट बेच आओ। जो पैसा मिले, उससे कुछ खाने-पीने का सामान खरीद लेना, ताकि नए साल पर, हमारे पास खाने के लिए कुछ सामान हो।''

बूढ़े ने अपनी पत्नी की ओर देखा और हंसते हुए कहा–''अच्छा, मैं कल सुबह शहर के बाजार में ये हैट बेचने के लिए चला जाऊंगा। अब तुम भी सो जाओ। बहुत रात हो गई है...और बर्फ पड़नी भी शुरू हो गई है।'' फिर दोनों सो गए।



सुबह होने पर बूढ़े ने शहर जाने की तैयारी करनी शुरू कर दी। उसके पास बस एक ही कोट था और वह भी कई जगह से फट गया था। बूढ़े ने चारों हैटों को एक रस्सी में पिरोकर अपनी पीठ पर लटका लिया। फिर अपनी छड़ी लेकर बाहर निकलने की तैयारी करने लगा। बर्फ पड़नी तो काफी देर पहले बंद हो गई थी लेकिन रास्ते बर्फ से ढक गए थे। और ठंडी हवा भी चल रही थी।

जैसे ही उसने दरवाजा खोला, ठंडी हवा से उसका शरीर सिहर गया। उसकी पत्नी ने पास आकर अपने सिर का स्कार्फ खोलकर, उसके सिर और कानों को उस स्कार्फ से अच्छी तरह बांध दिया। बूढ़े को अपनी पत्नी की चिंता होने लगी। उसने कहा–''अरे, यह क्या करती हो! तुम्हें ठंड लग गई, तो तुम्हारा इलाज कराने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।''

पत्नी ने मुसकराते हुए कहा–''तुम चिंता मत करो। मैं तो घर में ही रहूंगी और चूल्हे के पास बैठकर आग तापती रहूंगी। लेकिन तुम तो बाहर बर्फ में जा रहे हो। अच्छा, अब तुम जल्दी जाओ ताकि शाम से पहले घर वापस आ सको।''

बूढ़ा अपनी छड़ी टिकाता हुआ बर्फीले रास्ते से शहर की ओर चल पड़ा। बूढ़े ने मन ही मन सोचा–'यदि ये चारों हैट बिक गए, तो फिर नए साल पर खाने-पीने की कमी नहीं रहेगी।' ऐसा सोचते ही उसके पैरों में कुछ ताकत आ गई और वह तेजी से आगे बढ़ने लगा।

उसे चलते हुए काफी देर हो गई थी। तभी उसने देखा कि रास्ते में पड़ने वाला मंदिर सामने है। वह वहां जाकर थोड़ी देर के लिए रुक गया। सोचा कि कुछ आराम कर लेना चाहिए। तभी उसकी दृष्टि मंदिर में एक किनारे पर लगी पत्थर से बनी पांच बुद्ध-मूर्तियों पर पड़ी। उसने देखा कि सभी मूर्तियों के सिरों पर ढेरों बर्फ जमी है। उसे लगा कि इस बर्फ की ठंडक से तो भगवान को कष्ट हो रहा होगा। उसने जाकर सिरों पर जमी सारी बर्फ हटाई। आसपास की जगह की सफाई भी कर दी। ऐसा करके उसके मन को बड़ा संतोष हुआ। फिर इसके बाद वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

थोड़ी देर बाद ही वह शहर के बाजार में जा पहुंचा। वहां बहुत भीड़ और चहल-पहल थी। चारों ओर के बाजार सजे हुए थे। तरह-तरह की मिठाइयां और उपहार की वस्तुएं बिक रही थीं, खरीदी जा रही थीं। वह बूढ़ा भी एक ओर खड़ा होकर चिल्लाने लगा–''हैट ले लो, हैट ले लो।''

काफी देर बीत जाने के बाद भी किसी ने उससे हैट नहीं खरीदा। आवाज लगा-लगाकर वह थक भी गया था। शाम भी घिरती आ रही थी। उसने निराश मन लौटने का फैसला किया। मन में एक ही बात थी कि उसकी पत्नी को यह जानकर कितना दुःख होगा कि उसके बनाए ये सुंदर हैट बाजार में किसी ने नहीं खरीदे। 'आजकल के लोगों की पसंद कितनी बदल गई है। पुराने जमाने की उपयोगी चीजें भी उन्हें बेकार लगने लगी हैं। अब उन्हें चमक-दमक वाली वस्तुएं चाहिए।'–ऐसा सोचते हुए वह वापस घर की ओर चला। तभी बर्फ पड़ने लगी। उसने अपने सिर को बचाने के लिए वे सारे हैट अपने सिर पर फंसा लिए और तेज चलने लगा, ताकि रात होने से पहले ही वह अपने घर पहुंच सके।

चलते-चलते वह फिर उसी मंदिर तक पहुंच गया, जिसके आंगन में बुद्ध की पांच मूर्तियां लगी हुई थीं। उसने देखा कि उनके सिर बर्फ से ढके हुए हैं। उसने मन ही मन कहा–'बेचारे बुद्ध भगवान! सारी रात ऐसे ही ठंड खाते रहेंगे।'

एक बार फिर उस आंगन में लगी मूर्तियों के सिर से बर्फ हटाने लगा। लेकिन गिरती हुई बर्फ के कारण उनके सिर फिर से सफेद होते जाते थे। तभी उसके मन में एक उपाय सूझा। उसने अपने सिर पर फंसे चारों हैट उतारे और उन मूर्तियों के सिरों पर रख दिए। अब बर्फ उनके सिरों पर नहीं,

हैट पर पड़ने लगी। बूढ़े को मन में थोड़ी खुशी हुई कि चलो ये हैट किसी के काम आ सके। लेकिन उसका मन यह सोचकर उदास भी था कि बेचारे एक बुद्ध का सिर अभी भी नंगा था। उसने आसपास निगाह दौड़ाई कि कुछ ऐसी वस्तु मिल सके जिससे वह उस एक बचे हुए बुद्ध का सिर भी ढक सके। लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। उसने पांचवें बुद्ध से माफी मांगी–''मेरे पास कुल चार ही हैट हैं। अतः मुझे माफ करना।'' ऐसा कहकर वह अपनी छड़ी संभालता मंदिर के आंगन से निकल मुख्य द्वार की ओर बढ़ने लगा।

तभी तेज हवा के झोंके से उसके सिर पर बंधा स्कार्फ फड़फड़ाने लगा, तो उसे याद आया कि उसने अपने सिर पर स्कार्फ भी बांध रखा है। उसने उसकी गांठ खोली और अच्छी तरह से सिर पर फिर से बांधने लगा। तभी उसके मन में एक विचार आया। वह खुशी से भरकर वापस मंदिर में जाकर पांचवें बुद्ध की मूर्ति के सामने खड़ा हो गया। उसने पांचवें बुद्ध की मूर्ति के सिर पर जमी बर्फ को हटा दिया। फिर अपना स्कार्फ उतारकर अच्छी तरह से बुद्ध के सिर पर बांध दिया। उन चार हैट वाले और एक स्कार्फ पहने बुद्ध को प्रणाम करके वह फिर से अपने घर जाने वाले रास्ते की ओर लौट पड़ा।

बर्फ पड़नी तेज हो गई थी। ठंडी हवा भी जोर-से चल रही थी, लेकिन बूढ़े को अब किसी की भी परवाह न थी। उसका मन बहुत खुश था कि सभी मूर्तियों के सिर ढके हैं। उसकी चाल में भी अजब-सी तेजी थी।

जल्दी ही बूढ़ा अपने घर के पास पहुंच गया। उसने दरवाजा खटखटाया, तो दरवाजा एकदम खुल गया, क्योंकि उसकी पत्नी दरवाजे के पास बैठी हुई बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी पत्नी ने देखा कि पति के सिर के बालों पर बर्फ जमी हुई है। सिर पर सुबह वाला स्कार्फ और चारों हैट भी नहीं हैं।

उसने कहा–''हैट तो बिक गए लगते हैं। पर तुम्हारा स्कार्फ कहां गया?''

बूढ़ा तब तक चूल्हे की आग के पास जाकर बैठ गया था। शरीर में कुछ गरमी आने लगी थी। उसने अपनी पत्नी से वहीं आ जाने को कहा। तब उसने अपनी पत्नी को सारे दिन की कहानी सुनाई और माफी मांगते हुए बोला–''देखो, मैं तो खाली हाथ लौट आया हूं। तुम्हारे इतनी मेहनत से बनाए हैट भी यों ही दान कर आया हूं। और तो और तुम्हारा स्कार्फ भी चला गया।''

चूल्हे की आग की रोशनी में चमकता उसकी पत्नी का चेहरा सोने की तरह दमकने लगा और उसकी आंखों में आंसू भर आए। वह कांपते स्वर में बोली–''तुमने आज जीवन में सबसे अच्छा काम किया है। मेरे बनाए हैट यदि भगवान के काम आ सकें, तो इससे बड़ी और कौन-सी बात हो सकती है। पर मेरा स्कार्फ तो बहुत पुराना था। पता नहीं, वह बर्फ की ठंडक को रोक भी सकेगा या नहीं। हे प्रभु! मेरे पांचवें बुद्ध भगवान को ठंड से बचाना।'' ऐसा कहकर बुढ़िया ने कई बार हाथ जोड़कर अदृश्य भगवान को प्रणाम किया।

बुढ़िया ने चूल्हे पर थोड़े-से चावल उबलने के लिए रखे हुए थे। दोनों ने मिलकर वे चावल अपने-अपने कटोरों में डाल लिए और खाकर सो गए।

अचानक रात के सुनसान में उन्हें लगा कि उनके घर के आसपास कोई चल रहा है। कुछ सामान रखने की उठा-पटक सी भी सुनाई दे रही थी। वे दोनों डर गए। उन्हें लगा कि उनके घर को चोरों ने घेर रखा है। बेचारे चोर! उन्हें भी इसी गरीब का घर मिला, जहां कुछ भी नहीं मिलेगा। तभी उन्हें लगा कि कुछ लोगों की पदचाप दूर जा रही है। उन्होंने दौड़कर अपना दरवाजा खोलकर देखना चाहा कि कौन लोग जा रहे हैं।

जो उन्होंने देखा, उसे देखकर आश्चर्य से उनका मुंह खुला का खुला रह गया। उनके दरवाजे पर चार टोकरियों में बहुत सारे फल-सब्जियां और मछलियां रखी थीं। पांच बोरियों में चावल भरे थे और एक टोकरी में बहुत सारे सुंदर-सुंदर रेशमी और ऊन से बने स्कार्फ रखे थे। बुढ़िया की आंखें आश्चर्य से गोल हो गईं और उसके मुंह से निकला–''अरे! लगता है कि लुटेरे लूट का सामान रखकर भाग गए हैं।''

पर बूढ़ा व्यक्ति सामान को नहीं, चांदनी रात में बर्फ में चलती हुई छायाओं को देख रहा था। उन में चार छायाओं के सिर पर उसकी पत्नी के बनाए हैट थे। पांचवीं छाया के सिर पर लहराता हुआ स्कार्फ भी साफ दिखाई दे रहा था।

अब तक बुढ़िया भी उन छायाओं को देखने लगी थी। पति-पत्नी ने अवाक् होकर एक-दूसरे की ओर देखा। फिर एक साथ हाथ जोड़कर प्रार्थना की मुद्रा में सिर झुकाकर धरती पर बैठ गए। ●



परी हो गई धूप

हरे-हरे पेड़ों के नीचे,
हरी हो गई धूप,
कुछ खट्टी, कुछ मीठी ज्यों
रसभरी हो गई धूप।

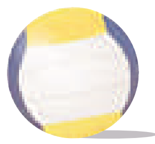
इधर लपकती, उधर मचलती,
लुका-छिपी बादल से करती,
उजले-उजले पंखों वाली,
परी हो गई धूप।

हरे-हरे मैदानों में हो
या खेतों-खलिहानों में हो,
मखमल जैसी बिछी सुनहरी,
दरी हो गई धूप।

तरह-तरह के रंग दिखाती,
धानों में चांदी बन जाती,
गेहूं में सोने के जैसी
खरी हो गई धूप।

डा. मोहम्मद अरशद खान

यशवंत



वॉलीबॉल



अनिल

वॉलीबॉल टीम खेल है और इनडोर स्पोर्ट्स के रूप में बहुत प्रसिद्ध है। इस खेल का आरंभ बास्केटबॉल के साथ-साथ ही हुआ था।

1895 के आसपास लिलियन जी. मोरगन ने इस खेल का आरंभ हालिएक, मैसाचुएट्स (अमेरिका) में किया था। वह वाई. एम. सी. ए. में शारीरिक शिक्षा के डायरेक्टर थे। इस खेल का ईजाद करते समय उन्होंने इसमें टेनिस और हैंडबॉल से टिप्स लिए थे। इसके आरंभिक नियम भी उन्होंने खुद लिखे।

इस खेल में दो टीमें होती हैं और प्रत्येक टीम में छह-छह खिलाड़ी होते हैं। दोनों टीमों के बीच में नेट होता है और हाथ से बॉल को उछालकर इसे खेला जाता है।

इस खेल को ओलंपिक में जल्दी ही प्रवेश मिला और 1924 के पेरिस ओलंपिक में पहली बार यह एक प्रदर्शनी खेल के रूप में शामिल हुआ था। एक मुख्य खेल के रूप में इसे ओलंपिक में देर से स्थान मिला। 1964 के टोक्यो ओलंपिक में यह पहली बार एक पूर्ण खेल के रूप में ओलंपिक मिशन का हिस्सा बना।

चूकि ओलंपिक में यह देर से शामिल हुआ, अतः इसकी संस्था एफ.आई.वी.बी. (फेडरेशन ऑफ इंटनेशनल वॉलीबॉल) ने इसकी विश्व चैंपियनशिप कराने की योजना बनाई। 1949 में पहली बार इसका आयोजन हुआ। तत्कालीन चेकोस्लाविया के प्राग में आयोजित चैंपियनशिप खूब सफल रही। इसे सोवियत यूनियन ने जीता। यह प्रतियोगिता हर चौथे वर्ष होती थी पर 1964 में ओलंपिक में शामिल होने के कारण इसे 1964 के बदले दो वर्ष बाद 1962 में ही कराया गया। तब से ओलंपिक और विश्व चैंपियनशिप में दो वर्ष का फासला रहता है।

पर वॉलीबॉल की कम प्रतियोगिताओं के होने के कारण और ज्यादा टूर्नामेंट्स की जरूरत महसूस हुई। तब इसके वर्ल्ड कप का आगमन हुआ।

यह वर्ल्ड चैंपियनशिप से अलग एक वर्ल्ड कप है। पहली बार इसका आयोजन ओलंपिक के तुरंत बाद 1965 में पोलैंड में हुआ। इसे भी जीतने का श्रेय सोवियत यूनियन को मिला। वर्ल्ड कप का आयोजन आज तक केवल पोलैंड, ईस्ट जर्मनी और जापान में ही हुआ है। इसे वर्ल्ड चैंपियनशिप से अलग रखने के लिए फैसला किया गया कि इसका आयोजन केवल जापान में ही होगा। इसलिए 1977 के तीसरे विश्वकप से इसका आयोजन सिर्फ जापान में ही हो रहा है।

इस वर्ष 20 नवंबर से 4 दिसंबर 2011 तक वर्ल्ड कप का आयोजन जापान में हो रहा है। वहां के सात शहरों के आठ स्थानों पर इसके मैच खेले जाएंगे। प्रतियोगिता में कुल 12 टीमें भाग ले रही हैं। इस वर्ल्ड कप में प्रथम तीन स्थान पर रहने वाली टीमें ओलंपिक के लिए क्वालिफाई करती हैं। इस तरह यह ओलंपिक में प्रवेश के लिए एक क्वालिफाइंग टूर्नामेंट भी है।

मिमोरी लाल



अतुल माथुर

नौकरी के साथ-साथ निरंतर लेखन

मुरारी लाल को अपनी याददाश्त पर बहुत भरोसा था। उसकी तीव्र याददाश्त के कारण ही उसके सहपठियों ने उसका नाम मुरारी लाल से बदलकर मिमोरी लाल रख दिया था।

कक्षा के अध्यापक उसकी इस आदत से बहुत परेशान थे कि वह अपनी कॉपी में उनकी बताई बातों को लिखता ही नहीं था। अध्यापक उसे समझाते पर मुरारी लाल को अपनी याददाश्त पर इतना भरोसा हो चुका था कि वह किसी की बात को गंभीरता से नहीं सुनता था।

उसकी कक्षा में एक सहपाठी सुखदेव था। लेकिन वह मुरारी को बिल्कुल भी अच्छा न लगता था। बल्कि एक बार तो मुरारी लाल ने उसे झिड़क दिया था कि वह उसके मित्रों के बीच में आकर न बैठा करे।

मुरारीलाल के ताऊ जी चेन्नई में रहते थे। एक बार छुट्टियों में मुरारी लाल अकेला उनके यहां गया।

अपने ताऊ जी के घर पहुंचने पर उसका भव्य स्वागत हुआ। ताई जी तो बहुत ही खुश हुईं और उसके इतनी दूर अकेले आने पर हैरान भी थीं। मुरारी लाल को अब अपने ऊपर बहुत गुमान होने लगा था। यहां पर तो उसकी चांदी हो गई थी। नई-नई चीजों को खाना और ताऊ जी के साथ जगह-जगह कार में घूमना।

कुछ दिन बाद उसके वापस जाने का समय हो गया था। उसने सोचा–'चलो, आज कुछ शॉपिंग कर ली जाए। अपने दोस्तों पर अच्छा रोब जमेगा।'

उसके ताऊ जी की एक जरूरी मीटिंग थी, तो उसकी ताई जी ने उसे समझाया कि कल अपने ताऊ जी के साथ जाना। लेकिन मुरारी लाल की जिद के आगे वे हार गईं। ताई जी ने हिदायत दी कि वह अपने पास ताऊ जी का फोन नंबर और घर का पता लिखकर रख ले।

लेकिन मुरारी लाल तो अपनी मिमोरी के भरोसे था। वह बिना ताई जी की बात सुने निकल पड़ा, घूमने-फिरने और शॉपिंग करने।

सारे दिन उसने बाजार में नई-नई चीजें खाईं और वापसी की सारी शॉपिंग की।

जब शाम घिर आई, तो उसने वापस चलने की सोची। एक स्कूटर वाले को रोका, तो उस स्कूटर वाले ने यह कहकर मना कर दिया कि उसकी बताई जगह को वह नहीं जानता। यही बात दो-तीन और स्कूटर वालों ने भी कहकर मना कर दिया। लेकिन मुरारी लाल को यह समझ नहीं आ रहा था कि यह स्कूटर वाले उसकी बताई जगह को जानते क्यों नहीं?

एक-दो बार उसने राह चलते लोगों से भी पूछा तो या तो किसी ने उसकी भाषा को समझने से इनकार कर दिया या फिर उसके बताए पते को वे नहीं जानते थे।

अब तो अंधेरा भी हो चुका था। शायद भाषा की समस्या भी उसको परेशान कर रही थी। अब उसे ताई जी की बात याद आ रही थी कि उन्होंने पता और फोन नंबर लिखकर अपने पास रखने को कहा था। लेकिन तब वह अपनी याददाश्त के सहारे ही बिना पता और फोन नंबर लिखे ही ऐसे ही चल पड़ा था। उन्होंने कई बार पीसीओ से ताऊ जी को फोन भी मिलाया। लेकिन हर बार 'रांग' नंबर ही लग रहा था। अब तो उसका मन रोने का सा हो रहा था और अब डर सा लगने लगा था।

मुरारी लाल ने एक बार फिर से अपना पर्स देखा, शायद कहीं कोई लिखा पता मिल जाए। अचानक उसकी नजर एक विजिटिंग कार्ड पर पड़ी। यह कार्ड तो उसके सहपाठी सुखदेव ने उसे दिया था जब उसके चाचा ने नई कैमिस्ट की दुकान खोली थी और उस दुकान के उद्घाटन समारोह में सुखदेव ने उसे यह कार्ड देते हुए उसे भी उद्घाटन पर आने के लिए दिया था।

मुरारी लाल के पास अब उस दिए कार्ड के नंबर पर फोन लगाने के अलावा कोई चारा न था। अपने चाचा की दुकान पर सुखदेव भी बैठा करता था। उसका फोन सुखदेव ने उठाया, तो उसने अपनी आपबीती उसे सुना दी। सुखदेव ने कहा–''तुम फिक्र मत करो। मैं अभी तुम्हारे पिता जी को तुम्हारी सारी बात बताता हूं। तुम दस मिनट में फिर फोन करना।''

आखिर उसके पिता जा ने उसे ताऊ जी का नंबर दिया तब जाकर वह घर लौट पाया।

जब मुरारी लाल अपने घर लौटा, तो उसे सुखदेव का चेहरा रह-रहकर याद आ रहा था, जिसने उसे कितनी बड़ी मुसीबत से बचाया था। नहीं तो उसका पता नहीं क्या होता? उसे लग रहा था कि सारी बात जानकर उसके दोस्त भी उसकी खिल्ली उड़ाएंगे कि बड़े मिमोरी लाल बनते थे।

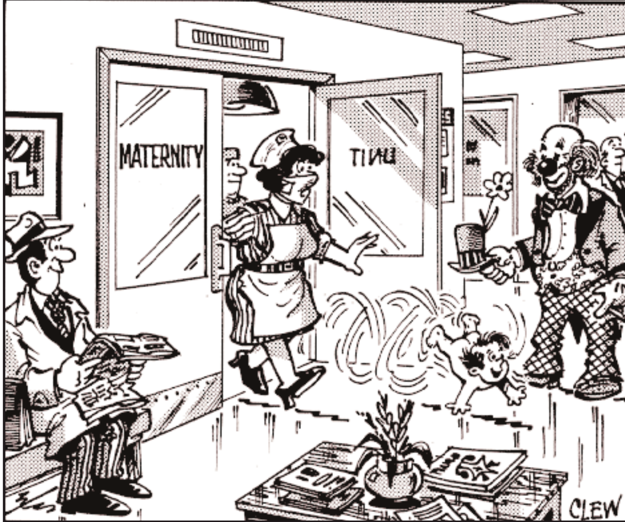
लेकिन कॉलिज पहुंचने पर माहौल पहले ही जैसा था। सुखदेव ने उसकी इस घटना का जिक्र किसी से नहीं किया था। सहपाठी हैरान थे कि सुखदेव से इतना चिढ़ने वाला मुरारी लाल उससे इतना घुलमिल कर कैसे रह रहा है। अध्यापक भी चकित थे कि उनके बताए नोट्स आज मुरारी लाल अपनी कॉपी में लिख रहा था। •



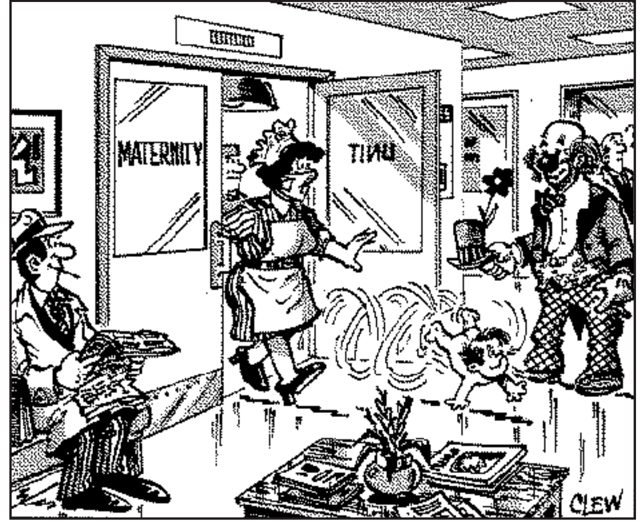
गलतियां ढूंढ़ो

यहां दो चित्र हैं। पहला ठीक है। दूसरे में दस गलतियां हैं। आप सावधानी से उन्हें ढूंढ़िए।

1



2



आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

1. कोने में बैठे आदमी के मुंह में पेन है। 2. उसका एक जूता बड़ा है। 3. दरवाजे का एक शीशा छोटा है। 4. मेज पर रखी पत्रिका का कवर बदल गया है। 5. नर्स की टोपी अलग तरह की है। 6. दरवाजे के ऊपर लगी ग्रिल छोटी है। 7. बच्चे का मुंह बंद है। 8. जोकर द्वारा हाथ में पकड़े फूल का रंग काला है। 9. उसका बो टाई आधा है। 10. दरवाजे के पीछे नोटिस बोर्ड से एक नोटिस गायब है।

यूरेका के उत्तर

1 सूची पूरी करो

नाम	मोहल्ला	पर्यटन स्थल	पसंद
जैकब	साकेत	गोवा	समुद्र तट
देव	अशोक विहार	हरिद्वार	तीर्थ स्थल
अनामिका	मीत नगर	उदयपुर	झील
साजन	प्रीत विहार	जैसलमेर	रेगिस्तान
अमरजीत	श्रीनगर	शिमला	पहाड़

3 सुडोकू

3	6	4	1	8	2	9	7	5
1	2	7	4	5	9	8	6	3
9	8	5	7	3	6	2	4	1
5	1	9	3	6	4	7	2	8
6	3	8	2	9	7	5	1	4
4	7	2	5	1	8	3	9	6
2	4	6	8	7	3	1	5	9
8	9	1	6	2	5	4	3	7
7	5	3	9	4	1	6	8	2

2 खोजो-जानो पहेली

स	ब	से	ब	ड़ा	स	म्मा	न	ब	ड़ा	गु	फा	मं	दि	र
भा	घ	नी	आ	बा	दी	वा	ला	श	ह	र			इं	ए
र	मुं	अ	धि	क	व	र्षा	वा	ला	क्षे	त्र			दि	लो
त	ब	चे	लं	बी	स	ड़	क	ब	ड़ी	न	ह	र	रा	रा
र	ई	रा	ग्रां	दि	ल्ली	की	जा	मा	म	स	जि	द	गां	ब
त्न		पुं	ट	ब	ब	बु	ब	ड़ा	द्वा	र	गं	गा	धी	ड़ा
ऊं	ब	जी	ट्रं	ड़ी	ड़ा	लं	प		अ		लं		न	प
चा	ड़ा	ऊं	क	म	सं	द	र	म	म		बी		ह	शु
ह	रे	चा	रो	स	ग्र	द	म	हा	र	सो	न	पु	र	मे
वा	गि	डै	ड	जि	हा	र	वी	त्मा	ना		दी		दे	ला
ई	स्था	म		द	ल	वा	र	गां	थ				व	ही
अ	न	भा	ख	ड़ा	य	जा	च	धी	ब	ड़ी	गु	फा	ता	रा
ड्डा	था	र	को	ल	का	ता	क्र	से		ऊं	ची	झी	ल	कु
ले	ह	के२	से	ना	प	द	क	तु		लं	बा	डै	म	ड
ऊं	चा	प	र्व	त	शि	ख	र	ब	ड़ा	रिं	व	र	ब्रि	ज